पढ़े-लिखे वाला पाठक, पठनीयता आ ''पाती''

एगो जमाना रहे कि 'पाती' (चिट्ठी) शुभ-अशुभ, सुख-दुख का सनेस के सबसे बड़ माध्यम रहे। बैरन, पोस्टकार्ड, अन्तर्देशी आ लिफाफा में लोग नेह-छोह, प्रेम-विरह, चिन्ता-फिकिर, दशा-दिशा आ परिस्थिति-परिवेश पर अपना हिरदया के उद्‌गार लिखि के भेजे । कबो-कबो त 'पाती' जेतना लिखनिहार का लोर से ना भींजे, ओसे बेसी पढ़वइया का लोर से भींजि जाय । 'पाती' तोष आ सम्बल रहे अदिमी के । चार-छव डाँड़ी में टाँकल - आस-भरोस का शब्दन से गूँथल, सनेस के नया अँजोर रहे-अन्हार-कुँआँ में छटपटात लोगन खातिर। 'पाती' मिलत, बाँचत भा बँचवावत आगा बढ़े के प्रेरना आ बल मिल जात रहे ...ऊ समय, ऊ जमाना चल गइल।

अभिव्यक्ति के सबसे छोट बाकिर असरदार एह माध्यम के, नवकी संचार-व्यवस्था टेकनीक आसान करत-करत, खा गइल। टेलीफोन आ सेलफोन से होत आधुनिक मोबाइल आ आईफोन ले आवत-आवत पूरा दुनिया मुठ्ठी में आ गइल। एतना बड़हन बदलाव वाली क्रान्ति में सकपकात-बढ़त लोग, गते-गते लिखन्त-पढ़न्त के भाषा आ 'पाती' लिखल-बाँचल भुलाइ गइल । ई पिछड़ापन के निशानी मनाये लागल। एही नयका उफान में, लिखित साहित्य पढ़े-पढ़ावे के ललक आ आदत दूनों पर गरहन लागल। नवका संचार क्रान्ति के फायदा त भइल ,बाकिर नोकसानो कम ना भइल।

टी०वी०, वी० सी० आर० वाली दृश्य मीडिया का ग्लैमरस मनबहलाव में, प्रिन्ट मीडिया बेमाने लागे लागल ...पढ़ल जहमत बुझाये लागल । एसे अखबार, पत्रिका पर प्रतिकूल असर पड़ल ..पढ़वइया का कमी से आ नया पाठक वर्ग ना भइला से पत्र-पत्रिका के खर्चीला प्रकाशन बन्द होखे लागल।

भोजपुरी में सहित्यिक पत्रिका का दिसाईं हमरा क्षेत्र का लोगन में पहिलहूँ, ओइसन ललक आ रुझान ना रहे, जइसन बाँग्ला, मराठी आ दक्षिण भाषा-भाषियन में लउकेला। अजुओ अधिकाँश लोग का देवनागरी लिपि में लिखल, अपने बोले-बतियावे वाली भाषा के पत्रिका पढ़े में अनकुस बरेला। भागादउरी के एह अरथ जुग में, अइसनका लोगन के, भोजपुरी पढ़े के फुरसत कहाँ बा? फुरसत ऊ निकालेला, जेकर मन अपना माटी से जुड़ल रहेला, जेकरा अपना भाषा के अनुराग आ स्वाभिमान होला।

संवेदना के महसूस करे खातिर, भितरी संवेदनशीलता चाहीं। हिरऊ-संबाद के अपनपन, सहृदयता आ लगाव चाहीं। सुनीला कि हिया से निकलल सच्चा भाव-संवेदन के, दोसरा पर गहिर असर होला, बाकिर पढ़े-सुने वाला रही तब नू ओकरा पर असर होई।

हमरा नीक से याद बा, 1979 में, जब हम ''पाती'' के पहिला अंक निकललीं त बहुत लोग भोजपुरी पत्रिका का नाँव पर हमार हँसियो उड़ावल, बाकिर भाषा साहित्य से जुड़ल अइसनको सुधी आ सहृदय लोग मिलल जे नीक से दू शब्द बोलि के, भा चिट्ठी लिखि के हमार उछाह बढ़ावल । डा० कृष्णदेव उपाध्याय, आचार्य विद्यानिवास मिश्र, डा० देवेन्द्रनाथ शर्मा, विवेकी राय, मुक्तेश्वरनाथ तिवारी (चतुरी चाचा), डा० रामविचार पाण्डेय, प्रभुनाथ मिश्र, मोती बी०ए०, भोलानाथ गहमरी, पं० गणेश चौबे, रामनाथ पाण्डेय, कैलाश गौतम आदि कई लोगन के लिखल दू चार डाँड़ी के 'पाती' हमार संबल आ शक्ति बनल । आज ऊ लोग नइखे, हम ओह लोगन के हृदय से नमन करत एगो निहोरा कइल चाहत बानी कि जदि अपना भोजपुरी साहित्य के जीवित राखल आ आगा बढ़ावल चाहत बानी सभे, त कागज कलम थाम्हीं, चिट्ठी-पाती लिखीं आ पत्रिका पढ़े-पढ़वावे के रुझान पैदा करीं। अपने सभ के हलुको कोशिश से, भाषा का मूक रचनात्मक आन्दोलन के बड़ा बल मिली।

अशोक द्विवेदी

''राउर पन्ना''
में, ''पाती'' का नाँवें पाती ...
(बरिस-1993-94)

[अंक-6 जून-1993 ''कथा-विशेषाँक'' रहे, जवना में सात कथाकारन के कहानी का साथ, नगेन्द्र प्रसाद सिंह के समकालीन भोजपुरी कथा-साहित्य पर एगो परिचयात्मक लेख रहे । अंक-7 -सितम्बर-93, ''कविता विशेषाँक'' रहे । अंक-8, जन० 1994 भोजपुरी के पहिल ''समालोचना-अंक'' रहे । अंक-8 का बाद सहृदय पाठक का रूप में जेवन आदरणीय लोगन के पाती (चिट्ठी) मिलल ...ओम्मे से कुछ प्रतिनिधि चिट्ठी, ''पाती'' -अंक-9/10 में छपलो रहे। इयाद ताजा करे खातिर फेरु कुछ चिट्ठी एह अंक में दिहल जा रहल बा। कवनो पत्रिका के आगा बढ़ावे आ दिशाबोध करावे में, अइसनका सुधी लोगन के प्रेरना आ सुझाव- सीख के बड़हन जोगदान होला। आज एम्मे से कई आदरणीय लोग हमहन का बीच नइखे, बाकि ओह लोगन के असीस ''पाती'' पर परोक्ष रूप से मिल रहल बा ......]

•• राउर ''पाती'' हर बेर एगो नया सनेस लेके आ वेले आ पाठक का मन में नया उमंग उत्साह के जोत जगाइ जाले। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के मौलिकता आ नवीनता के धार आ तेवर दिन पर दिन तेज होखो, एकरा खातिर तत्पर आ तइयार रहे के बा। ''पाती'' से बहुत उमेद बा ।

•• नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, इलाहाबाद ।।

•• ''पाती'' का प्रस्तुत अंक मोहन और सुदर्शन तो है ही अन्तः से भी स्वस्थ, समृद्ध और संपन्न है। इस समृद्धिसूचक यात्रा से मेरा मन आश्वस्त-विश्वस्त हुआ। आपकी सुरुचि-संपन्नता और सम्पादकीय कौशल रिझाते और मेरे मन को आश्वस्त करते हैं । सुखी हूँ आप ऐसे बन्धु को पाकर। गर्व है मुझे, आप पर।

बहुत बड़ी संभावना मैं आपमें देख रहा हूँ । ''पात'' में आपकी एक पाती भी है, आपसे रुष्ट होने का अभिप्राय है, अपने आपसे रुष्ट होना। सुसंस्कृत,शालीन ज्ञान-ज्येष्ठ और आत्मीय बन्धु से रूष्ट होना। यानी साँस्कृतिक अपचय ।मानसिक दिवालियापन और सब तरह से खूँख होना ...

•• डा० अनिल कुमार ''आँजनेय'', उजियार, बलिया ।।

•• ''पाती'' कविता-विशेषाँक ।अंक में कवि आ कवितन के, ओकरा स्तर से चुन के राखल बा । एह से हमके अउर खुशी भइल ।

•• भोलानाथ गहमरी, गाजीपुर (उ०प्र०)

•• ''पाती'' के समकालीन कविता अंक मिलल,मन-मयूर नाचि उठल -कवितन के पढ़ि के । अपने, पुरान पीढ़ी आ नया पीढ़ी के एक जगे समेटि के नया परम्परा कायम कइलीं ।

पहिले कविता अधिकतर इतिवृत्तात्मक होत रहे, लेकिन रउरा सँग में नवबोध के कविता प्रकाशित कइ के, एक तरह से क्रान्ति उभारे के प्रयास कइले बानी । 'दिल्ली दरबार' कविता वर्तमान प्रशासन पर करारा व्यंग्य बा। उमकान्त वर्मा जी भिव्यक्ति के नया आयाम खोजे में सफल बानी पाण्डेय कपिल, मोती बी०ए०, आनन्द सन्धिदूत का गजलन में, निराशा का बीचे आशा के किरन बा। भोलानाथ गहमरी के गीत हृदय के झंकृत करत बा।। ब्रजभूषण जी आपन आत्मानुभूति बाँटे में कवनो कसर नइखीं उठा रखले राउर दूनों गीत मानवीय तादात्म्य स्थापित करे में आपन सानी नइखे राखत । भगवती प्र० द्विवेदी का कविता में जन-क्रान्ति का आग में घीउ लेखा बा। ई अंक मननीय आ संग्रहणीय बा ।।

•• हरिश्चन्द्र साहित्यालंकार, मोतिहारी (बिहार)

●● समकालीनता से सन्दर्भित, एक से एक प्रतिनिधि कवि के रचना पढि के आजु के वर्तमान स्थिति से रूबरू होखे में 'पाती' के ई अंक उपयोगी आ सराहे जोग बा । एसे भोजपुरी कविता के विकास यात्रा के सहज अन्दाजा लगावल जा सकत बा। सम्पादकीय का माध्यम से साहित्य आ पत्र, पत्रिकन पर मँडरात खतरा से आगा करत ,साहित्यकार-पत्रकार आ समकालीन कविता पर राउर दू टूक बिचार बहुत प्रासंगिक लागल ...

●● सूर्यदेव पाठक 'पराग', संपादक ''बिगुल'', सीवान (बिहार)

●● ''पाती'' के रचना-चयन आ सम्पादकीय-विवेक देखि के हम दंग रहि गइनी हाँ ।'पाती' के ई स्वरूप भोजपुरी के विकास में सहायक होई । एह बोली के ,भाषा में बदले के राजनीतिक आन्दोलन से बड़ काम ई बा कि एकरा के सिरिजन लायक साहित्य से भरि दीहल जाय ।।

●● निलय उपाध्याय, आरा (बिहार)

●● ''पाती'' के पछिला कथा विशेषाँक... भोजपुरी दिशाबोध के सार्थकता समेटले बा। मानवीय मूल्यबोध से जुड़ल एक से एक कहानी कृष्णानन्द कृष्ण कहानी सामयिक मानवीय पक्ष के उजागर करत बा। 'चूल्हा सुनुग गइल रहे' (भगवती प्र० द्विवेदी आ राउर कहानी ''पोसुआ'' बहुते मार्मिक बाटे । जहाँ आजु के भोजपुरी कहानी तत्सम शब्दन का पाछा भाग रहल बा ,रउरा कहानी में ठेठ भोजपुरी शब्दन का प्रयोग से, भाषा के निठाह रूप प्रस्तुत भइल बा ।

●● वैद्यनाथ विभाकर, सारण, (बिहार)

●● पिछले कथा-विशेषाँक में 'सोनवा', 'धोखा' और 'पोसुआ' कहानी मुझे विशेष अच्छी लगी। कुछ कहानियों में प्रवाह की कमी दिखी ।कवितायें अधिकांश ठीक हैं ...

●● डा० शालिग्राम शुक्ल 'नीर', आजमगढ़ ।।

●● सितम्बर, अंक में पृष्ठ-7 ''सिकाइत तहरा से नइखे/ऊ लोग से बा/जे हमनी के कुँआरे सोहागिन बनावेला'' ...। हमनी किहाँ त कुँआरे सोहागिन बनेली सन।। 'सोहागिन' से अभिप्राय सेक्सुअल-एब्यूज से बा ते कवि के दोसर शब्द-प्रयोग करे के चाहत रहे।

भोजपुरी भाषा के चरित्र बँचवले राखल सबसे जरूरी बा। 'श्वेतबसना, प्रज्ञा, बोधिसत्व लिखे वाला कवि, 'उरबसी' काहें लिखी ? पृ०11 पर 'शोर (आनन्द सन्धिदूत)' के जगहा 'सोर' बा, जेकर माने जड़ होला।... दोसरा भाषा के शब्द जइसन लिखल-बोलल जाला ओइसहीं ऊ भोजपुरी में लिखे के चाहीं,ना त अर्थ के अनर्थ हो जाई ।

●● डा० विश्वरंजन, छपरा (बिहार)

●● ''पाती'' के काया, छपाई, कागज, शुद्धता आ मन के स्पर्श करे वाली रचनन के पाके हृदय लहलहा उठल। बीच में ..(१९८० के बाद) ''पाती'' के प्रकाशन बन्द भइला से जब तब हमरा भीतर टीस उठत रहल ।आज ''पाती'' के कलेवर आ सामग्री देखि के अपार आनन्द के अनुभूति भइल ।...साँच कहे में लाज का ? एह अंक में प्रकाशित स्तरीय कवितन से, भोजपुरी के सीना उभरि आइल बा । सम्पादकीय सत्यपरक आ अन्हार से अँजोर का तरफ उन्मुख करे वाला विचारन से भरल बा ।

●● डा० किशोरी शरण शर्मा, लखनऊ ।।

●● ''पाती'' का अंक के स्वागत भइल तबे ,जब हमरो लगे चार पाँच गो पाठक पत्र भेजले ।

''पाती'' अकेले भोजपुरी जगत् में, साहित्यिक कलेवर का साथे बिया ! साफ-सुथरा के सँगे सँगे, रचना चुनाव पर ध्यान ई साबित करेता कि ''पाती'' के मूल उद्देश्य भोजपुरी साहित्य के श्री वृद्धि के बा । अपने जइसन सप्रबुद्ध ,सजग साहित्यकार के सम्पादन में, ''पाती''के हरेक अंक प्रभावकारी होई ।

●● कुमार विरल, मुजफ्फरपुर (बिहार)

●● सम्पादकीय के अनुसार, सँचहूँ नयका पीढ़ी के रचनाकारन ---प्रकाश उदय, अनीस आ विजय प्रताप के रचना शिल्पगत कथ-कसाव आ सधिकार भाषा-प्रयोग के नमूना बाड़ी सन । स्व० नरेन्द्र शास्त्री के कहानी देइ के, अपना पाठकन पर रउआ बड़ी कृपा कइले बानी ।

●● गंगा प्रसाद 'अरुण', टेल्को टाउन, जमशेदपुर ।।

•• भोजपुरी में, एह तरह के साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित हो रहल बा, ई हमनी का सोचियो ना सकत रहलीं हँ। एकर मेकप, गेटप, रूप आ स्तरीय रचना से मन भरि गइल ।

•• जगदीश पन्थी, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र ।।

•• अंक के अधिकांश कविता ना खाली समय आ समाज के तस्वीर पेश कर रहल बाड़ी, बलुक अपना तल्ख तेवर आ संरचना का जरिये गहिर छाप छोड़त बाड़ी स ।सही माने में ई कविता समकालीन भोजपुरी कविता के प्रतिनिधित्व करत बाड़ी स । ''हमार पन्ना'' के तहत साहित्य पर घहरात संकट आ समकालीन काव्य पर समालोचनात्मक दृष्टि गौरतलब बा ।...काश भोजपुरी के नामी गिरामी संपादक लोग ''पाती'' का अब तक के अंकन से प्रेरणा लिहित !

•• भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना-१

•• ''पाती'' देखि आँखि जुड़ा गइल ।राउर मेहनति ,राउर समीक्षक-व्यक्तित्व कुल्ह क एगो मधुपर्क 'पाती' में झलकत बा ।सबसे बड़ विशेषता बा कि रउरा निर्भय निरपेक्ष होके रचना क चुनाव कइले बानी ...भइया अइसन कम्मे होत बा ..भोजपुरी के नाँव पर कचरा पत्रिका बहुत होई,बाकि ''पाती''से कइयन संपादकन के दिशा मिली ।आप जइसन समीक्षक के अँचरे भोजपुरी साहित्यिक भाषा बनी। एक से बढ़ के एक रचना कइसे जुटवले होखब, एकर पीरा त आप खुदे समझ सकीला।

•• मधुर 'नज्मी', गोहना मुहम्मदाबाद, आजमगढ़ ।।

•• समकालीन कविता-अंक मिलल। मुखड़ा में भाव शालीनता के मोहिनी आ शरीर का भीतर दमदारी। एकर माथा दिल्ली दरबार का सच्चाई से प्रखर बा आ पाँव ऊषा का महावर आ ललाई से चटकार। बीच का शारीरिक अंगन पर भोजपुरी के बूढ़,पट्ठा आ नवहा कवियन के रचना भोजपुरी क्षेत्र के सुख दुख के, भाव-विचार के महि के, उरेहल बाड़ी सन । रउआ भोजपुरी के, कबो ना भुलाये जोग सेवा करत जात बानी।

•• प्राध्यापक अचल, हरिहरपुर, गाजीपुर ।।

•• ''पाती'' जैसी पत्रिका के विषय में क्या कहना है । जो भी डा६अशोक द्विवेदी को जानेगा, वह, उसकी कृति, चाहे वह सृष्टि ही सम्पादित हो या संकलित, उसकी सराहना किये बिना नहीं रह सकता । अंक बहुत ही सुन्दर, समीचीन, समर्थ, सुधी साहित्यसेवियों के समावेश से संग्रहणीय बन पड़ा है ।कविताओं के साथ, कवियों के विचार बहुत ही उपादेय लगे । अशोक द्विवेदी, कुमार विरल की छाप अनोखी है। भगवती प्रसाद द्विवेदी, पाण्डेय कपिल के साथ, मोती बी६ए६ को देख कर ऐसा लगा, जैसे भोजपुरी की ठोस भाव-भूमि पर भविष्य की साहित्यिक संरचना सुदृढ़तर होती जायेगी ।

•• अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, यारपुर, पटना ।।

•• भोजपुरी भाषा की समृद्धि, समकालीन कविताओं के बहाने देखने को मिली। आपका श्रम स्तुत्य है। मुखपृष्ठ पर प्रकाशित ग्रेगरी की पंक्तियों को आप सार्थक कर रहे हैं ।

•• हस्तीमल हस्ती, सम्पादक ''काव्या'', बम्बई ।।

•• भोजपुरी के काम में जे लागल बा, ऊ लोग आपन हड्डी गला रहल बा। एकरा बिना भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकासो संभव नइखे। कुछ लोग परले-परल खाली बात बघारेला ..केहू के कुछ कहला-सुनला के परवाह ना करे के चाहीं । ''पाती'' में सभकर खोज-खबर रउआ लेले बानी ।

•• डा० प्रभुनाथ सिंह, प्रोफे०, मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।।

•• ''पाती'' पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति पर है। स्वच्छता, सुन्दरता, मुद्रण की शुद्धता प्रशंसनीय है । अंक की जितनी भी सराहना की जाय, कम है। प्रायः कविता के स्थान-निर्धारण में सम्पादकीय बुद्धि प्रशंसनीय है। काव्य से, काव्य की परख अधिक महत्वपूर्ण है, जिसमें आप सक्षम हैं । डा६उमाकान्त वर्मा, पाण्डेय कपिल, सन्धिदूत की रचनायें सराहनीय हैं। उमाकान्त जी खड़ी बोली के व्यामोह से दूर नहीं हैं । मोती बी६ए६ जी तो पुराने काव्य शिल्पी हैं .....कविताओं में नया कथ्य, नव शिल्प और नूतन तेवर देखने को मिला, आपका तो गद्य पद्य दोनों, दीन-दलितों और उपेक्षितों को मसीहाई अन्दाज में प्रस्तुत करता है ।

•• डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी, नरही, बलिया ।।

•• भोजपुरी 'पाती' से मुझे आश्चर्यमिश्रित खुशी हुई। अब तो आपलोगों को एक के बजाय दस प्रतियाँ तूरा (मेघालय) में भेजने की व्यवस्था करनी पड़ेगी ।

•• प्रताप नारायण, तूरा, मेघालय ।।

•• ''पाती'' सम्पादकीय सुरुचिसंपन्नता के उदाहरण बा । सामग्री परोसे के लूर, रउरा पास बढ़िया बा।

•• डा० ब्रजभूषण मिश्र, काँटी, मुजफ्फरपुर ।।

•• ''पाती'' कविता अंक पाकर प्रसन्नता के मारे विस्वल और निहाल हो गया हूँ... सम्पादन कौशल देखते ही बनता है। कोई उत्तरवर्ती कविता, अपने पूर्ववर्ती से जरा भी कम नहीं है, यहाँ तक कि आपका सम्पादकीय और स्व० नरेन्द्र शास्त्री की कहानी भी कविता ही है। कहानी का नायक क्या स्वयं में, रचनाधर्मिता का एक सजीव अमर प्रतीक नहीं है? सन्तोष है कि आपके रूप में, बलिया की वह शक्ति आज भी वर्तमान है। इस अंक के सभी कवि साक्षात् कवि हैं। जी करता है कि इस कविता-अंक में प्रकाशित कविताओं पर एक बढ़िया समीक्षात्मक निबन्ध लिख डालूँ। आपकी कविता और सम्पादकीय अंक में सर्वोपरि है ...।

•• मोती बी० ए०, बरहज, देवरिया ।।

•• ''पाती'' के सातवाँ अंक आइल आ अपना सँगे, नरेन्द्र शास्त्री के शोक समेटले आइल। बुझाते नइखे कि एह शोक में आपन संवेदना प्रकट करीं कि 'पाती' के लहालोट में मस्ती मनाईं ।

•• महेश्वराचार्य, भोजपुर, बिहार।।

•• भोजपुरी में बोली एवं भाषा की सीमाओं को पार करके, साहित्य बनने की सम्पूर्ण शक्ति है ... ''पाती'' से इसकी प्रतीति हुई।

•• डा० किशोर काबरा, सम्पादक 'भाषा सेतु', अहमदाबाद (गुजरात)।

•• भोजपुरी में यह अलग ढंग का सार्थक प्रयास है.. जो महत्वपूर्ण भी है। भोजपुरी में समृद्ध साहित्य सृजन की ओर और अधिक गम्भीरता से कार्य होना चाहिये ।

•• शिवकुमार 'पराग', आजमगढ़ ।

•• ''पाती'' श्रेष्ठ आ स्तरीय पत्रिका बा ...भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका । सम्पादकीय सामयिक आ विचारोत्तेजक बा। कवि परिचय के जगहा आत्मकथ्य, कविता के मूल्याँकन में सहायक बा । कविता में युग आ जीवन के तवर सफ झलकत बा। विश्वास बा कि ई अंक चर्चा के विषय बनी ।

•• डा० स्वर्णकिरण, सम्पादक 'नालन्दा दर्पण', सोहसराय (बिहार)।

•• भोजपुरी के अलख जगावे वाला, स्थापित कवियन के सवक्तव्य कविता पढ़ि के मन झूमि उठल। संपादकीय में आज के लेखन, बदलल समाज के अनुरूप कवि के दायित्व बोध, प्रचार के माध्यम से आइल साहित्य-संकट आ भोजपुरी कविता के, परिवेश का अनुरूप बदलत तेवर का ओरि थोरहीं लेकिन सारगर्भित संकेत बा ।

•• डा० कमलाशंकर त्रिपाठी, लखनऊ ।

•• ''पाती'' पत्रिका से यह जान कर हृदय व्यथित हो गया कि प्रियवर नरेन्द्र शास्त्री का निधन हो गयात्र। वे बड़े ही प्रतिभाशाली और विद्वान लेखक थे ।

•• डा० श्रीधर मिश्र, प्रोफे०, बम्बई (महाराष्ट्र)।

जब-जब आवेले द्विवेदी जी के 'पाती'। लागे जइसे पहुँचल दमगर सँघाती ।।

लागे भोजपुरी आगे डेगवा बढ़वलस। रहिया के बाधा -बिघिन, कुछ त हटवलस।।
काँपत लइकवा के बान्हि देले गाँती ! जब जब आवेले द्विवेदी जी के 'पाती' ।।

फूल-फर भोजपुरी-माई पा धधइली। धिया-पूता ,नाती-पोता पाइ अगरइली ।।
सबके सिखावे जेसे मानी उतपाती। जब जब आवेले द्विवेदी जी के 'पाती' ।।

गीत आ गजल जइसे पूड़ी रसबुनिया । कथा आ कहानी फुलसुँघी -चुनमुनिया।
नया सँगे उबिछेले पुरखन के थाती। जब जब आवेले द्विवेदी जी के 'पाती' ।।

सूतल समाज के जगावेला नगाड़ा । शोषक-शिकारी के निकालेले कबाड़ा
नेहियाँ के दिया -बाती जरे सारी राती । जब-जब आवेले द्विवेदी जी के 'पाती'।।

•• चौधरी कन्हैयाप्रसाद सिंह, जगन्नाथपुर, आरा ।।

•• रउरा सम्पादन में प्रकाशित ''पाती'' के कहानी विशेषाँक मिलल रहे। पाती के साज-सज्जा देखि के, सम्पादकक्षके साँस्कृतिक सुरुचि के दर्शन भइल। आजु कवनो पत्रिका यदि दुसरा के अनुकृति बाड़ी सन, त कवनो में हिन्दी -भोजपुरी के खिचड़ी पकावल बा। राउर सम्पादकीय भोजपुरी गद्य के एगो नमूना बा। गद्य के भाषा अइसने परिनिष्ठित होखे के चाहीं....भोजपुरी भाषा के दू गो रूप में परखल आ लिखल जरूरी बा।

(क)-काव्य-भाषा (ख)- गद्य-भाषा .....काव्य भाषा माने ऊ भाषा, जे कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास में सृजनशील कल्पना के जरिये रचनाकार प्रस्तुत करेला । एमें भोजपुरी के आँचलिक रूप बचावल जा सकेला।

गद्य भाषा में, वस्तुनिष्ठ विचारन के प्रस्तुति, विवेचना, विज्ञान संबंन्धी चर्चा, शास्त्रीय-अवलोकन वगैरह समेटल जाई। गद्य के भाषा तबे ठोस होई, जब दिल ना, दिमाग झलकी। शायद एही बिचार से प्रेरित होइ के, रउरा काव्य-भाषा आ गद्य-भाषा दूनों के प्रयोग पत्रिका में कइले बानी।

रउरा कहानी ('पोसुआ') के भाषा निछक्का काव्य-भाषा बा, जेमें भोजपुरी के ठेठ रूप देखल जा सकेला। एकरा बिपरीत रउरा सम्पादकीय के भाषा, सोरहो आना गद्य के भाषा बा। एही आधार पर, भोजपुरी का अन्य गद्यकारन के कसौटी पर कसल जा सकेला।

•• सतीश्वर सहाय वर्मा'सतीश', बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

(''पाती'' के अंक -8 छपला तक लगभग अढ़ाई सौ पाठकीय प्रतिक्रिया वाली पाती हमके मिलल रहे। सभकर जिकिर आ सबके छापल कठिन रहे। ओही में से कुछ प्रतिनिधि पत्रन के बीनत-बरावत, छापल मोश्किल भइल रहे... तब्बो कुछ खास रचनात्मक कमेन्ट आ सुझाव वाला पत्रन के छापल जरूरी रहे। नीचे हम अंक-८ में छपल कुछ आदरणीय पाठकन के पत्र दे रहल बानी ......)

•• ''पाती'' मिलल। हमरा हिसाब से, ऊँच स्थान त राउर बा। एक जमाना में, रउआ हिन्दी में, चोटी के कथाकार रहि चुकल बानी। सन् साठ-सत्तर के दशक का, हिन्दी के बहुचर्चित पत्रिका ''सारिका'' में छपल राउर कहानी ''सूखे बबूल'' आज तक हमरा इयाद बा। अभी आज तक रउआ से लोग हिन्दी कहानी के उमेद करेला, लेकिन रउआ हिन्दी में लिखल छोड़ि के, भोजपुरी में पत्रिका निकालऽ तानी। हमरा से आ बाकियो लिखे वाला लोगन के, भोजपुरी में लिखे के सुझाव दे तानी, ई का राउर बड़प्पन ना हऽ? रउआ नियर भोजपुरी-भाषा के प्रति समर्पित आदमी के मिली?

बिना विज्ञापन के आजु का जुग में, नीक पत्रिका निकालल कतना मुश्किल काम बा, सभ जानत बा। रउआ चहितीं त हिन्दी में स्थापित भइल कठिन ना रहे, अपना प्रतिभा आ कलम काबल पर ।

भोजपुरी भाषा के प्रति भोजपुरी बुद्धिजीवी लोगन क जवन नजरिया बा, ओके देखि के राउर पीड़ा जायज बा। हमहूँ भोजपुरी में लिखेनी बाकिर ओतना ना, जेतना रउआ आ भगवती प्रसाद द्विवेदी। रउआ सब मिशन बना लेले बानी। भोजपुरिहा लोगन के कर्तव्य बा । अगर हमनी के अपना भाषा का प्रति तनिको मोह बा आ स्वाभिमान बा त, 'पाती' के छाती से लगावे के चाहीं । 'पाती' घर-घर जाव, ई इन्तजाम रउआ ना, भोजपुरिहा लोगन के करे के चाहीं। रउआ जवन करऽतानी, ऊहे बहुत श्रमसाध्य आ खर्चीला बा।

ई बात हम एहसे कहत बानी कि हम बहुत गहिरे भाषा के पीड़ा भोगि रहल बानी। हम कलकत्ता में बानी। इहवाँ बाँग्ला के बोलबाला बा। हिन्दीभाषी लोग एइजा दोसरा दर्जा के नागरिक मानल जालन। ओहू में

भोजपुरिहा लोग ''काऊ बेल्ट'' वाला कहाला लोग। एहूजा भोजपुरिहा लोग भोजपुरी खातिर कुछ ना करेला। बस जीवन के ईहे परम लक्ष बा। तब हमनी के भाषा के का होई ?

भाषा कवनो व्यक्ति के प्राण हवे, जब हमहीं अपना प्राण के आदर ना करब, त दोसर केहू त अउरी ना करी। दोसर केहू हमरा भाषा के निकृष्ट कही, लतियाई। नइखीं देखत हमरा समाज में केहू कविता लिखेता, त ओकरा के पंच कबिजी कहि के रिगावे लागऽता। इहे संस्कृति हवे हमनी के। डूब मरे के चाहीं।

हमनी के बाँग्ला, कन्नड, तेलगू, मलयालम आ मराठी लोगन से सीखे के चाहीं। कला आ संस्कृति का प्रति सम्मानजनक रवैया अपनावे के चाहीं । जब अपना विरासत से हमहीं उदासीन रहब, त दोसर केहू से का मतलब बा कि ऊ रुचि लेव, उहो एह उपभोक्ता आ बाजारवादी संस्कृति का जुग में ...माफ करब, ढेर लमहर चिट्ठी लिख दिहनी...ई हमार भीतर क पीड़ा हऽ अब तनी मन हलुक भइल। रउआ जवन बड़ काम कर रहल बानी, ओकरा प्रति हम ऋणी बानी। हमरा लायक कौनो सेवा होई त लिखब निःसंकोच !

•• विनय बिहारी सिंह, उपसंपादक ''जनसत्ता'', कलकत्ता।

•• समकालीन कविता अंक और समालोचना अँक। पाती' इतनी अच्छी लगी कि सब काम छोड़ कर तब तक उसे पढ़ता रहा, जब तक दोनों अंक की पूरी सामग्री समाप्त नहीं हो गई ।शायद ऐसा पहली बार है किसी भोजपुरी पत्रिका के सथ रस बस जाने की क्रिया हुई बहुत बहुत बधाई अगर आप अत्युक्ति न मानें या मेरा अतिरिक्त मोह भी न मानें तो मुझे यह कह लेने की इजाजत दीजिए कि आपकी यह 'पाती' पत्रिका, भोजपुरी भाषा की तमाम पत्रिकाओं को, सामग्री की दृष्टि से बहुत पीछे छोड़ जाती है। हमें यह कहने में तनिक भी आपत्ति नहीं कि ''पाती'' के समालोचना अंक को पढ़ कर बहुत कुछ जानने और सीखने को मिला । इस तरह के अंक ऐसे व्यक्ति के लिये दिशाबोध का काम करेंगे, जो कम समय में भी भोजपुरी भाषा की संपूर्ण गतिविधि की जानकारी कर लेने का आकाँक्षी है।

संपादकीय से लेकर, अंक के एक एक निबन्ध, एक-एक कवितायें सब-कुछ मन को मोह लेने की क्षमता समेटे कैसा कुछ है, इसके सम्बन्ध में क्या कहूँ। इतना सुख ...उपकृत हूँ आपका ।

भोजपुरी समालोचना के कद काठी, रचना आ आलोचना से निकलल समीक्षा का स्वरूप पर कुछ जरूरी बतकही, जैसे.. अपने आप में संपूर्णता लिये हुये निबन्धों की कितनी भी सराहना की जाय, कम है। मैं किन किन रचनाओं की चर्चा करूँ.... 'को बड़, छोट, कहत अपराधू...।

समकालीन कविता अंक में डा० उमाकान्त वर्मा, भोलानाथ गहमरी, पांडेय कपिल, मोती भैया, आनन्द सन्धिदूत से लेकर कुमारी दीप्ति तक को समेट कर भोजपुरी कविता की विकास यात्रा की अच्छी सैर कराई है आपने। मैं समझता हूँ 'समकालीन' शब्द का सही प्रयोग और उपयोग किया है आपने, नहीं तो आजकल 'समकालीन' शब्द का प्रयोग एक खास तरह की कविता के लिये किया जा रहा है..खेमाबन्दी ने साहित्य को बड़ा नुकसान पहुँचाया है। आप उससे बच कर, सबको समेट कर चल रहे हैं।

•• विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, बेली रोड, पटना ।।

•• ''पाती'' क 'समालोचना-अंक' नसीब भइल । अइसन साहित्यिक पत्रिका निकालल टेढ़ी खीर बा। आप नियमित निकालत बानी, ई भगीरथ प्रयासे कहल जाई फिल्मी-उल्मी पत्रिका में फोटो से सेक्स क जहर घोरि के त पत्रिका संभव बा... निखालिस साहित्य त रउरे माथे नू घहरात होई।... अइसना में केहू मदतियो ना करे, हराम के मिले त सभ पढ़ल चाहेला। आपके त, जियते परम बीर-चक्र मिले के चाहीं... न्यायमूर्ति आनन्द नारायण मुल्ला एगो बड़ियार उर्दू कवि, लिखले बाड़न...' खूने शहीद से भी है कीमत में कुछ सेवा, फनकार को कलम की सियाही की एक बूँद !' रउरे बताईं कि ''पाती'' छपले में, एह स्थिति से आप शहीदन अस कई कई मोर्चन पर ना गुजरीला? भोजपुरी में, केहू सम्पादक ई हिम्मति साइते जुटावे ।

•• मधुर 'नज्मी', गोहना मुहम्मदाबाद, मऊ ।।

अपने के ''पाती'' के ई 'समालोचना-अंक' निकाल के एह पर सोचे खातिर मजबूर कइये दिहले बानी। सब मिलाइ के ई अंक, भोजपुरी समालोचना खातिर इयाद कइल जाई ।

•• रामनाथ पाण्डेय, छपरा (बिहार)

●● रउरा एह अंक लागि सुन्दर आ उपयोगी सामग्री जुटा लिहले बानी। भोजपुरी में समीक्षा का प्रति, जेतना चेतना जागे के चाहीं,ओतना लोगन में नइखे जागल । एह अंक के, एहू दृष्टि से महत्व बा।

●● गणेश चौबे, बँगरी, पूर्वी चम्पारण ।।

●● ''पाती'' के कविता-विशेषाँक, भोजपुरी कविता में नया भाव बोध के उजागर करे वाला अपना ढंग के पहिला प्रयास रहे। अब ई समालोचना-अंक दोसरका मजिगर प्रयास बा। साँच त ई बा कि भोजपुरी में समालोचना के कबो गम्भीरता से लेहल ना गइल ।

●● प्रो० विजयानन्द तिवारी, सम्पादक ''जगरम'', बक्सर ।।

●● इतने श्रेष्ठ स्तर की पत्रिका निकालने के लिये मेरी हार्दिक बधाई। आपने भोजपुरी भाषा को ऊँचे मूल्य की पत्रिका प्रदान की है ...।

●● प्रोफे० रामेश्वर नाथ तिवारी, आरा (भोजपुर) ।।

●● राउर नया ''पाती'' आइल.. झड़प (कुलदीपनारयण झड़प)-शोक लिहले। पुरनियन के गइल देखि के लागता कि... प्रकृति के यौवन का श्रंगार, करेंगे कभी न बासी फूल ''सही बा । रउरा सभे साहित्य के श्रृंगार करब...

●● महेश्वराचार्य, शाहपुर, भोजपुर ।।

●● 'जनसत्ता' कलकत्ता -संस्करण २२ मई १६६४ में ''पाती'' की परिचयात्मक समीक्षा पढ़ने को मिली थी ...भोजपुरी की इस पत्रिका के बारे में जान कर बड़ा ही हर्ष हुआ।

●● जितेन्द्र 'धीर', कलकत्ता -24

●● ''पाती'' का यह अंक पठनीय सामग्री से ओतप्रोत है। सम्पादकीय बड़ा स्पष्ट और सारगर्भित लगा। सभी आलेख तथ्यपूर्णर खोजपरक हैं कविताओं और लघुकथाओं ने पत्रिका का प्रभाव बढाने में योग दिया है। पुस्तक समीक्षा भी संक्षिप्त और सारगर्भ है ।

●● मदन मोहन वर्मा, ग्वालियर, मध्यप्रदेश ।।

●● अइसन अंक भोजपुरी भाषा-सहित्य में, अब तक समीक्षा, समालोचन का नाँव पर ना आइल रहे...। समीक्षा लिखे वाला के रचना, बिना पक्षपात के प्रकाशित करे के चाहीं ।

●● रासबिहारी पाण्डेय, सम्पादक, ''भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका'', देवघर, बिहार।

●● साज-सज्जा, संयोजन, स्तरीय चयनित सामग्रियों और सुयोग्य सुधी-व्यक्तित्व सम्पादक के विचार-भावों से भरा सम्पादकीय अग्रलेख.... इन सबके साथ जगमगाती 'पाती' का हजार बार अभिनन्दन !

●● मोती बी० ए०, बरहज, देवरिया।

●● ऐसी स्तरीय सम्पादन-सेवा मिले तो भोजपुरी क्यों नहीं ऊँचाइयों को छूने लगेगी। आपका श्रम सार्थक है। यह अंक सचमुच यथार्थ रूप में, समीक्षा - अंक हो गया है ।

●● डा० विवेकी राय, बड़ी बाग, गाजीपुर (उ०प्र०)

●● ''पाती'' अंक-8 पढ़ि गइलीं। बलिया जइसन जगही से, एके निकलले में रउरा जरूरे बहुत मेहनत करे के परत होई। लेकिन इहो सच बा कि छोट-छोट जगहिन से बड़हन बड़हन काम होला। बड़का जगहिन के लोग ए कूल्हि कामन के छोट बूझेलें। भोजपुरी में बढ़िया से बढ़िया साहित्य छापीं, अच्छा अच्छा लोगन से लिखवाईं। एसे एह भाषा के महत्व बढ़ी। एह देश के हेत्ती हेत्ती भाषा के सरकारी मान्यता मिलि गइल, लेकिन करोड़न के ई भाषा जहें के तहाँ रहि गइल।... हमरा खुदे पछतावा बा कि जवने भाषा में हमार लेकार फूटल, जवना में हम दाना-पानी मँगलीं- पवलीं ओह भाषा खातिर कुछ क ना पवलीं ''दस्तावेज'' के एगो अंक एह भाषा में निकाले के इच्छा बहुत दिन से बाटे।

●● डा० विश्वनाथ तिवारी, सम्पादक, ''दस्तावेज'', बेतियाहाता, गोरखपुर।

भोजपुरी बिलसी तुलसी पाइ के

डॉ0 अर्जुन तिवारी

'कविता लसि पा तुलसी की कला'। तुलसी त एगो पौधा हऽ जवना के वैष्णव भाई बहुत पवित्र मानेलन, बिना तुलसी दल के कवनो चीज पवित्र ना हो सके। एही से हर घर में तुलसी चबूतरा होला जेकर पूजन आरती सुबह–शाम कइल आपन धर्म–कर्म हऽ। 'मैं तुलसी तेरे आँगन की' से साफ झलकता कि जइसे बिन घरनी घर भूत के डेरा अइसन भकसावन होला वइसहीं बिना तुलसी के आंगन उदास, नीरस, उजाड़ लागेला, उहाँ छछून्दर दलिद्दर के वास होला। शुभ, शिव, मंगल, आनन्द बढ़ावे के निमित्त तुलसी के मान सब जगह सब आदमी करेला–कहल गइल बा–

'तुलसी काननं चैव गृहे यस्याचतिष्ठते।
तद्गृहं तीर्थं भूतं हि....'

मतलब ई कि जवना घर में तुलसी जी होलीं, ऊ घर तीर्थ हो जाला, पवित्रता के उहाँ वास होला जहाँ सभ देवी–देवता रमत रहेले। एही बात के सूरोदास जी कहले बाड़ें–

'सबै तीर्थ को बासौ तहाँ–सूर हरि–कथा होवै जहाँ।'

संत, महन्त, महापुरुष के सच्चा तीर्थ कहल जाला, काहें कि दर्शन मात्र से लोक के कल्याण वाला काज होत रहेला।

अपना देश में जंगली झाड़–झंखाड़, पेड़–पौधा, घास–पातो में दिव्य शक्ति पावल जाला। बेल के गांछ आ बेल (फल) शिव के भक्तन खातिर अनमोल हऽ। कुस आ दूब कर्मकांडी खातिर उत्तम हऽ एही तरह वैष्णव भाई सभ तुलसी के परम पावन मानेले। अपना भारत के मनई तुलसी में भगवान विष्णु के निवास मानेले। तुलसी के 'सुभगा, पावनी, भूतघ्री, विष्णुवल्लभा, वृन्दा, पुण्या, वैष्णवी' कहल जाला। पातिव्रत धर्म के मूल में वृन्दा के नाम आवेला। विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण के लीला भूमि वृन्दावन हऽ जहाँ सौभाग्य, पुण्य आ अचल अहिवात के वास बा। तुलसी के पौधा त सर्वमंगला बड़ले बा ओकर पत्ती आरोग्य के खान ह। जटिल रोग के निस्तार में तुलसी पत्ता के रस रामबाण सिद्ध होला।

अतुलनीया तुलसी के दास तुलसीदास भारत के के कहो पूरा संसार के सबसे बड़ कवि हो चुकल बाड़न। उनकर 'रामचरितमानस' एगो अलौकिक ग्रंथ हऽ जवना के बारे में लिखल गइल बा–

रामचरितमानस विमल, संतन जीवन प्रान।
हिन्दुअन को वेद सम, यवनहिं प्रगट कुरान।। – रहीम

तुलसीदास के रामायण में वर्णाश्रम धर्म, सगुण, साकार–उपासना, गो–ब्राह्मण रक्षा, संस्कृति आ वेद मार्ग के मंडन, विधर्मी अत्याचार के आलोचना के साथे–साथ राष्ट्र–प्रेम, रामराज्य, विश्वबंधुत्व के भाव लोकभाषा अवधी में लिखल बा। भाषा के प्रकाण्ड पंडित तुलसीदास जन–जन के बोली भाषा के अपनवलीं आ 'देसिल वयना

सब जन मिट्ठा' के महातिम बतवनीं। उहाँ के कहनाम ह कि 'रामचरित जे सुनत अघाहीं, रस विसेस जाना तिन नाहीं।' ये लाइन में 'अघाहीं' शब्द पर ध्यान देहला पर मालुम होई कि 'संतोष, संतोख, संतुष्टि' में ऊ भाव नइखे जवन 'ऊघाहीं' में बा। तृप्त भइल, छकल, मन के भरल, गद–गद भइल – ई सभ भावना, भाव–विचार के सम्प्रेषण आ संचार खातिर 'अघाइल' शब्द बेजोड़ बा, भोजपुरी के अपार भाव–अभिव्यक्ति के पहिचान बा। अवधी, खड़ी बोली, उर्दू, बुन्देली शब्दन के मास्टरमाइंड तुलसीदास जी के निगाह में भोजपुरी लोकभाषा में अथाह मर्म के संचार के काली शक्ति बा, आ लालित्य त बेहिसाबे बा। उहाँ के भोजपुरी शब्दन में का–का ना पवले बानीं–

एक सब्द सुखरास है, एक सब्द दुखरास।
एक सब्द बन्धन कटै, एक सब्द गलफाँस।।

तुलसी–साहित्य के अवगाहन कइला पर अइसन असंख्य सब्दन के भंडार मिली जवना से भोजपुरी जगत् के हियरा जुड़ा पाई। 'मानस' के बालकाण्ड में कुछ शब्दन पर विचार करे खातिर प्रस्तुत बा, जवन भोजपुरियो में बोलल–जानल जाला–

उघरहिं बिमल बिलोचन ही के।
कुंभकरन सम सोवत नीके।
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा।
मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा।
चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी।
जौं बालक कह तोतरि बाता।
हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही।
करत कथा मन अति कदराई।
गई बहोर गरीब निवाजू।
अनमिल आखर अस्य न जापू।
लोक लाहु परलोक निबाहू।
नाम उघारे अमित खल।
नाम राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु
जो सुमिरत भयो माँग ते तुलसी तुलसीदासु।

कलिजुग में राम के नाम कलपतरु (कल्पतरु) हऽ, मनचाहा पदारथ देबे वाला ह। ई कल्यान (कल्याण) निवास मुकुति (मुक्ति) के घर हऽ जेकरा इयाद आवते भाँग अइसन निकृष्ट तुलसीदास अत्यन्त पवित्र विष्णु के समान पूज्य हो गइले। ●●

(स्व.) कैलाश गौतम के कविता

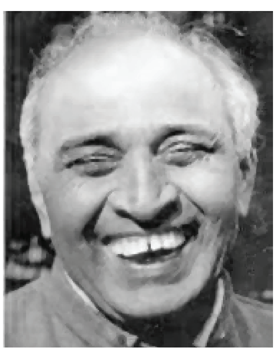

हम बेटवा के सिरे चढ़इबै, तोरे बाप कऽ का?
अपने कुल कऽ रीत निभइबै तोरे बाप कऽ का?

हमरो बाबू अइसैं हम्मैं सिरे चढ़वले रहलन
लइकइयैं कुरसी क मतलब हमैं पढ़वले रहलन
हम बेटवा के उहे पढ़ाइब, तोरे बाप कऽ का?

देह बचावै, आग लगावै पढ़ै लगल हौ रजुआ
सीढ़ी सीढ़ी आसमान में चढ़ै लगल हौ रजुआ
ओकरे खातिर सुरुज मनइबै तोरे बाप कऽ का?

अइसैं रहब न सब दिन, हमहूँ आखिर थकहर होबै
के जानै तब कासी होबै कि हम मगहर होबै
एही बदउलत जगह बनइबै तोरे बाप कऽ का?

अग्गू-जग्गू, अरजू-चरनू का बोलिहैं-बतियइहैं
कुक्कुर गदहा रोज नहइहैं तब्बो, उहे कहइहैं
सेन्ह फोर हम मानर गइबै तोरे बाप कऽ का?

आफत-बिपत मुसीबत सहलीं, अइसे नाहीं रोअलीं
दाग लगल त लगल रह गइल, समय मिलल तब धोवलीं
अब हम मुसरन ढोल बजइबै, तोरे बाप कऽ का?

कब्बो देखलीं-सुनलीं नाहीं अइसन पट्टीदारी
मारे जरन के बोलै नाहीं, कउँच-कउँच दे गारी
दे गारी, हम अउर बिरइबै, तोरे बाप कऽ का?

अइसै समय रही माफिक त बेटवो मालिक होई
जियत रह्या त देख्या तुहऊँ घर-घर काँटा बोई
अपने आसन पर बइठइबै, तोरे बाप कऽ का? ●●

अनसुनल-सुनल आ अनदेखल-देखल धरनीदास आ उनकर काव्य

परिचय दास

धरनीदास क कविता एक तरह के आत्म–प्रक्षेपन हवे, जहां सब्दन में अंतः अनुस्यूत संगीतमयता हवे। उनके साहित्य के समझ खातिर तीन उपयोगी उपमा हो सकेलीं: उनकर कविता रंगमंच जइसन हवे, उनकर कविता संगीत नियन हवे आ उनकर कविता में जीवंत मूर्तिमयता के तत्त्व हवें। अकेल अइसन महत्त्वपूर्ण कवि जवन सगुन–निर्गुन के धूमिल रेखवो के छीन क देलें– 'निर्गुन है गुरु देवता, सिख सरगुन सब होय। रहत सिखावत रैन–दिन धरनी देखु विलोय।। 'उनकर ''शब्द प्रकाश'' आ ''प्रेम प्रगास'' ज्ञानाश्रय व प्रेमाश्रय क अद्‌भुत सम्मिलन हवे। यह दृष्टि से ऊ भारतीय साहित्य में विरल हवें। भोजपुरी के अलावा एतनी सगरो भाषा में उनकर फुटकर पद रचना हईं सन कि सायद उनकर ई प्रयासो उनके भारतीय साहित्य में अनन्य बनावेला, जइसे – अवधी, ब्रज, बांग्ला, पंजाबी, मैथिली आदि। एतना सारा राग, एतना सारा प्रसंग। ई कहीं औरू मिलल कठिन होखी। सास्त्रीय, उपसास्त्रीय आ लोक संगीत के विस्तार पर गहिर धँसल पदन के रचना अन्यत्र संभव ना लउकेले। उनकर रचनन में एक ओर जदि बेकूफी, कबीला, शुमारा, बादशाही, बदी, मीर –उमरा, शानी–गुमानी, मिसाले रहीमा, वजीदा, फरीदा इत्यादि सब्द मिलेलन त छत्रधारी, मोक्ष विश्राम, शब्द–सुगंध, तत्त्व परमादि, अनृत, निरंतर, प्रतीति आदि सब्दो देखल जा सकेलें। सामाजिक विद्रूपता के प्रति धरनी दास में विद्रोह हवे, जेप्पर आलोचकगन के धियान ठीक से नइखे गइल ––

जब लगि एक ब्रम्ह नहिं तब लगि ब्राम्हन नाहिं

जानो वेद बड़ा है गोत्र तुम्हारा सो पुनि करत पुकार
जीभ स्वाद लगि जीवन मारो जियहु न वर्ष हजार

मीयां मोलना समुझी देखो को है बोलनिहारा
बिना दया दस्तार जो बांधो जानि धरो सिर भारा

गला काटते दर्द न आवे मसला पढ़त बनाई
धरनी बाँग बुलंद पुकारै अजहुँ न समझे पारा

बाकिर धरनीदास में एगो गहिर समंजनो हवे जवन कबीर में ना हवे। इनकर रेंज कबीर से जियादा व्यापक हवे। इनकर कविता, संगीत के साथे–साथे एगो मेटा–आर्ट बिया आ एकरे प्रभावन के उत्पादन खातिर गैर–भौतिक संरचना पर निर्भर करेले, रहस्यो में जाले। एह मामले में, मध्यम वाक्यविन्यास, व्याकरण आ तार्किक निरंतरता इनके यहां बा, जवन एक साथे सादा अर्थ के वाहक–लहर

क निर्माण करेलन। ओकरो भित्तर इनकर गहिर अर्थ प्रसारित होला।

धरनीदास में कविता साहित्यिक अनुभव के केंद्र में हऽ, ऊ एगो पढ़ल लिखल कवि हवें। आ ई ऊ रूप ह जवन सबसे स्पष्ट रूप से साहित्य के विशिष्टता के रूपायित करेला। उनकर कविता के विशिष्टता एह तथ्य से उपजल हवे कि कविता क विसय–वस्तु, माध्यम आउर सनेस एक्के हवें –

पिया मोर बसहिं गउरगढ़ मैं परयाग ।
सहजहि लगल सनेह, उपजु अनुराग ।।
असन वसन तन भूसन, भवन न भावइ।
पल पल समुझि सुरति मन गह्वर आवइ।।
चाहे,
प्रेम प्रगट भेल, भाजि भरम गेल, उर
उपजेल रस पागेलो
तेहि मन माने माया, कल न परत काया,
भूली गेल भूख पियासे घर वासे लो
पचि गैलि पंडिताइ, चलि इमिइलीं चतुराइ,
नींद न ठलि दिन राती, न सोहती लो
परिहरि जति–पंति, कुल करतुति भँति,
बिसरल बरन बड़ाइ, प्रभुताइ लो

जाति– पाँति छोड़िये के न परेम होइ, धरनी दास के इहे अंतर्पाठ बा। अंतिम बूझ में जवन कविता वास्तव में अपन के व्यक्त करेले ऊ खुद में खुद खातिर मन क आसंको सम्हने ले आवेले, ई धरनी दास के यहां लउकेला। कविता सबसे प्रभावी रूप आ समावेशी रूप में (चाहे मुक्त या औपचारिक कविता में) बोलेले, जब ऊ अपना संबंध के पहिचानेले। धरनीदास के कविता के वास्तविकता एम्मे हवे कि ऊ जीवन के काव्य हो जाले। कविता के सब्द–यात्रा अइसन होखे कि ऊ कविता से युक्त होखे के चाहीं, एही से सब्द पर धरनी दास के अइसन भरोस बा–

धरनी सब्द प्रतीति बिनु कइसहुँ कारज नाहिं
सब्द सीढ़ी बिनु को चढ़ै गगन झरोखा माहिं ।
बोलेते अक्षर भया, बोलेते भा सब्द
धरनी जो नहिं बोलता तो अक्षर न सब्द ।

कविता में निहित संवेदनन के अभिव्यक्ति के असमर्थता से जब धोखा होला त कवि जता देला ––

बिनु अक्षर को अक्षरा, बिनु लिखनी को लेखु
बिनु जिह्वा को बांचना, धरनी लखो अलेखु।

धरनी दास के रचनाकृति ई बता देलीं कि कला संपूर्ण रूप में एगो पहेली हवे ––

धनि से गनिका भैलि, रसिया राम
सहज सुरंग रंग भीजि गैल बनि गैल काम।

धरनीदास क कलाकार के कोसिस (जानबूझके चाहे अनजाने में) कौनो चीज के सार के गहल हऽ। सौंदर्यशास्त्र के कुछ दार्सनिकन के साथे, कला आ कविता क उद्देस्य सामान्य, अमूर्त आ मूर्त रूप के समझल ह। कविता क कार्य ई इंगित कइल ह कि संकेत संदर्भ के समान नइखन। धरनी दास क लेखन अंततः परखे के कहेला –

भागवत गीता परेखो, समुझि देखो वेद
जाहि गुरु गोबिंद किरपा, ताहि मिलता भेद।

धरनीदास के लेखन में सबसे गहिर आवेग... ओके कविता बनावेला। उहाँ कविता आंसिक रूप से एगो स्वीकृत बौद्धिक प्रणाली के निस्चितता के कम क के अंतरप्रदेस हेतु मौजूद हवे, जहां स्वत्व प्रगट होलाः जागरूकता क एगो विस्फोट खोलके, जेपर असंबद्ध दुनिया क वास्तविकता प्रवेस क सकेले। कविता वास्तविकता जइसन सायद न होखे बाकिर वास्तविकता जइसन असंभव होखलो कविता क विसेसता ह। धरनीदास के कविता क अर्थ कई बेर दृस्यमान संसार के वोह वस्तुअन के रखल हऽ जवन हमनी के समक्ष अदृश्य हो गइल हवें। जवन स्थिति एगो असामान्य स्थिति में आत्मा पर हमला करेले आ ओकरा पर एगो दुःखद बल देलीं, उनके धरनी दास क कविता एगो जरूरी सन्दर्भ देले। इहे देख कर प्रतीति होले कि कविता क भविष्य बहुत बड़हन ह, काहें से कि कविता में, जइसे–जइसे हमनी के समय बीतेला, एक–एक सुर में एगो सुर औरू जुड़त जाला। उहाँ पता चलेला कि हमनी के का करेके हवे, जीवन समुझे खातिर, अपना के सांत्वना देवे खातिर, हमनी के कविता की ओर मोड़त जाला ––

थाकिल आमार ठाकुर बाड़ी। अनदेखि
देखिल अनसुनि सुनिल।
अलख लखिल अनुहारी ।...

पूर्व भेद अपूर्व सुनिल सुनेते लागि, सुख सभारि। सकल तजिल सत संग धरिल, लंघिल प्रबल पहा खलील कुंजि पाट उदिल से उजियार। चित्र बिचित्र चित्र सारि सोमिल, बरनी न आइल

बिन जल मल मेह कमल बिकसित। ताहार
मूर्ति मनोहर बिनय करू हनि हनि तारि।

धरनी धाइल, सरन समाइल हरिपद हृदय बिचारि।
पुलके पुलके पुरुसोत्तम पुन, पूजिल आस अमार।।

धरनीदास के रहस्यमय वास्तविकता सीधे हमनी के इंद्रियन आ हमनी के चेतना पर असर डालेली सन, उनकर कविता में हमनी के भौतिक दुनिया आ खुद के बीच सीधा संचार बा उहाँ कला अपना तरीका से ध्वनित होले। उनकर कविता बतावेले कि एगो व्यक्ति के भीतर का घटित हो सकेला भा का घटित भइल बा अर्थात सीधे अपन आ व दोसरा के बीच संवाद कइल गइल बा एसे एम्मे सगरो कला न्यस्त हो जाली सन। धरनीदास के कविता भावना के व्यक्त करे खातिर कवनो भाषा के धारन क लेले। ऊ भावना के बारे में मितभाषी बाड़न। जइसहीं उनकर विवेक प्रतिक्रिया देला आउर कौनो रहस्य में आप्लावित होला, भावना सब्दन में झलकि जाले ——

एक अकथ कहानी कहि न जाय। जो न
कहाँ घाट नहिं समाय।
लघु दीरघ नहिं मोट छीन। घटत बढ़त नहिं
दीन दीन
निपट निरंतर हलुक न भार। हिन्दू तुरुक व
बूढ़ बार।
स्याम जर्द नहिं सेट रात। अति अवरन
मुख कहि न जात।
दसहुँ डिसा नर भारत धाय। रहेउ सकल
घाट भवन छाय।
जरत सरत नहिं मरत मारि। जोगी पंडित
गया हारि।
नहिं पावै कर कोटि दान। कोई कोई भेदी जान।
मो मन भवन परो भुलाय। सहजे सतगुरु भौ सहाय।
धरनी निसदिन धरत ध्यान। साधु संग होइ
बिमल ज्ञान।

कविता कुछऊ ना बलुक खुद के इंगित करेले, ई धरनीदास के यहां देखल जा सकल जाला। उहाँ कविता खाली मानव—अनुभव के व्यक्त कइला के सबसे संक्षिप्त तरीका भर ना हऽ य ई कवनहूँ भाषाई संचालन खातिर उच्चतम संभव मानको प्रदान करेले। धरनीदास के कविता सगरो कला रूप में, हमनी के अउर अधिक मानवीय बनावेले। उनकर कविता क प्राथमिक वर्णक जीवन की छवि हऽ, जीवन क रहस्य हऽ, लोकरस हऽ, परा के प्रति समुझ हऽ आ सत्य क आचमन हऽ।

सोच एक फल में पोषक गुण नियन कविता में छिपल होखे के चाहीं। कविता के मूल्य के ओकरे प्रभाव के गंभीर संभावना में हस्तक्षेप कइल आ सहजता के सौंदर्यगत महत्वाकांक्षा में निहित ह। धरनीदास के इहां लिखित मौखिकता के सौंदर्य के रूप में अनुभव कइल जा सकल जाला आ ई व्यवहार उनके भाषाईं संरचना क अंग ह। धरनी दास यह बाति के धियान में रखेलें कि ऊ एके कौना रूप में कहि रहल बाड़न... लगेला कि कविता क सैली आ कविता एकमेक हो गइल बाड़ीं ——

मुख कहल न जाय दुःख दुखिया ।
गइल अन्हर पख, भइल अँजोर। मैं गइला
भंजन मगन मन मोर ।
निशि दिन रटत रोवत चलि जाय। गृह
आँगन बन कछु न सोहाय।
ई दुःख जनिहें बिरला कोय। अइसन दुखरा
पसरल जैहि होय।
सुखहित नर कर कोटि उपाय। धरनि के
दुःख हित, सुख न सोहाय ।

कविता ऊ बिंदु हवे जेपर तर्कसंगत आ अतार्किक : दूनों कारन, जानबूझके सहअस्तित्व आ बातचीत खातिर उपलब्ध होलें। हम धरनीदास में ई देखीलां कि उनके उहाँ कविता क मूल्य ई हऽ कि कवि आ फिर पाठक खातिर ऊ का अर्थवत्ता रखेले। धियान से देखीं त उहाँ कविता तीन कला का संचयन ह : संगीत, कहानी आ चित्रकला। 'प्रेम परगास' में जवन कथात्मकता हवे, ऊ – 'भगति भाव अमि अंतर लागे। सर्गुनिया सरगुन ले आवे। निर्गुनिहि सुनावे।' रसिकता के महत्त्वपूर्ण मानत प्रेम परगास के अंत के 'विश्राम' में ऊ कहेलन कि – रसिक पढ़े रस ऊपजे, मूरख उपजे ज्ञान। कादर नर हो सूरमाउ, जोगी पद निर्वान'। उनकर ई रचना कविता में संगीत का प्रतिनिधित्व करेले, हर अग्रिम पंक्ति कथा क मार्मिकता रखेले आ भासा—छवि कवि के शिल्प— दीठ के प्रदर्सित करेले। इनके उहाँ कविता मौन के चरम रहस्य के प्रगतिकरन हऽ, मौन में भाषा क धियान ह। उनकर विद्रूपता के विरुद्ध सार्वजनिक भासो सोर क सिलसिला ना लागे। कविता द्वारा अपना आप में एगो रास्ता खोजला के जरूरत रहेला, जवन धरनी दास में सिद्दत से उपस्थित बा। धरनी दास के कविता इच्छा आ भय दूनों के गहिर भेद्यता से आश्चर्यचकित करेले।

धरनीदास मन के अन्हियार के प्रतिबिंबित करे वाला कवि हवें ताकि सहज उँजियार उपस्थित हो सके। ऊ अनेक बेर ओह लोगन खातिर बोलेलें जिनकर कौनो आवाज ना रहे। अपने अनुभवन के आस्चर्यजनक ज्योति अउर सूक्ष्मता के साथ प्रकट करेलें। उनकर कविता सिर्फ वैचारिकता से मौलिक रूप से एह रूप में अलग हवे कि अस्तित्व के समुझे आ व्यक्त कइला क ऊ एगो भिन्न तरीका प्रदान करेले। ऊ टेक्स्ट जवन हमनी के असाधारण रूप से विचारोत्तेजक या संगीतमय लगेला – आमतौर पर 'काव्यात्मक' कहल जाला। धरनीदास के कविता आत्मा के हस्ताक्षरकर्ता लोगन क एगो संरचना ह, जवन मनुष्यता के सिल्प के पुनर्रचित करेले। उनकर कविता अपने अंतज्ञान में स्वयं क पखार हऽ आ असंभव छवियन के निर्मिति से एगो नयके संसार क प्रतिपादन करेले – धरनी देखो धरनि में, एक अजूबा बात। सुखहि सुने दुःख होत है, कठिन कही नहिं जात ''।

(धरनीदास पर डॉ0 परिचय दास के प्रकाश्य पुस्तक के अंश) ●●

❑ 76, दिन अपार्टमेंट्स, सेक्टर-4,
द्वारका, नई दिल्ली-110078

गंगा प्रसाद 'अरुण' के गीत

(एक)

साधो, जाने कइसन महभारत फिर आइल बाटे
चकराबिहू रचाइल बाटे ना!

केकर कइसे गोड़ कबारीं
केकरा के कइसे हम जारीं
डेगे-डेग इहाँ पर लाखा-घर सिरजाइल बाटे
चकराबिहू रचाइल बाटे ना!

अनकर अस्तर-सस्तर बोले
बीचे धरम-जूझ मन डोले
ममिला बर्हमफाँस में उनइस के अझुराइल बाटे
चकराबिहू रचाइल बाटे ना!

बूझीं तच्छक कुल के पूता
अरजुन के अरिजन अस बूता
करना के धनुही पर अश्वसेन तरनाइल बाटे
चकराबिहू रचाइल बाटे ना!

सातिर जिरजोधना के सूरा
मिलजुल कइलें बकिया पूरा
सतवाँ फाटक निहथा बिर अभिमान मराइल बाटे
चकराबिहू रचाइल बाटे ना!

(दू)

कबरे गाछी/पवन झकोरले/दूब कबो ना!

सब जानेला/सहल फरलके/ढेला-झटहा/काम बिगारे/
निहित सवारथ/बोली कटहा/
अपना राहे/अझुराइल मन/ऊब कबो ना!

ढेरे मछरी/गरदन फँसरी/बकुला जाने/करिया दिन/ रतिये उजियास/उरुआ माने/
तनिका पाईं/परस पुरनका/खूब कबो ना!

नाव काठ के/सरित अगिन के/जुग खादी के/कहवाँ बूझे/
उजबुक बानर गुन आदी के/
रहीं किनारे/हरदम लहरा/डूब कबो ना!

भला निबाहे/अपनइती कब/पाझ-लवाजी/नीक बनीं जी/
दिल में उतरब/दिल से ना जी/
टूटे भलहीं/सुरभित सपना/हूब कबो ना!

(तीन)

अनकर अरजन पर अगराइल
लहसत धूम-धड़का बोले
का-का बोलीं हो मोर बचवा
काका बोले!

सुघरी रहल कुँआर
दुआरे ठहरे के दो देला हो
सुरसितया से मुँह फेरले
सब लछिमिनिया के चेला हो
माड़ो से पसरल मसान तक
सगरो टन-टन टाका बोले!

गइल जबाना मीठा-पानी
प्रेम भरल पकवान हो
बोतल-पाउच बंद इहाँ अब
पंचन के भगवान हो
महुआ के मस्ती में मातल
सँउसे ससुर इलाका बोले!

एने चले ठिठोली
ओने गोली के बरसात हो
साँझ-सकारे मउवत के कब
मिल जाई सौगात हो
गाँव-गली, नुक्कड़-चौराहे
जमल खून के थाका बोले!

सभे लालची हीत-हितारो
चाहत पेरल-गारल हो
बेटी-पूत, भतीजा-भाई
सब स्वारथ के मारल हो
गाढ़-सकेला आँख फेर ले
चान-सुरुज के चाका बोले!

जे रहले रखवार
कि ओकरे से डर जादे बाटे हो
रूप-रुपैया; रंगदारी के
हिरदय में सब साटे हो
कोट-कचहरी-थाना जा ना
चोर-सिपाही डाका बोले! ●●

❑ 21 बी, रोड-1, जोन-4, संडे मार्केट बिरसानगर, टेल्को, जमशेदपुर-831019 झारखंड

भकसावन

✍ दिनेश पाण्डेय

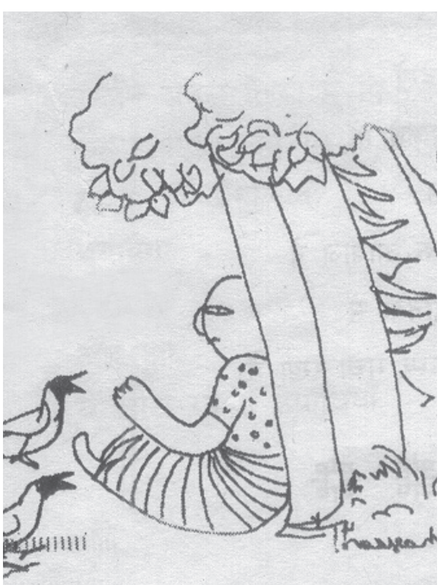

कुचकुच करिया राति
बड़ी भकसावन।
सिहरल पीपर पात
लागि झरि सावन।

बिजुखी जोत अकास
एने अन्हियारा।
रहि-रहि बहे बतास
चुए जलधारा।

बनचिरईं के बोल
जियरवा जारे।
उठ ना एरी ननदी,
दिअरवा बारे।

बह पुरवा निरदई
किंवरिया खोले।
अँटकल मन के बात
कंठ अनबोले।

आय न बौरी नीन
देह भहराए।
पोर-पोर के पीर
हियरवा छाए।

पिय बसले परदेस
एकसरि नारी।
सावन बैरी जाए
कटे निसि कारी।

बनारस क अँजोर: पं. मदनमोहन मालवीय

विजयशंकर पाण्डेय

सानन्दमानन्द वने वसन्तम्
आनन्दकन्दम् हतपाप वृन्दम।
वाराणसी नाथम् अनाथनाथम्
श्री विश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।

बनारस अपने पुरातन संस्कृति अउर बाबा विश्वनाथ मन्दिर के कारन, कला, साहित्य, सिल्क साड़ी क व्यवसाय, डीजल लोकोमोटिव कारखाना के कारन, गंगाजी के गोद में होवे के कारण, मन्दिरन के शोभा के कारन, संगीतकार, साहित्यकारन क अदभुत संगम होवे के कारन दुनिया में आपन ऊँच स्थान रखेला। आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में थोड़ी कमी रहल, त एके पहिले देखलन पं. मदनमोहन मालवीय जी। ऊ जानत रहलन कि बनारस में वैदिक शिक्षा आ संस्कत के शिक्षा क त कमी ना हौ, मुला संस्कृत के शिक्षा के साथे आधुनिक शिक्षो क आवश्यकता ओतनै जरूरी हौ। ओनके दिमाग में विश्वविद्यालय स्थापित करे क एगो बड़हन योजना आइल।

मालवीय जी सन् 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय क स्थापना कइलन। हम इहाँ ओही महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय जी के जीवन गाथा क वर्णन कयल चाहत हईं।

कहल जाला कि भारत के महान पुरुषन के तारामण्डल में, एक स्वयम् प्रकाशित तारा क उदय 25 दिसंबर 1861 के माता मूना देवी के अँचरा आ व्रजनाथ जी व्यास के गोद में, तीर्थराज प्रयाग में भयल रहल। इहै बालक बाद में पं. मदनमोहन मालवीय के नाम से प्रसिद्ध भइलन। पिता व्रजनाथ जी संस्कृत क विद्वान रहलन। कथा प्रवचन जीवनोपार्जन क साधन रहल। इनकर पूर्वज मालवा से प्रयागराज आ मीरजापुर में आके बस गयल रहलन। एनके पास कवनो विशेष पैत्रिक सम्पति नाहीं रहल। मलैया ब्राह्मण से मालवीय हो गयल रहलन। ओइसे ई भारद्वाज गोत्रीय चौबे ब्राह्मण रहलन। पं. व्रजनाथ जी के छः पुत्र आ दू पुत्री रहलिन। बालक मदनमोहन बचपन से बहुत होनहार रहलन। स्कूल जाये के पहिले हनुमान मंदिर में जाके प्रार्थना करैं।

मनोजवं मारुततुल्य वेगम्, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीरामदूतं शिरशा नमामि।।

निरधन भइला के बावजूद मालवीय जी कबहूँ व्यक्तिगत काम खातिर दान न लें। उनकर—कहनाम रहे कि—

मरि जाऊँ माँगूँ नहीं अपने हित के काज,
परमारथ के कारने, मोहिं न आवे लाज।।

ओह समय के हिसाब से मदनमोहन जी के विवाह देर से सत्रह बरिस के उमर में भयल। ओही साल ऊ हाईस्कूल पास कइलन। संस्कृत शिक्षा खातिर अपने चाचा के घरे मीरजापुर आवत रहलन। पं. नन्दराम जी एनकर प्रतिभा देख के अपने लइकी कुन्दन देवी क हाथ एनके हाथ में दे दिहलन। विवेकानन्द जी के तरह एनहूँ के माँ सरस्वती क वरदान मिलल रहल। जवन कुछ ऊ एक बार पढ़ लें ऊ इयाद हो जाय। डॉ. राधाकृष्णन इनके बारे में कहे रहलन 'हिन्दी आ अंग्रेजी के महान वक्ता'।

मालवीय जी बचपन से बहुत धार्मिक रहलन। अपने डायरी में भजन लिख के रखैं। ओसे ओनके चरित्र क पता चलेला।

सब देवन में देव प्रभु, सब जग के आधार,
दृढ़ राखो मोहि धर्म में बिनवौं बारम्बार।।
सतचित् आनन्द घन प्रभु सर्वशक्ति आधार,
धनबल, जनबल, धर्मबल, दीजै सुख संसार।।
पाप, दीनता, दरिद्रता और दासता पाप,
प्रभु दीजै स्वाधीनता मिटै सकल सन्ताप।।
जाके उर प्रभु तुम बसो, सो डर कासो खाय,
सिर जावे तो जाय प्रभु, किन्तु धर्म नहिं जाय।।
उठो धर्म के काम में, उठो देश के काज,
दीन बन्धु तव नाम ले, नाथ राखियो लाज।।

विद्यार्थी जीवन में कालेज के हर एक गतिविधि में भाग लेत रहलन। खेल में, नाटक में, वाद–विवाद में, कविगोष्ठी में। एनके अन्दर नेतृत्व करे क प्रतिभा बचपन से रहल। खेलकूद, व्यायाम, कुश्ती, भाषण, नाटक, बाँसुरी वादन, सितारवादन, सब में हाथ बँटावत रहलन। बहुत अच्दा कवियो रहलन। उनकर कविताई कुछ अइसने रहे–

भूलिहैं सो हँसि मागिबो दान को,
रंच दही हित पान पसारन।
भूलिहैं फाग के राग सबै वह,
ताकहि ताक के कुडकुम मारन।।
सो तो भयो सबही 'मकरन्दजू'
दाखहि चाखि के बैर बिसारन।
जापर चीर चुराय चढ़ै,
वह भूलिहैं कैसे कदम्ब के डारन।।

मालवीय जी सनातन धर्म क प्रबल समर्थक रहलन। प्रायः ऊ कहल करैं–

विद्या, रूपं, धनं शौर्यः कुलीनत्व मरोगिता,
राज्यं स्वर्गंच सर्वं धर्माद वाच्यते।

विद्या, रूप, धन, शौर्य, वीरता, कुलीनता, निरोगिता, राज्य, स्वर्ग, मोक्ष ई सब सनातन धरम के आचरण से मिल जाला। ओनकर इहो कहनाम रहल।

हमके राज्य न चाही, स्वर्गो न चाही, मुक्तियो न चाहीं,
हमके दुःखी प्राणीन के दुःख क नाश चाही।।

दूसरे के दुःख के देख के हम दुःखी हो जाईं अइसन मन चाही। पाप से बहुत डरत रहलन। हमेसा सत्य आ न्याय पर चलैं। प्राण नाश होवे के जगहों पर पाप न करैं।

घरे क हालत ठीक न होवे के कारण 1885 में मतारी के कहले पर रू0 40/– महीना पर अध्यापकी शुरू कइलन। 1886 में गुरु आदित्यराम भट्टाचार्य के साथ कलकत्ता में कांग्रेस के अधिवेंशन में राजनीतिक भाषण दिहलन। बाद में उनकर कांग्रेस में एतना मांग बढ़ल कि नौकरी छोड़े के पड़ल। 1887 में प्रतापगढ़ से प्रकाशित हिन्दी दैनिक 'हिन्दोस्थान' में 250/– महीना पर सम्पादकी भार उठा लेहलन। करीब दू बरिस बाद एक दिन कालाकांकर नरेश नशा की हालत में पं. अयोध्यानाथ जी के विषय में कुछ अनुचित बात कह दिहलन। बस तुरन्तैं मालवीय जी आपन त्यागपत्र लिख के भेज दिहलन। फिर बहुत अनुरोध का बादो तइयार नाहीं भइलन। बाद में राजाकांकर के प्रार्थना पर वकालत पढ़लन, एकरे बदे राजा साहब 100) महीना भेजत रहलन।

राजा साहब के इहाँ से काम छोड़ले के बाद मालवीयजी कई पत्र–पत्रिकन में संपादकी कइलन। बिड़ला परिवार के सहयोग से 'हिन्दुस्तान टाइम्स' अउर हिन्दुस्तान अखबार क 1829 से प्रकाशन आरम्भ कइलन आ ओकर 1946 तक चेयरमैन रहलन। मालवीय जी भोजपुरी के शब्दन क बहुत प्रेमी रहलन। ऊ बोले बतियावे में आश्चर्य के स्थान पर अचरज, जन्म के स्थान पर जनम कहल पसन्द करत रहलन। इहे ना, ऊ आदमी के योग्यता के अनुसार ओसे बात करत रहलन।

मालवीय जी 1892 में इलाहाबाद हाईकोर्ट से वकालत शुरू कर दिहलन। इनकर सिद्धान्त रहल कि झूठा मुकदमा न लड़ब, सार्वजनिक केश में पइसा न लेब। जब इनकर वकालत फीस 2000/– प्रतिमाह तक हो गयल रहल, बाकिर तब देश खातिर वकालत छोड़ दिहलन। अउर सक्रिय रूप से राजनीति में आ गइलन। गोखले जी अउर एक अंग्रेज जज कहले रहलन कि जब लक्ष्मी क देवी मालवी जी के घरे आ गइलिन ओ समय मालवीय जी त्याग दिहलन। 1913 तक मालवीय

जी वकालत पूरी तरह छोड़ देहले रहलन।

लेकिन 1923 में चौरी–चौरा काण्ड के अभियुक्तन के छुड़ावे बदे एक बार फिर हाईकोर्ट में वकालत करे अइलन। ओनके तर्क से जज एतना प्रभावित भयल कि बहस के दौरान दू–तीन बार उठ उठ के ओनके सम्मान में सिर झुकउलस। कहलस 'आपके सिवा दूसरा कोई ऐसा बहस नहीं कर सकता'।

कांग्रेस के जनम के दू साल बादै 1886 से मालवीय जी एसे जुड़ल रहलन। महात्मा गांधी जी एक बार कहले रहलन 'मैं मालवीय जी से बड़ा देशभक्त किसी को नहीं मानता'। 1909 से 1933 तक चार बार कांग्रेस क अध्यक्ष रहलन। पूरे देश में घूम–घूम के देशप्रेम क अलख जगावत रहलन। 29 अगस्त 1931 के गांधीजी, सरोजनी नायडू के साथ गोलमेज सम्मेलन खातिर लन्दन गइलन। 15 सितम्बर 1931 के इनकर मुख्य भाषण भयल।

4 फरवरी बसंत पंचमी 1916 के बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय क शिलान्यास कइलन। 1 अप्रैल 1916 से विश्वविद्यालय क काज आरम्भ हो गयल। मालवीय जी चाहत रहलन कि अंग्रेजन के औरतन के तरह अपने देश क औरतो निरभीक होंय। कर्मयोगी अइसन कि 105 डिग्री के बुखार में रहै तबो कुछ लिखत रहैं। एक बार गांधी जी पुछलन 'देश की चिन्ता आप कब छोड़ेगें?'

'जब वह चिन्ता मुझे छोड़ दे' ओनकर जबाव रहल।

ओनकर प्रिय भजन रहल– 'सब मिल बोलो एक आवाज, अपने देश में अपना राज' ई ओनकर नारा रहल।

घट-घट व्यापक राम जप रे।
मत कर बैर, झूठ मत भाखें,
मत परधन हर, मत मद चाखै।
जीवन मत मार, जुवा मत खेलो,
मत पर तिय लख, यही तेरो तप रे।।
घट-घट व्यापक राम जप रे।।

12 नवम्बर 1946 के ईश्वर क ई दूत ई संसार छोड़ के पूर्णता में विलीन हो गइलन। इति।

साभार– महामना मालवीय फाउण्डेशन प्रकाशन, वाराणसी, ले. डॉ. उमेश दत्त तिवारी के आधार पर...

●●

❑ गुंजन कुटिया, नारायणी विहार कालोनी
चितईपुर, सुन्दरपुर, वाराणसी।

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

दयाशंकर तिवारी

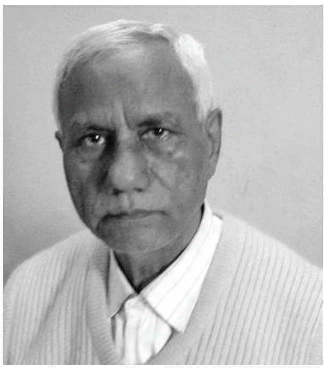

जन्म : 03.01.1945, ग्रा०-मीरपुर रहीमाबाद, जिला-मऊ (उ०प्र०)
शिक्षा : इन्टरमीडिएट के बाद इन्जीनियरिंग (डिप्लोमा),
इलेक्ट्रिकल इन्जीनियर, बलिया जनपद से अवकाश प्राप्त।
भोजपुरी आ हिन्दी के स्तरीय पत्रिकन में रचना प्रकाशित। ''माटी के महक'', ''वीर अभिमन्यु'', ''बिगुल और बाँसुरी''। काव्य आदि पुस्तक प्रकाशित। अखिल भार० भोज० परिषद, लखनऊ से ''भोजपुरी शिरोमणि''। सम्मान आ ''पाती-अक्षर-सम्मान का अतिरिक्त अउर कई सम्मान। विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर (बिहार) से ''विद्या वाचस्पति।
सम्पर्क : मकान नं०-297, गायत्री भवन, भीटी (अन्धा-मोड़), जनपद-मऊ-275101

सात गो कविता

(एक)

कइसे रोकीं आजु रोआई,
रोटी खातिर छिड़लि लड़ाई। कइसे...

जगह-जगह सभ जूझि रहल बा,
केतना पानी बूझि रहल बा,
रोजी के जुगाड़ के केवनो,
रस्ता नाहीं सूझि रहल बा।
बदनसीब कहि कहि के कबले
होई जगत हँसाई। कइसे...

बतिये से हर बाति बढ़ति बा,
भेदभाव से जाति बढ़ति बा।
दाँव पेंच के बल बूते पर
अदिमी के औकात बढ़ति बा।
सोझा केहू सोझ न बोले,
सहि न जाति अधिकाई।। कइसे...

कतहीं उज्जर कतहीं करिया,
कतहीं आठो पहर अन्हरिया।
रात आ दिन के बीच फँसलि बा
चान सुरुज के पहिया।।
धरती माई के गरहन से
के हो आज बचाई।। कइसे...

किसिम किसिम के साज बनल बा।
सिर पर नकली ताज बन्हल बा।
पोति पिसान देहि पर केहू
भण्डारी महराज बनल बा।
पानी पी पी के पेटे कऽ
कइसे आगि बुताई? कइसे...

(दू)

नाहीं लउके डहरिया के छोर गुइयाँ
पीरा पसरे लगलि पोर पोर गुइयाँ।

देहिये भइल आपन अपने के भारी,
निरदइया अबहीं ना छोड़े बेवपारी।
होइ रहल ओही में तोर मोर गुइयाँ।

आँखि कान ठेहुन जबाब दिहलें तन के
काल करे अनगिन सवाल चुन चुन के।
होइ गइल बाटें विधनो कठोर गुइयाँ।

जिनिगी भर जाहिल गँवार हम रहलीं
मनवा के हर बतिया कहियो ना पवलीं।
अब तऽ बांचलि जिनिगियों बा थोर गुइयाँ।।

केतनों जतन केहू करे ना मेटाई,
लिलरा के लेख नाहीं पढ़ले पढ़ाई।
जानी कबले लगब कवनीं ओर गुइयाँ।

मटिया आ पनिया के देहिया बा छूछे
अगिया अकसवा बतसवा से पूछे।
अब तऽ सुखि गइलें अँखियो के लोर गुइयाँ।।

ना कवनों थान बचल ना कवनों थाती
रहि रहि के भभकेले तेलवा बिन बाती।
इहे दियना कऽ आखिरी अँजोर गुइयाँ।।

(तीन)

कइसे काटीं हो रतिया पहार बलमा
सिहके पुसवा कऽ जुल्मी बयार बलमा।

बड़का लरिकवा कऽ छुटली बढ़ाई
फाटि फाटि छोट भइल बड़की रजाई।
मुँहवा ढाँपीं तऽ गोड़वा उघार बलमा।।

रतिया में हमरा ना आवे ओंघाई
छवले अकसवा के बाटे मँहगाई।
अब तऽ हफ्तो ना ठेके पगार बलमा।।

ठिठुरल जड़वा बितावेलें लरिकवा
तनिको ना पसिजेला देखि के मलिकवा।
अब तऽ परे लगल मघवा के ठार बलमा।

छोटहन दिनवा के पतरी किरिनिया
लगलीं ना अबहीं मटरियो में छिमियाँ।
असों उखियो ना बाटे सोझार बलमा।।

टुटले सपनवा गढ़ावे के झुलनियाँ
कपरा पर अपना सवार भइल मुनिया।
अबहीं छोटकी ननदियों कुँआर बलमा।।

उगलें ना अबही ले भगिया के चनवाँ
जोहते जोहत बीतें दिनवा महिनवाँ।
होला कथरी पऽ सुतल भिनुसार बलमा।।

(चार)

नीक लागेला हमके हमार गउवाँ।
बाटे गीता रमायन कऽ सार गउवाँ।।

बीतलि हो जहवाँ अबोध लरिकइयाँ
घरवा अँगनवाँ में खींचलि बकइयाँ।
माई बाबू के रहे अँकवार गउवाँ।।

घाम सीत सहि सहि कठिन किसनवाँ
रखले बचाइ के बा देश के बिहनवाँ।
देबी अनपुर्ना के बा उपहार गउवाँ।।

मटिये जगावे जहाँ लोगवन भगिया,
सागे पाते बुति जाले पेटवा के अगिया।
बा महत्मा विदुर कऽ विचार गउवाँ।।

नगिचे न आवे देली रोगवा वियधिया
अँगना के तुलसी आ दुअरा के निबिया।
बइद धनवन्तरी के बा उपचार गउवाँ।।

अमरितवो से बढ़ि के दुधवा आ दहिया,
उखिया के रसवां कोल्हड़वा के महिया।
बाटे सरगे कऽ दूसर दुआर गउवां।।

अबहीं ले जहवाँ लगवले ना दगवा,
दमरी के सेनुरा आ रखिया के धगवा।
भइया बहिनी ने पसरल पिआर गउवाँ।।

मेल जोल जहवाँ के धरम ईमान बा
गुनई के गीता सोबराती के कुरान बा।
सीमा सलमा के सारी सलवार गउवाँ।।

(पाँच)

अबकी खोंतवा बनइहऽ विचार चिरई,
कतहीं साबुत न गँछियो के डार चिरई।

गाँवन में दुखवा विपतिया के ढेरिया
छलवा कपटवा में डबलि शहरिया
बदलल बस्तिन के बाटे बेवहार चिरई।।

रहिया में सगरे बिछावल बा जलवा,
फँसे बदे तुहरे गिरावल बा चरवा।
देखिहऽ टपके न मुँहवा से लार चिरई।

भइलें ना सच कवनो सुधर सपनवां
अबरे में सगरे अयब अवगुनवाँ।
बचि के उचरऽ तू अँगना दुआर चिरई।।

जगह जगह लूट मार चोरिया बजरिया
पँखिया पर तुहरे बा सभकर नजरिया।
इहवाँ तिनिको कऽ होला बेवपार चिरई।।

खेतिया ना बरिया न पुँजिया पसरवा
कवनो ना रोजी न बाटे रोजगरवा।
पलिहें कइसे कइसे कऽ पेट पलिवार चिरई।।

देश परदेश के बा अलगे कनूनवाँ
अलगे अलग बा जमीन असमनवाँ।
बद से बदतन बा सिमवो के पार चिरई।।

(छह)

सांचों हँसि हँसि के ना तुहसे बोलब कबों
माखन मिसिरी ना मुहवाँ में घोरब कबों।

वादा केतना भइल खइलीं केतना कसम,
अब तऽ हर बतिया हो गइलीं कोरे रसम।
नाता नाजुक ना केहुओ से जोरब कबो।

खेत खरिहान बखरी बगइचा घुमल,
याद आवे पोखरिया के केरवा फरल।
कतहीं सपनों में ना अब तऽ डोलब कबो।।

जेवने बदरा मचवलस तबाही इहाँ
दीहें धरती अकसवा गवाही उहाँ।
मोका मिलिहें तऽ सभके बटोरब कबों।।

जेवने नदिया किनरवाँ कररवा भइल
आजु ओहू के पनिया जहरवा भइल।
ओमें नेहिया के नइया ना बोरब कबों।।

बीतलि हर बतिया अब तऽ सपनवाँ भइल,
जेकरा के जनलीं आपन बेगनवाँ भइल।
अब बटोहिया के रहिया ना जोहब कबों।।

जेवने डरिया पर सावन में झुलुवा परल
पतवा ओहू कऽ पियरा के भुइयाँ गिरल।
अइसन बगियो के ना हो अगोरब कबों।।

(सात)

देशगान

जागऽ भारत के हो नवजवान बिहान परल मोसकिल में
फेरो केसरिया पहिरऽ परिधान, बिहान परल मोसकिल में।।

सिमवाँ पर दुशमनवाँ पर बाड़ऽ भारी
तोहरे से महकति बा सगरी फुलवारी
आपन जनि खोइहऽ कबों पहिचान।। बिहान परल .....

असवासल अँगने में जोहति महतारी
गँवे गँवे गढ़ुअइलीं बेसहल बेमारी।
मति नजुमियाँ से पूछऽ निदान।। बिहान परल .....

पंचइती बड़का करेंले मनमनियाँ
अगिया बुतवले कऽ खोलि के दुकनियाँ
डोलत बेवपरियन के बा ईमान।। बिहान परल .....

माई के माथ कऽ मउरवा बचइहऽ
छतिया के दुधवा कऽ कीमत चुकइहऽ।
रखिहऽ विनई पताका हऽ मान।। बिहान परल .....

बिलिया से विषधरवा फेरो उपराइल
जवना सनकिया कऽ सपना धोआइल।
मति बकसिहऽ मुदइया कऽ जान।। बिहान परल ... ●●

जागरन गीत

काहें भइल तू लाचार

हीरालाल 'हीरा'

झूठे तहरा से हमदरदी, झुठहीं सपना के भरमार।
जाँगर पुरुषारथ रहलो पर, काँहे भइलऽ तू लाचार।।
अन्न-ब्रह्म से जोगवेलऽ तू
सभका भीतर प्रान।
अपने अधपेटे सुति जालऽ
विधि के इहे विधान।
जँगरा के बल जूझे के बा, हर-कुदार बाटे हथियार।
पगरी ऊँच रहल बा तहरे
ए पगरी के राखऽ मान।
कबो पसीना व्यर्थ न जाला
निषिध चाकरी भीख निदान।
दान-भीखि के लात मारि के, तू माँगऽ आपन अधिकार।
मौसम आइल मजमा लागी-
जुटिहें सजे मदारी।
आपन-आपन कला देखइहें
भरमे के लाचारी।
अतने तहसे कहना बाटे, रहिहऽ इनहन से हुँसियार।
जागऽ अउर जगावऽ सभके
असली शंख बजावऽ।
जड़ता तूरि अबो से चेतऽ
धरम-धजा फहरावऽ।
फारऽ तू अन्हार के परदा, गूँजे फिर तहरे ललकार।

●●

❑ नई बस्ती, रामपुर उदयभान, बलिया

अस्सी-नब्बे का दशक के
कुछ चर्चित कहानी

खण्ड - एक

- परमधाम
- कुन्दनसिंह : केसरबाई
- भइँसि के दूध
- मछरी
- भैरवी क साज
- चिखुरा
- अभागिन

परमधाम

स्वामी विमलानंद सरस्वती

खेदू भाई! जिनगी क कवन ठेकान बा? ढेली तोहार पलिवार हउवनि बेटा आ भतीजा दूइ ना ह। केतना नेह–छोह से तोहार सेवा करत बाड़न। हाथ मइल ना गोड़ मइल। बइठल चिक्कन सुरस भोजन मिलत बा। ऊधो क लेना न माधो क देना, कल से राम–राम कहे के बा। तोहरा के दूसर का चाहीं? उनसे अनराज काहें रहत बाड़ऽ? पलिवार से विरोध ना राखे के?

'बुढ़वती आइलि। थाहि के डेग धरे के चाहीं। हमन का दरियाव का आरी क फेंड़ बानीं जा। आज गिरलीं भा काल्हि! पाकल आम का चूवे में कवन देर बा?'

'मीठ आ मोलायम बोलि के लोग आन केहू के आपन बना लेत बा। ढेली त खून ठहरलन। हमनीं का अमिरित के घरिया नइखीं पियले कि अमर रहबि जा। बेमतलब क काहें मथि कलंक क टीका लेत बाड़ऽ? मुवलो पर ऊहे मुँहे आगि दीहन; पिंडा–पानी आ काम किरिया करिहन।'

"तोहार कवनो कुसंच होखे त हमसे बतावऽ। हम तोहार उपाय करब। दस–पाँच दिन में बोवनी ओरियाले त चलल जाय कि बगसर गंगा–असनान होखे आ लीखि–पढ़ि के एकोर कइ द। आगे क खरखसा टूटो।"

राजनारायन राय क ई बतकहीं खेदू के बड़ा जबून लागल। उनका मन में पाप भरल रहे। केहू क समझावल तनिको लाद में ना धँसे। कुछ देर का बाद बइठकी उड़सलि आ सभ केहू आपन–आपन डहरि नापल।

खेदू राय तोसक तकिया लगवले पलंगरी पर बइठल गुड़गुड़ी पीयत रहलन। देहि में भुड़ीदार बन वाली मिरजई–कपार में कनटोप, आँखि में चसमा लगवले दोहरि आढ़ि के बइठल रहलन।

XXXX XXXX XXXX

कातिक क भोर, लोग बोवनी में बाझल रहे। ढेली दूइ घरी राति गइला टँड़वाँहीं ले बैल हँकले अइलन। ओसारी में हर–टांड़ि, हेंगा आ बीया क दउर धरवाइ के गरुवारी करे लगलन। अकसरुवा आदिमी सभ काम अपनहीं सम्हारे के रहे।

काम ले खाली होइ के बखरी में गइलन कि दू कवर भोजन करीं त ओइजा दूसरे तमासा लागल रहे। उनकर बूढ़ि महँतारी आ ढेली बो भउजी रोवत–बिलखत रहली जा।

"का रे माई! ई कवन तमासा लगवले बाडू स?" माई सुसुकत आ अँचरा से लोर पोंछत लोटा क पानी आगा धइलसि– "ए बचवा! खेदू क अनेति आ गारी फजिहति केतना सहीं जा। दूइ चारि दिन पर कवनो न कवनो अनखुन जोहि के झगरा ठानत आ बिरही बोलत बाड़न। इहे उनकर सखुनतकिया हो गइल बा। आजुवो

झनकि के ठहरि पर ले थरिया पटकि के उठि गइलनि ह। कहत बाड़न कि हमरा के बासी रसोई देत बाड़ी स। दालि में माँड़ मेरावल बा आ दूध धिकले नइखे। हमार हक हीसा लेइ के हवेखत बाड़न जा। हम खेत महपातर के दे देबि तवन सबुर बा, बाकिर तोहन लोग के पसर के चरे खातिर ना रहे देबि।"

ढेली बड़ा लेहाजी रहलन। खेदू राय क दस गो फूहर पातर सहि लेसु बाकी जबाब ना देसु। उनके बाप ले कम न जानसु। उनका खातिर सभ इंतिजाम रखले रहलन। खेदू राय का दुवार पर बइठल कटरावे–पागे के रहे। कबे–कबे भुखाली साहु का ठाकुरबारी पर बगसर क महंथ जी आवसु त कथा सुने भा दरसन करे जासु।

XXXX XXXX XXXX

आज क हालि सुनि के ढेली बड़ा दुखी भइलन। खाइल–पीयल का नीमन लागे? कइसहूँ दू चारि कवर घोंटि के चउका पर ले उठि गइलन। बराबर कुछ न कुछ बखेड़ा खड़ा भइल रहे। साँप क बीलि तहाँ पूत क सिरहान, ढेली खातिर कुफुत रहे बाकी करसु का?

राजनारायन राय का दलानि में रोज बइठकी होखे। गंगा राय, काशी राय, रघुनाथ मिसिर, सोहावन भगत चउकिदार, सभ बइठल खेदू आ ढेली क बाति बतियावत रहल। एतने में बीड़ी पीयत ढेली पहुँचि के राजनारायन का ओरिचना बइठलन।

'मजे में बइिठत काहें नइँखऽ?' राजनारायन राय का ई कहला पर ढेली का लोर आ गइलि आ ऊ आँखि पोछे लगलन। राजनारायन राय पूछे लगलन कि बाति का ह ढेली? आजुवो कुछ खटपट भइल रहल ह का?

गंगा राय मेंही सरदार रहलन। ढेली क चाची परशुराम का माई से उनकरा भोजभात रहे। गंगा राय के भउजाइ आ परशुराम का माई क नइहर एकही गाँव में रहल। एही कारन से भितरिया मेहररुवी मनसउदा क सुनगुन गंगा राय कुछ सुनले रहलन। परशुराम क महँतारी चरित्तरबन का हरिकिशुन दास क चेलिनि रहली।

गंगा राय कहलन कि तोहन लोग बेकार खेदू क पोछि सुहुरावत बाड़ऽ। खेदू पोंछी पानी ना ठेके दीहन। हरिकिशुन दास उनकर कान भरले बाड़न। परशुराम क माई बुढ़िया कुटनी क काम करत बाड़ी। खेदू सोनहुली तसबीरि देखि रहल बाड़न। उनकर मन बत्तीस घोड़ा का बग्गी पर असवार बा। तोहन लोग का कहला समुझवला में कुछ नइखे। ढेली सबुर करसु। इनकर बाल बच्चा अपना कमाई से ना जीहँन–खइहँन त पत्तल चटले कै दिन काम चली?

XXXX XXXX XXXX

"खेदू! धन–उदलति लेइ के न केहू आयल बा न लेइ के जाई। मरे का बेर भाई दयाद करधनि तक तोरि लिहन! धरमें सँगे जाई। दान धरम करे के चाहीं। ऊहे न आखिर में आँटी। अब तोहरा ठाकुर जी का शरन में रहि के दूइ कवर परसाद पावे आ गंगा नहाये के चाहीं। आगे क डगरि बनावल न ठीक बा। एहिजा साधु महातमन क सतसंग बा। भगवान क भजन कइके परमपद पावे खातिर जतन करऽ। दखिनहा भूचड़न का संगे का कुकुरचोंथ कइले बाड़ऽ? उसरा टाँड़ पर जीव मति द। मरि जइबऽ तऽ गोड़ घिसियाइ के बीगि दीहनस। बबूर–परास का बन में फुँकइबऽ, गंगा से भेंट ना होई।"

"ददुरा का दुबाइन क नइँख देखत कइसन कंचन चरति बाड़ी। इनकरो केहू नइखे। दस गिहा बेटी दमाद के दिहली आ पनरह बिगहा ठाकुर जी का नावँ से राजभोग खातिर लिखाइल ह। धरती ले सोना दान कइला क बेसी फल ना होखे। एह जनम में जे धरती दान करी ऊ अगिला जनम में राजा होई।" खेदू पगरी उतारि के महंथ जी का चरन पर धइ दिहलन– "महराज! रउरा त ठाकुर जी का राग–भोग–सेवा खातिर कहत बानीं। ई हमार उदय भागि कि हमार धन भगवान का काम में आवे। हमार मन अब महिला ले उचटि गइल बा। ओइजा रहला में इज्जति नइखे। हम त मन में इहे ठानि के चलल बानीं कि कतहीं कवनों मंदिर ठाकुर बारी में लीखि के ओनिये मरि–हरि जाइब। रउरा नाहीं राखब त ई धरती महपातर का गरे मढ़इहन बाकी ढेली आ उनका बाल बच्चन के हर घुमावे खातिर ना रहे देब। ढेली क हमरा सोरि कबारि के दम लेवे के बा। ढेली के भीखि ना मंगववलीं त जनेव गदहा का गर में बान्हि देब।"

"ठाकुरजी का मरजी आ साधु महातमा क दया। हमरो मन बा कि गंगा नहाईं, ठाकुर जी क सेवा करीं आ तीरथ –परसाद पाईं। जगहि जमीनि

ठाकुरे जी न देले बाड़न। सभ संपति उनहीं क ह त देबि केकरा के? इहे चाहत बानीं कि राजनारायण आ गंगा न जाने पावसु। राजनारायण जवार क चउधुर आ हुँड़हा ठहरलन। जवान में उनकर दाब–हाँक बा। ऊहे आजकाल अवँती का बाबू साहेब क तसिलदारो बाड़न। जानि जइहँन त छत्तीस गो बखेड़ा रचिहन।"

जवन रोगिया चाहे बयदा उहे बतावे। महंथ जी मने मन खुश भइलन। दावपेंच जानल आ मामिला मोकदमा लड़ल इहे त उनकर भजन रहे।

"घबड़ा मति खेदू! हम अइसन उपाय करब कि केहू पता ना पाई। कचहरी जाये क कवनो जरुरते ना परी। हम उड़ती चिदई के हरदी लगाईला। हमके केहू का सिखाई?"

महंथ जी का ठाकुरबारी ले पंजरे रजिहटार साहेब क डेरा रहे। साँझि–बिहान रोजे भेंट होखे। अवसर अइला पर महंथजी उनके पंजीरा–परसाद भेजसु। ओही राति में सभ सलाह आ मनसउदा ठीक हो गइल। होत बिहान चतुरभुज बरम्हचारी साइकिल दउराइ के देवानलाल किहें ले टीकठ फारम ले अइलन। खेदू राय का बेमारी क दरखास देइ के महंथ जी रजिहटार साहब के मठिये में आवे खातिर फीस जमा कर दिहलन। पूरा माल मिलल रहे। कवनो जाँगर के कमाई खरच करे के रहे कि असकति लागित! चान्नी क मारि मारल गइल। हाकिम अमला पियादा चपरासी सभ रसगुल्ला छीलल आ दूध से कुल्ला कइल।

बाप दादा क कमाइल धरती। केतने पुस्त क जोगावल आ कोड़ल–कमाइल, खेदू क आज संग छोड़ि के चलि दिहली! खेदू अँगुठा बोरि के अपने आपन हाथ काटि लिहलन। ठीक कहल बा कि ई, पिरथू मान्धाता, बली, आ रावन क साथ ना धइली त दूसरा क कब होइहन?

XXXX XXXX XXXX

देहाति–जवार क लोग जमदूतिया नहाये मथुरा जात रहलन। महँथजी के मोका लागि गइल। खेदू राय क मन टुकटुकात देखि के उनका के जवार का जमाति का संगे मथुरा भेज दिहलन। चरितर वन क कुछ अचारी बाबा लोग भी जात रहलन। खेदू खातिर सोना में सोहागा परि गइल।

पाँच–सात दिन में मथुरा–वृन्दावन, नंद गाँव, बरसाने, गोबरधन सभ परिकरमा कइ के खेदू साधुन का जमाति में ओह लोग क खढ़िया ढोवत चित्रकूट चलि गइलन। एह किसिम से काशी होत बाइसवाँ दिने घूमि–घामि के ठाकुरबाड़ी पर आ गइलन।

महीना बीति गइल बाकी केहू पता ना पावल। महंथजी कचहरी का अमलन के मिलवले रहलन। गाँव–जवार जानत रहे कि खेदू राय पड़ियारी का पंडित संगे मथुरा जी गइल बाड़न।

XXXX XXXX XXXX

कले–कले थोरहीं दिन में भेद खुले लागल। लोग खेदू राय का करनी क पता पावल। जवार के जेही सुनल गारी दिहल। ढेली का कवनो टिसुना ना रहे, बाकी लोगन का कहला–सुनला से जवार क चारि गो चउधुरी बटोरलन। मुँखराव, पड़ियारी, चँड़श आ नागपुर के पंच लोग गंगा राय का दुवारे अइलन।

बोलवला पर पहिले त खेदू राय बड़ा कतरी कटवलन बाकी सोहावन भगत का समझवला पर अइलन।

मुखरांव के कतवारू राय पूछलन– "खेदू दादा! ई का कइलऽ ह? ढेली क गरदनि ना कटल, तोहरो संगही कटा गइलि। अइसन ना चाहत रहल हऽ।" नागपुर के राजनेतिक दादा बड़ा दुखी रहलन। रहि–रहि के उनका आँखि से लोर बहे।

उहो कहे लगलन कि– "खेदू भाई! तोहार बाप हमार संगी रहलन। तोहरा के देखि के मोह होत बा। तूँ वंश के टाँगी हो गइल। रेंड़ का जरी धमोई होई के जमलऽ। अबही तोहरा हरियरी लउकति बा, कुछे दिन का बाद जब अँचारिन क टोकना मले आ खाँटी काटे परी त मालुम होई।" राजनेति राय, राजनारायन राय क संगी रहलन। राजनारायन राय उनकरे गाँव क कथा उभारि के सभ पंचन के सुनावे लगलन। "राजनेति भाई! अचारिन क हालि तोहारा से छिपलि बा? तपोबन ले ओकर नाँव चरित्तर बन हो गइल बा। तीसो दिन ओइजा रंगभंग के चरित्तर हो गइल बा। शंख–चक्र से दागि के सांढ़ बनावे में ओह लोग का देरी ना लागे। खेत–बारी लिखवावे के रही तबले खूब आदर रही, बाद में गारी–फजिहत आ गोइँठा करे के परेला।"

चंड़ेश के बदिरी राय कहलन कि "हमहूँ सुनलीं ह, आजकाल ओइजा क बड़ा सिकाइति बा।"

बसगित भगत कहलन कि "बसवली हमार समधियान ह। परसों ओइजा ले अइलीं। मुनादासी

बसवली क पड़ाइन रहली ह। दूइ चार बरिस ले साधुनि हो गइल रहली ह। बरिस दिन ले माधो दास का मठिया का हाता में कोठारी बनाइ के रहत रहली ह। माधा कमकर क जाति। पहिले त पड़ाइन के मलकिन बना के चाभी दिहलन। कुछ दिन में जब रुपया आ गहना गुरिया कुल्हि मूँसि लिहलन आ मुनादासी खूँख हो गइली त लतियावे लगलन। जब मुना कहाँ जासु घर से ऊपरवार फानि के गइले रहली। ओइजा ऊ हालि।"

एतने ना, "जब–जब आगि खढ़ पंजरा रही त उधियाइ के जरबे करी। मुनामाधो का दिन में झगड़ा होखे या राति में मेल हो जाय। जब मुनादासी क गोड़ भारी हो गइल त दावा–दरपन होखे लागल। बाकी आखिर में मुना दासी असपताल में जाके परमपद पवली।"

XXXX XXXX XXXX

खेदू मूड़ी नीचे कइले सभकर सुनत रहलन। लोग क कहल–सुनल उनका बरछी नियर लागे। अंत में सोहावन चउकिदार जरला पर नून छिरिक दिहलन। सोहावन बड़ा फटकरलन– "चउधुरी, राउर मति बिगरि गइलि बा। हमन क बाप–दादा सात पुहुति ले एही में गलल–पचल। का सभई नरके गइल बा? गिरहस्त ले बढ़ि के साधु के बा? गोहूँ–बासमती, मेवा, मलाई उपराजि के जे राजा रंक, साधु–फकीर, पशु–पंछी सभके जियावत–खियावत बा ओके का मानल जाय। साधु लोग जवना पत्तल में खात बा अब ओही में छेद करत बा। ठीके कहाउति कहल जाला– 'बाभन, कुत्ता, हाथी, तीनों जाति क घाती।'"

अंत में उखड़ा उखड़ी हो गइलि। खेदू राय कहलन कि हमरा भाई भतीजा से कवनो काम नइखे। केहू हमार पिंडा पानी मति करी। जमीनि हमार हम भाट के दे देबि दूसर क का लागे?

हरिकिशुनदास रंगरसिया महंथ रहलन। नेवार का पलंग पर हाथ ऊँच गद्दा बिछल रहे। तकिया–मसलंद लगावल रहे। बिजली बत्ती आ पंखा, मसहरी सभ इलबास जुटल रहल। पूवा–राबड़ी, दूध–मलाई आ सेव–अंगूर बिछिलहरि भइले रहे। चानी कटति रहे, दिनरात पाँचों अंगुड़ घीवे में बूड़ल जानीं। छतीसो राग–रागिनी क दरबार होखे आ तबला–हरमुनिया, मिरदंग–सितार क बजारि सजल रहे।

मठिया में साधु–अभागत आवसु त ओह लोग के करंगी–करहनी के भात आ खेसारी के दालि मिले। ई कवनो नया रेवाज ना रहे। अँचारी लोग किहें बहरिया–भितरिया, नड़गल–तिगल केतना भेद बा के थाह पावे?

XXXX XXXX XXXX

इहे कबीर क– "लड़का बूड़े सीलि उतिराय' ह। किसान मजूर गली–गली मरसु आ बाबा लोग इनरासन में बइठल मउज करे। धरम का नावें पर आज काल अइसन जुलुम सगरे होत बा। बाकी अनेति ढेर दिन ना चले। महंथ जी क अँजोरिया मधिमाये लागलि। उनका दरबार में पूड़ी पराठा दूनों क सवाद लियाय। कबे पूड़ी–भोग लगावसु त कबे मनफेर फराठा। पूरनबाँसी का चनरमा नियर महंथ जी छीले लगलन। फूल–बसिया पूड़ी आ रमेश फराठा रहलन।"

ठाकुरबाड़ी क धन ढोइ के फुलवसिया का दुमहला कोठा बनि गइल। रेडियो, बिजुली–बत्ती, पंखा सभ सिंगार जुटे में देरी कवन रहे? मालपूवा–मलाई आ सेव–अँगूर ओकरा घर में गाँजल रहे। कले–कले महंथ जी बदनाम हो गइलन। पाप क भंडा फूटे लागल। मन क लगामि ढील भइला पर दसो भुटिया घोड़ा बासना का सड़कि पर सरपट दउरि के महंथ जी का रथ के गड़हा में गिराइ दिहलन।

पंचकोस क मेला रहे। रामचउतरा का मयदान में महंथ लोग क खेमा गड़ल रहे। असावँ, पयकवली, घरवास डीह, सगरे क महंथ जुटल रहलन। कथा, सतसंग आ गाना बजाना भइल। राति का बेरा सभ महंथन का आपस क बटोरि रहे। असावँ क महंथ जी बड़कवा मानल जासु। उनकर सुभाव बड़ा सीधा आ सत्तजुगी रहे। महंथ नारायनाचारी हरिकिशुन दास के बोलाइ के समझवलन कि "साधुन क नाकि मति काटीं। पियास लागल त मोका से पानी पी लिहल जाला, गरदनि में घइली के बान्हि के लटकवले ना फिरल जाय। रउरा फुलवसिया के असथान से दूर राखीं।"

XXXX XXXX XXXX

थोरहीं दिन का बाद महंथ जी के अठइसी (थयसिस) रोग धइ लिहलसि। दवाई बीरो होखे

लागल? डाकदर–वैद में रुपया बहुत फुँकाइल बाकी बेमारी घटलि ना, बढ़ते गइल। देहि सूखि के पीयर हो गइलि। मुँह ले कबे–कबे खून आवे लागल। कुछ दिन में उहाँ का एकदम खाटि पर हो गइलीं।

मठिया का कारबार हरदेवाचारी देखे लगलन। महंथ जी मने मन पछतासु आ रोवसु। आखिर में बेमारी बिगड़े लागलि त साधु लोग सेवा से भागे लगलन।

एहिजा का केकरा से नाता बा। सभ झुठे लपिटाता। महंथ जी ठाकुर बारी क इंतिजाम बान्हि के हरदेवाचारी के लीखि दिहलन।

खेदू राय गुरु महराज के दुख देखि के कोना में बइठल रोवसु। अब ऊ खेदू राय से खेदन दास बनि चुकल रहलन। कातिक महीना अछयनउमी मगर का दिने दस बजे महंथ जी खेदनदास के छोड़ि के परमपद पवलन। महंथजी का परमपद भइला क खबरि सवँसे चरित्तर बन में बिजुली नियर फइलि गइलि।

सभ साधु महंथ जुटलन। विमान बने आ सजाये लागल। फोटो खींचे वाला बोलावल गइल। चंदन का लकड़ी क चिता बोझे के तइयारी होखे लागलि।

खेदू राय अब गंगा नहासु आ ठकुरबारी क काम देखसु। गाइ चरावल, गोबर–गोंइठा कइल, बैलन के सानी–पानी कइल–इहे उनकर रोज क पूजा रहे। दस बजे ले सभ धंधा से खाली होखसु त नहाइ के लिलार पर फटाका लगावसु। एही सनदि के देखवला पर त परमपद क फाटक खुले के आस रहे। पासा–सीरी आ माला–अयनक क पसारी वाली झोरी जब बान्हते रहसु तबले अधिकारी पुजारी लोग डाँक–जुरह लगावे–"खेदनदास! चलऽ चाउर दालि अमनियां करे आ साग सुधारे के हरज होत बा।"

"अइलीं सामीजी– तनी भगवान क नावँ लेत बानीं।" साधु लोग खूदे राय के बइठे ना दिहल चाहे। अधिकारी उनका पर बिगड़ते रहसु। उनकर कहनाम रहे कि कारज कइके भगवान क परसाद पावल जाला।

खोभसन सहत आ काम करत–करत खेदू दुबराइ के अँठई हो गइल रहलन। अब बहुता त बेमारे रहसु। बाकी बेमारो रहला पर सारि सहोथहीं के परे।

उनका अपना करनी पर पछतावा होखे। मन में झंखसु कि बुढ़वा महंथ जी हमके बाढ़ में डालि के चलि गइलन। मन मिरिगा नियर टिशुना में परल, आगे ना जाने कइसे निसतार होई?

ढेली क सोरि कबारे चलल रहलन, अब उनहीं क कबरति रहे। ढेली कबहीं उनकर जबाब ना देले रहलन, एहिजा उढ़रन क फजिहत भा विरहीं बानी रोजे सहे के परे। अगल–बगल का मठियन आ मलाहन का घरे बइठि के रोवसु–कलपसु। अब के उनकर बयान आ अरजीदावा सुने? भगवान का कचहरी में उनकर मामिला फरियाये के रहे! पंच–परमेसर के ठोकर मारि के उठि गइला क फल पावत रहलन।

हरदेवाचारी नया महंथ रहलन। घर क एकदम कंक–बाँकुड़ा। एहिजे महंथ जी किहें खासु–पियसु आ संसकीरित पढ़सु। मधिमा पढ़ि के अछर कट्टू हो गइल रहलन। पुरुब जनम के करम कमाई कि महंथी हाथ लागि गइल। खखाइल रहलन, हबके क मोंका पा गइलन। महुँवन का मरला डोढ़ के टीका दिहल रहे। डेढ़ सइ बिगहा धान–चइती क नभ सुहेल खेत। पयदा पूरा होखे बाकी ओतना से ठाकुरबाड़ी क खरचे ना चले। बखारि आ खजाना का धन में मूँस लागि गइल त ओटे कइसे?

बुढ़वा महंथ का मुवला पर बसमतिया का घर क मानि–बीयरि बंद भइल त नयका महंथ जी का गाँव क सूमि खोदि के तइयार हो गइलि।

दरार फाटल धान का करइल खेत में पानी क थाह ना लागे। रोहुँड़ा पक्का पिटाये लागल आ रेहन कबाला किनाये लागल। भाईन क बियाह ना होत रहे तहाँ तिलकहरू दुवार खांचे लगलन।

असाढ़ चढ़ते खेदू राय बेमार परलन। पहिले त मियादी बोखार धइलसि। पाछे ले सिरिहिनी हो गइलि। दावा–दरपन क कवनो इंतिजाम ना रहे। मरवाड़ी–असपताल आ आउर वैद का खैराती दवाखाना से अपने टहरि–घूमि के दवाई ले आवसु। पाछे चलि के पवरुख थाकि गइल त के ले आवे? नेम से दवाई ना भइला से बेमारी बेकाबू होखे लागलि। चतुरभुज दास ब्रह्मचारी कबे रहसु त खेदू क कुछ खबरि लेसु। समय से सुवधान पानी दुलम हो गइल। दूसर सेवा करे का पँजरा के जाला?

सावन चढ़ते हरदेवाचारी रोपनी करावे ददुरा आ महिला चलि दिहलन, ओनहीं उनके पूरा महीना बीति गइल। पचासी बिगहा जमीनि त खेदू आ परशुराम क माई मीलि के महिले में दिहले रहली। सावन चढ़ते मेघ उमड़ल से बीसन दिन बरिसते रहे। खूदे के रहे खातिर बुढ़वा महंथ क अठइसी वाली कोठरी मिललि रहे। बहुत दिन ले बेमरम्मत रहला से बरखा भइला पर चूवे।

ओही कोठरी में एगो झिलिंगा बँसहट पर

फटहा टाट क टूक बिछाइ के खेदू परल रहसु। दस्त क बेमारी बिगड़लि त शरीर बेकाबू हो गइल। घर का कोना में फराकित होखसु आ बिहान भइला अपनहीं उठा के बीगसु।

हरदेवाचारी का कुटी में महिला का गंगाराय आ सतनारायन क लइका लोग रहि के पढ़े। भादो वदी चउथि सनीचर का दिने साँझि का बेरा जब लइका पढ़ि के अइलन त खेदू राय ओह लोग के बोलवलन।

कोठरी में बरखा क पानी चूइ के डबहा लागल रहे। बदुरी आ केशो दादा क दुरगति देखि के रोवे लगलन। खेदू दादा क आँखि भी छलछला के बहि चललि।

दादा का झिलिंग बँसहट का आराम कुरसी पर ले उठे क सक ना रहल। टाट, बँसहट खटिया आ पानी मेले मइला चफनल–उतिराइल रहे। बदुरी–केशो मीलि के कोठरी साफ कइलन आ दादा क लूगा–कपड़ा बदलवाइ के फिंचलन जा। मेंटा में पानी धइ के ऊ लोग अपना डेरा में चलि गइलन।

पहर रात गइला बरखा नधियाइल आ गरजे–तड़पे लागल। कोठरी में चिराग तक न रहल। भादो क अन्हरिया अइसनि कि लात तर क ना सूझे। खेदू दादा का आगा त अइसहीं अन्हार छवले रहल। जेनिये ताकसु अन्हारे अन्हार! सभ ओरि क डहरि त बंद हो चूकलि रहली स। ठाकुर जी का नाँव पर खेदू क कान कटाइल आ उनका के दागि के साँढ़ बनावल गइल। अब ठाकुरो जी आँखि मूंदि देले रहलन।

महंथ–पुजारी का हलुवा पूड़ी उड़त रहे आ खेदू झिलिंगा पर झंखत परमपद क डहरि ताकसु!

राम–जानकी के मूरति धरम क ई तसवीरि देखि के पत्थल हो चुकलि रहे।

बेपरमान जल बरिसल। खेदू भींजत–किंकियात रहलन। खटिया तर बयतरनी बहति रहलि। करीब दूइ बजे क बेरा भइल होई। पंजरे पीपर का पेड़ पर उरुवा बोलत रहे। एतने में राति ढरकल जानि के सियारिनि फेंकरलि!

ओने आकाश में जोर से बिजुली चमकलि आ तड़तड़ाइलि। एही घरी ना जाने, नव में से कवना दुवारि से खेदूओ का देहि क बिजुली निकलि के आकास का बिजुली में समा गइलि। हिरामन सुगना का उड़ते पिंजड़ा उदास परि गइल।

होत बिहान सभ मठियन में बोलावा गइल कि खेदनदास क 'परमपद' हो गइल बा। घरी दूघरी में सभ साधु भयवद्दी में बटुरइलन। बिमान सजाये लागल। महंथ जी भी दक्खिन ले आ गइल रहलन।

विमान में चारो ओर लाल–पीयर कागज सटाइल आ पूरा सिंगार भइल। खेदनदास के नहवाइ के एक सइ एगारह क लमहर फटाका लगा दियाइल। गर में फूल के बीसन गजला आ तुलसी क माला गाँजि दियाइल। फोटो खींचे वाला पहिलहीं ले बोलावल रहे। महंथ जी खेदनदास का परमपद क तसवीरि खिंचवा लिहलन कि मोका पर काम करी। ●●

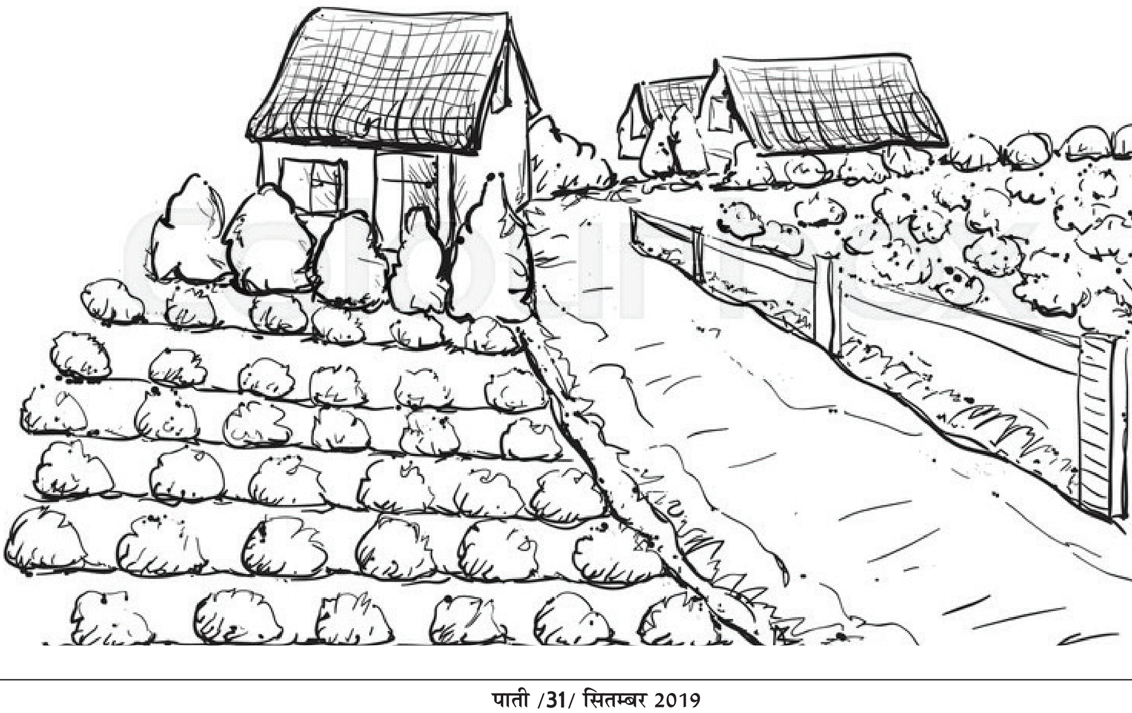

कुन्दन सिंह : केसरबाई

आचार्य शिवपूजन सहाय

दूनों के उठती जवानी रहे। ओह जवानी पर अइसन चिक्कन पानी रहे कि देंखनिहार के आँखि बिछिलात चले। गाँव के लोग कहे कि बरम्हा का दुआरे जब सुघराई बँटात रहे तब सबसे पहिले ईहे दूनों बेकती पहुँचले। सचमुच दूनों आप–आपके सुग्घर। बिआह का बेर माँड़ों में देखनिहार का धरनिहार लागल रहे।

घर–परिवार में केहू ना रहे। दुइए प्रानी से आँगन घर गहगहाइल बुझाइ। जब एगो बनूक छतियावे त दोसर ओकर तमतमाइल चेहरा निहारि–निहारि के मुसुकाए आ भहूँ फरफरावे लागे। एगो जब बँसुरी बजावे बइठे त दोसर चिटुकी बजाइ–बजाइ के गुनगुनाए लागे। एगो जब कसरत करे लागे त दोसर दाँते ओठ चाँपि के हुँकारी देत चले। एगो जब खाये बइठे त दोसर बेनिया डोलाइ के सवाद पूछे।

एक दिन आसिन के पूनो का अँजोरिया में अपने अँगना पटिहाटि खटिया पर सुजनी डसाइ के दूनो बतरस के आनन्द लेत रहले कि एही बीच में एगो कहलस हम तोहरा के बहुत पेयार करीला। ई सुनि के दोसरकी बोललि, हमहूँ तोहरा पेयार के दुलार करीला।

"ओह दुलार के हम सिंगार करीला। जब–जब हम तोहरा दुलार के सिंगरले बानी, तोहरा जरूर इयाद होई। माघ के रिमझिम मेघरिया में, फागुन के फगुनहट से मस्ताइल रंगझरिया में, चइत बइसाख के खुब्बे फुलाइल फुलवरिया में, जेठ के करकराइल दुपहरिया में, आसाढ़–सावन के उमड़लि बदरिया में, भादो के अधिरतिया अन्हरिया में, कुआर–कातिक के टहाटह अँजोरिया में, अगहन–पूस के कँपकँपात सिसकरिया में– जब–जब तूँ हमरा प्यार के दुलार कइलू, हम वोह दुलार के अइसन सिंगार कइलीं कि तोहार आँखि मँड़राए लागलि। बाटे इयाद?"

अतना सुनिके ऊहो ठुनुकि–ठुनुकि के जम्हाई लेबे लागलि। अइसन रंग ढंग देखि के ई कहलसि कि हमनी का भगवान के दीहल सब सुख भोगत बानी, बाकी अपना देस के कौना सेवा अबहीं ले ना सँपरल। छत्री का कोखी जनम लेके हमनी का अपना जाति के कौनो गुन दुनियाँ के ना देखवलीं। हमरा इसकूल के साथी सब कहेलनि कि जब से तोहरा बिआह भइल तब से तूँ अइसन मउग हो गइल जे दिन–राति घरे में घुसल रहेलऽ।

"एह खातिर हम का करीं? सरकारे आपन करनी निहारीं। पहिले रउरे उसुकाईले, पाछे लागीले देस भक्ति के गीति गाइके अपना साथियन के ओरहन सुनावे। रावा जवन काम करबि तवना में हमरा साथ देबही के परी। रावा झण्डा

लेके निकसीं त देखीं जे हमहूँ अपने का संगे निकासत बानी कि ना। हमहूँ छत्री के बेटी हईं। हमरा नइहर के सखी के मरद अपना संगे हमरा सखिओ के जेहलि में ले गइल बाड़े। रउरो हमरा के जहाँ चाहीं तहाँ ले चलीं। रावां साथे हम आगिओ में कूदबि त तनिको आँच ना लागी। रउरे संगे तरुआरिओ के धार पर हँसते–हँसते चलि सकीला। बाकी रउरा बिना हम कतहीं ना जाइ सकीं। पहिले सरकारे अपना के सुधारीं, हम त पिछलगुई हईं। मरद के परछाँहीं मेहरारू हवे। मेहरिया के पाछा–पाछा मरदा रसियाइल डोरियाइल फिरी त कवन अभागिन होई जे ओकरा के लुलुआवत रही?"

"तोहार बात हम काटत नइखीं, बाकी सभ दोस हमरे नइखे"।

"अच्छा त बिहान होखे द, हमहीं पहिले तिरंगा झंडा ले के निकसबि।"

"तब त हमर छाती सिकन्दरी गज से डेढ़ गज के हो जाई। बात नइखीं बनावत।"

"तोहरा बात बनावे से अधिका बात चिकनावे आवेला।"

"अच्छा त काल्हु जब सरकारी चरन चउकठ लाँघीं त देखल जाई हमार उमंग–तरंग।"

सन उनइस सौ बेयालिस ईसवी में भोजपुरियो इलाका अइसन अगियाइल रहे कि जेने देखीं तेने उतपाते लउके। कहीं सड़क कटात रहे, कहीं टेसन आ मालगोदाम लुटात रहे, कहीं थाना–डाकखाना फुँकात रहे, कहीं भाला–बरछा–फरसा मँजात रहे, कहीं मल्लू अइसन मुँहवाला टामी लोग के लाटा कुटात रहे, कहीं रेल के लाइन उखड़ात रहे, कहीं कौनो पुलिस–दरोगा ओहारल डोला में लुका के परात रहे, कहीं मकई का खेत में लड़ाई के मोरचा बन्हात रहे, जहाँ सूई न समात रहे तहाँ हेंगा समवावल जात रहे, सगरे अन्हाधुन्हिए बुझात रहे।

कुन्दन–केसर के देखा देखी गाँवों के लोग कमर कसले रहसु। सभे ईहे बिनवत–मनावत रहे कि गोरन्हि के राज उलटि जाउ। गोरा अफसर लोग जेने–तेने बिललात फिरत रहसु। दूनों के साहस आ उतसाह त काम करते रहे, दूनों के रूप के जादू सबसे बेसी मोहिनी डाले। जेने दूनों के दल चले तेने हंगामा मचि जाइ। दूनों बेकत के बोली सुनला से लोगन के मन ना अघात रहे। जनता पर रूप आ कंठ के टोला अइसन चलल कि अँगरेजी सरकार के माथ टनके लागल। दूनों के नाम वारण्ट कटल। जनता दूनों के पलक–पुतरी अइसन रच्छा करे लागलि। जब थाना–पुलिस के गोटी ना लहलि त फउजी गोरन्हि के तइनाती भइल। तबो गोरा लोग के छक्का छूटि गइल, बाकि दूनों के टोह ना मिलल।

जवना दिन दूनों अपना घर के असबाब एने–ओने हटावे खातिर गाँवे पहुँचले तवने दिन पीठियाठोक गोरो पहुँचले स। दूनों अपना घर के खलिहाइ के भीतर बतियावत, छतियावत रहले सनि, तबले गोरा धमकि अइले स, हल्ला सुनि के दूनों के कान खड़ा हो गइल। कुन्दन कच्छा कसि के बनूक में टोंटा भरे लागल, केसर झपट के मियान से तरूआरि खींचि के कमर में आँचर बान्हि लेलसि। दूनों हूह करत धड़फड़ बाहर निकलले त केवार खुलते गोरा अचकचाइ गइले स। कुन्दन तीनि जाना के ठावें पटरू कइ देलस आ केसरो दुइ जाना के माथ काटि के दुरुगा–भवानी अइसन छरके लागलि। गोरा लोग के जबले खुले–खुले तबले दूनों के मार–काट से केहू के हाथ कटा के गिरि परल आ केहू के कपार फाटि गइल आ केहू छाती में देद ले के गिरल कँहरे लागल। अतना छत्रियाँव देखवला का बाद दूनों खूनी बहादुर खेत रहले। गोली लगला पर केसर घुमरी खात कुन्दन का देह पर जा गिरलि। अतने में गाँव जवार के लोगनि के गोहार, जुटलि, बाकि गोरा आपन पाँचों लास लेके पराइ गइलेस।

कुन्दन–केसर के लोथ उठाइ के लोग गंगाजल से नहवावल, चन्दन चढ़ावल, फूलमाला से सजावल, अँजुरी के अँजुरी फूल बरिसावल, अगरबत्ती–कपूर के आरती देखावल, दूनों के जय जयकार से आकास गुंजावल, गाँवे–गाँव जलूस घुमाइ के दूनों साहसी सहीदन के पूजा करावल आ घरे–घरे देवी लोग लोर ढारि–ढारि अर्घ चढ़ावल। चारू ओर पंचमुखे ईहे सुनाइ जे अइसन मरन भगवान बिरले के देले।

●●

भँइसि के दूध

डॉ0 मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा)

सात भँइसि के सात चभक्का, सोरह सेर घीव खाँउ रे।
कहाँ बाड़े तोर बाघ मामा, एक पकड़ लड़ि जाँउ रे।।

भँइसि का दूध में ऊ काबू बा कि जेवन पाड़ा खाली बैलन का हुरपेटि दिहला पर खून मूते लागेलन ऊहो बाघ से लड़े के समाती रखत बाड़ेन। ईहे सोचि के दूबर करज–गुलाम काढ़ि के भँइसि कीने के ठानि लिहलन। मेहरारू हाले के मुअलि रहे। दूबर का लरिका पोसे के रहे। लमहर चाकर पलिवार रहे। सोचलन कि घीव बेचाइ जाइल करी। माठा पानी से लरिकवा मोटंजो मजे में खा लिहल करिहन। गोरस–पताई से कुल्हि बेकतिन के गुजर हो जाई। लरिका के नाँव भीम एह खातिर धइलन कि का जाने नाँवों के असर परत होखे। उनुकर माई बाबू उनुकर नाँव 'दूबर' धर दिहलन तवन जिनिगी भर दूबर। केतनों धूरि लगवलन उधरेंगवाँ ना भइलन। दूबर के कोसिस त ईहे रहे कि भीम के महतारी के मूअल ना बुझाउ। घीव–दूध के अलमगंज रहो। भीम का जेवने मन करे तेवने खात रहसु आ देहिं बनावसु। भँइसि ठीक–ठाक भइल सवा तीन सौ में। तोड़ा के रुपया दूबर सहेजलन त कुल्ही आठ बीस आ पाँच गो भइल। बुटुखुरी राय से जोड़ववलन त पैंतीस, कम दू सौ भइल। अबहीं आठ बीस अउरी रुपिया रहित तब जाके त मामिला फरियाइत।

अबकी दूबर सोचि लेले रहलन कि असों गूर बेंचि के सेठ फटकचन्द के लहना–तगादा साफ कइ देइबि। करज गुलाम आदिमी इज्जते खातिर खाला। एगो त सूदि देत–देत नाकि में पानी हो गइल बाटे। उनुकरा रुपया के सूदि हलुमान जी का पोंछि नीयर बढ़ते जात बा। हर साल हिसाब साफ कइल जाला बाकिर साल के आखिर में जब हिसाब कइल जाला त फेनु जस के तस। करजा देबे खातिर दूबर दसो नोह जोरि के तेयार रहेलन बाकिर डहरी–घाटे जबे सेठ फटकचन्द से भेंट हो जाई माहुर नीयर बोले लागेलन। हीत–नात केहू दुआर पर आइल रही, उनुकर तगदिहा चोंहपि जाई आ लागी माहुर ढकचे। बेचारू दूबर चिरइता के घोंट पीके रहि जालन। करबे का करसु। अबर के खींस खोंटि बरोबर।

दूबर अपना समाती मोताबिक बराबर साहु से हाजिर रहेलन। तर–तिवहार के बराबर दही चोंहपावेलन। जब से खेत में गदरा हो जाई गदरा जरूर सेठ का घरे देबे जइहन। ई दूबर के धरम हो जाला। दूबर कहबो करेलन–

गुरु से कपट साहु से चोरी।
कि हो निरधन कि हो कोढ़ी।।

एतना कइलो पर दूबर के साहु उनुका के सोझ मुँह से ना बोलसु। एही से दूबर मन में ठानि ले ले रहलन कि अब आगे करजा ना लेइबि। जेवन करजा हो गइल बाटे ओही के केहू तरे साग–सातू खाइ के साफ करबि। बाकिर अचके

में मेहरारू मरि गइलि। कामो–किरिया ना करितन त गाँव–घर गारी देइत। नाहियों नाहीं करत में दस गो भाई बाँभन खियवहीं के परल। देखते–देखत नगद रुपया लागि गइल। आजु काल्हि बजार में गइला पर नूं आँखि के पट्टर खुलि जात बा। खाली कइया नीयर रुपये नू लउके के बा केवनों सउदा थोरे लउके के बा।

एही कुल्हि में दूबर बूड़त–उतरात रहलन कि मन में आइल कि टूअर भीम के जिआवे के बाटे। बिना गोरस–पताई के काम ना चली। भँइसियों डाँगर लंके का होई। जब ले थान, चूँची आ दूध ना रही तब ले सहुओ त ना नू खड़ा रही। एही से सवा तीन सइ में एगो गभिना थलथलाइल भँइसि ठीक कइलन। विकास का लोटिस में सुनले रहलन कि सरकार जगहे–जगह सोसाइटी खोले जाति बाटे जे गिरहतन के कम सूदि पर रुपया दिहल करी। आजु से छ महीना अगते बीस रुपिया दे के दूबर दू गो हिस्सा कीनि के सोसाइटी के मेमर बनलन कि तनी एहू के घाटा–मुनाफा देखल जाउ। आजु छ महीना हो गइल। सुपरवाइजर कीहें धउरत–धउरत एँड़ी खियाइ गइल। मीटिंग में त सुपरवाइजर साहेब बतसफेनी नीयर मीठ चिकन–चाकन अइसन बतियवलन कि आजु किनाई काल्हि रुपिया मिलि जाई। बाकिर अब गइला पर सोझ सलामियो नइखन लेत। चिरौरी–मिनती कइला पर ठोठिया के चढ़ि बइठत बाड़न कि हम का करीं, घरे से रुपिया देईं! जब बंक से रुपिया आई त लिहऽ जा।

दूबर सोचले रहलन कि कम सूद पर रुपिया ले के फटकचन्द के हिसाब साफ कइ देइबि। बिना हरे–फिटकरी के करजा से जान बाँची। बाकिर ई त घरओ के आटा गील हो गइल। जब फटकचन्द ई बाति सुनलन कि दूबर सोसाइटी के मेमर हो गइलन त लाल पीअर होखे लगलन। आके कहलन– का हो दूबर तोहरो पाँखि लागे लागलि? हमार करजा देबे के तोहरा रुपिया नइखे आ सोसाइटी के मेमर होखे खातिर रुपिया फरकत बा?

दूबर दाँत चियारि के रहि गइलन आ मन में सोचलन कि जरूर एही रुपिया से सेठ के करजा साफ कइ देइबि। बाकिर मन के गुनान मने में रहि गइल। भँइसि कीने खातिर अब कहाँ जासु? उनुका आगा ई एगो लमहर–चाकर सवाल रहे। बहुत सोचला–विचरला का बाद दूबर थेथर होके अपना मन में कहलन कि चाहे सेठ मरिहन भा गरिअइहन उनहीं का गोड़–हाथ पर गिरि के आपन काम निकासबि। साहु जे हवें से माई बाप हवें। उनका गारी के अमरख ना माने के चाहीं।

दूबर जब रीनि काढ़े सेठ फटकचन्द कीहें चोंहपलन आ आपन अरज–गरज कहलन त पहिले सेठ छान–पगहा तुरवलन बाकिर बाद में कहलन कि पहिले पछिला हिसाब कर। पाँच सइ रुपिया के पाई रुपिया का हिसाब से कुल पौने चौरानबे रुपया भइल। तूँ पुरान आसामी हउवऽ। उपरा के पौने चारि गो छोड़ि देत बानीं। ले आके सोझ–सोझ नब्बे गो दे द। मूर ना देबऽ त कम से कम रुपयवा के मइलियो त साले–साल साफ कइल करऽ। फेनु आगे के करजा के बाति कर।

'रोजा के गइलीं नमाज परल बखरा।' बेचारू दूबर बड़ा सँकेता में परलन। बीस रुपिया ओने सोसाइटी में फँसवलन। एने नब्बे रुपया सेठ के देसु। फेने नगद भँइसि किनाई। केतनों हाथ–गोड़ पटकलन बाकिर सेठ ना सुनलन। झख मारि क दूबर घरे अइलन आ घर से ले जाके नब्बे गो रुपिया जब्बे सेठ के दिहलन तब्बे उनुकर मुँह सोझ भइल। सेठजी रुपिया टेंटिआइ के कहलन– देखऽ दूबर! असामी जे हवे लरिका हवे। एके पोसले हमार काम हवे। देवे–लेवे से आदिमी के सबिका बने ले। अब तूँ अधो राति खानी अइबऽ त जेतना के काम होई हम नाहीं थोरे करबि। ले जा जेतना के काम होखे।

चट देने तिजोरी में से तीन सइ रुपिया निकासि के गनि दिहलन। दूबर कहते रहि गइलन कि अधिका का होई कामे भर देईं। बाकिर सेठजी कहलन कि ले जा जवन लागी तेवन लगइहऽ। कुल्हि सोझ–सोझ आइ सइ रुपया हो गइल। जब दूबर चले लगलन त बोलाके सेठजी कहलन– हेइजा हमरी बहिया पर तनी टीप देले जा। तनी जल्दी में बानीं। सुचिता बइठि के साफ कइ देइबि।

दूबर घरे अइलन। जाके भँइसि ले अइलन। खूँटा पर बान्हि दिहलन। रुपया कहाँ से आइल हवे आ कइसे–कइसे आइल हवे केवनों बेकती से ना बतवलन। कहबे केकरा से करसु। घर के मालिक त ठहरलन दूबर। घर का अउरी बेकतिन के फिकिर में डलला के कामे केवन रहे? दूबर लाख से लीखि करसु। तबों केहू साँसि–ढेकार लेबे वाला ना रहे।

टोला–परोसा के लोग अचंभा में परल कि दूबर का मेहरारू का मुअते ना जानी कहाँ से इनका घर में माया टूटि परल कि मथुरही बन्हाइ गइल।

दूबर का रामजी पाँच गो बेटा देले बाड़न। चारि गो के विआह हो गइल बाटे। घर में तीन पतोहियों आ गइल बाड़ीस। एगो के अबहीं फागुन में गवना होई। एगो कुँआर बाड़न भीम। जेठका लरिका के लरिकनी सेयान भइल चाहति बाटे। धीय आ धमोइ के उपजत देरी ना लागेला। दुइ एक साल में ओकरो सादी करे के परी। बाकी दू गो पतोहन का कोरा में एक–एक गो लरिका बाड़नसऽ। घर के लेके बहरा ले रामजी दूबर के एह घरी खूबे बुझले बाड़न। खेत में जजातो नीक होति बाटे। मुद्दई मुँह बिजुकावत बाड़न। बाकिर ओसे का रामजी का मुँह बिजुकावल ना चाहीं।

भँइसि का अइला पर सब बेकती का सुतार हो गइल। खूँटा पर अइला का अठवें दिन भँइसि पाड़ा बिआइल। दूबर कउड़ा बइठि क आगी तापत रहलन। जब उनुकर छोटका नाती भँइस के पाड़ा बिअइला के हाल सुनवलिस त दूबर मोंछि पर ताव देत उठलन आ कहलन–

भँइसि बिआइलि पाड़ा।
त साहु भइले खाड़ा।।

यानि अगर भँइसि पाड़ी बिआइल रहित त ओके जिआवे खातिर आधा दूध कई महीना ले पियावे क परित। बाकिर पाड़ा बिआइल त कवनों फिकिर नइखे। खूब कचरि के दुहला के काम बाटे। पाड़ा राम मुअबे करिहन त का करी। एह लोगन के अरदुआइ त अपनहीं थोर हवे। दू एक महीना में केंचुअटि जालन आ फेनु केतनों दवा–बीरो होखे उलटि जइहन।

दूबर धारि फोरलन। फेनुस दुहाइल। पाकल। कुल्हि लरिका–फरिका एक जून खूबे छउकि के खइलन। दूबरो खइलन। रतौन्ही के दवा हवे फेनुस। फेनुस खाते दूबर के रतौन्ही नीक हो गइल। आँखि के पट्टर त खुलिये गइल संगे–संगे दूबर के कुल्हि बेकति अँखफोरू हो गइली। सभके आँखि खूलि गइल। बिना दूध के अब तीनों पतोह के लरिका दुबराये लगलन।

छोटका नाती नधियाइल त थाने तर बोलाके दूबर चोंका पिआइ दिहलन। भीम का गिलासि में थोरकी भर गाज आ दूध ढरकाइ के बड़की पतोहि के दही जमावे के दे दिहलन।

सभका लरिका बाटे त केवनों काम आई! जेठकी का लरिकनिये बाटे त का करी? ऊहे नू ओकरा दिन–राति के बा। ओकरा अब क दिन अपना घरे रहे के बा। एक दू बरिस के मेहमान बाटे। फेनु आन का घरे त बाछी चलि जइहन। जई दिन बाछी खाई–खदरि लेसु। जेठकी पतोहि अपना लरिकनी के बोलाइ के छिपुली में बसिया भात आ दूध उझिलि दिहलसि। कोठिला का आड़ा बइठि के लरिकनी मजे में सरपोटि लिहलसि। ओके दूध–भात मझिला नाती देखलसि त ऊ काहें के कल लेउ। ऊ भुँइया लोटिआवे लागल। ओकरा के जबे दूध दिआइल तबे दूध अहरा पर बइठे पावल। बिहान भइला जब दही महाये लागल त केहू का खराई मारे लागलि, तनी सढ़िये ले के केहू खराई मेटावल। केहू का मदरसा जाये खातिर कुजून होखे लागल। ऊ छिनुई दही का संगे लीटी खाये खातिर अकुताये लागल। लेनू खातिर कोरा में के लरिका नधिआये लागल।

सभका महतारी रहे। अपना–अपना हिस्सा–परता पर सभे अपना–अपना लरिकन के दूध–दही आ घीव खिलावे। बेचारू भीम का त महतारी रहे ना। उनुके के देउ? ऊ आपन हाथ गोड़ चलावल सुरू कइलन। आ सुनाये लागल कि आजु क दूध सगरे बिलरिये पी घललसि हवे। त आजु के लैनू सगरे मूसे चाटि घललनस। कबों–कबों त अइसनों भइल कि नादी तर तोपल दूध, साढ़ी ओही तरे बाटे, नीचे से गायब बाटे। मन कई कोठिला जाये लागल। कहँतरी फूटल नइखे कि दूध हेठा से चू जाई। फफइलो के केवनों दागी नइखे। उझिललो के केवनों निसान नइखे लउकत। फेनु दूध भइल का? जरूर केवनों भूत–परेत आवत बाटे। दोसरा जगह दूध अँवटाये लागल। बाकिर परिकल भूत थोरे मानी। घर के मेहरारू टाही में लगली सऽ आ एक दिन भीम रेंड़ का फोंकी से अँवटल दूध सुरुकत पकड़ाइ गइलन। ओह दिन भउजाइन का गोड़–हाथ पर परलन त मोकदिमा ओही जा सुलह हो गइल। आगे बढ़े ना पावल।

भँइसि के दूध आ घीव देखि के दूबर हिसाब जोरत रहलन कि साल भर में भँइसि के दाम निकसि आई। ना होई त सेठजी के रुपया दे दिहल जाई। ना त सूदि बढ़त जात बाटे। एने अचके में एक दिन सुनाइल कि भँइसि टँगरी उठाइ दिहलसि। से त खूब हरियरी दियात रहे। आखिर एतना जल्दी काहें बिसुकी? अनगुतहा दूध नीके दे। बाकिर चरि के अइला पर साँझि खानी एको चिरुआ दूध ना देव। नेटुआ बाबा के दूध–बतासा चढ़ावल गइल तबों ना भँइसि सुधरलि। आखिर भँइसि का का भइल बा? केहू के नजरि त

ना लागि गइल? साधु बाबा के एक कहतरी दही देके नजरि झरवावल गइल तबों किछु ना उजियाइल। दूबर बड़ा सँकेता परलन। कतों भँइसि के दूध धामिन त नइखे पी घालति? अंगोरे खातिर जेठका बेटा बन में भँइसि चरावे के ले गइल। चरवाहन से पता लागल कि धामिनि ना, बड़की धामिनि दूध पी घालति रहे। बर का पतई के खदोना बनाइ के भीम चरवहिए में भँइसि के दूध सुरुकि लेसु। घरे अइला पर डाँट–डपट भइल। भीम मुँहे लागे ना देसु। खैर, भँइसि के दूध केहू तरे बढ़ि गइल। दूबर टूअर लरिका के का बोलसु? इरिखा आई त कतों भागि–पराइ जाई त बइ से बुरा होई।

एने पतोहि मन ही मने गुरमुसा सन। अपना पुतरइला के नइखन बोलत। हमनी का अपना लरिकन का मुँहे जाबी देले बानी जा आ भीम सगरे दूध–घी सहोथि लेत बाड़न।

देखते–देखते घर में सभे छूटि के लकड़ी खेले लागल। जे जहँ पावे तहँ सहोथे लागे। अपना–अपना लरिकन के आँखि बराइ के दे घाले। लरिका ना रहें स त झाँपी में चोराइ घालल जा। चोरी–चोरी घीव बेचाहू लागल। आ एने दूबर हिसाब जोरसु कि एके बेरि लगनि में घीव बेंचला पर किछु लज्जति भेंटाई। खुचुर–खुचुर बेंचला से किछु ना होई। ए तरे दस रुपया हाथ में होखी त केवनों कोन साफ होखी।

गते–गते कलह के आगि सुनुगे लागलि। आ दूबर का अँगना में दूनों बेरा सुनाये लागल–

तोरा पूत के खठिया निकसो।

तोरा पूत के माटी लागो।

कइसे सगरे दूध अपना पूत के पिआ घललसि हवे?

पियवली हाँ त का? हम अपना भतार के कमाई।

वाह! वाह! रे भतार वाली! तनी मुँह ना देखु। जइसे हमार भतार बइठल रहता।

आ एक दिन साँझि खानी टोला भर के लोगन के बठोरि के जेठका लरिकाऽ का कहहीं के परल कि हमार बखरा बाँटि द। हमार गुजर तोहरा में ना होई। दूबर माथे हाथ दे दिहलन। आपन इज्जति दूबर कइसहूँ तोपि–ढाँपि के चलावत रहलन। ऊ अब पंच का आगा पियाजु को बोकला नीयर बितिके–बितिके फरियावे के परी। सेठ फटकचन्द के आठ सइ रुपया करजा सुनि के कुल्हि लरिका कूदे लगलन। जेठका लरिका कहलसि– हमनीं का जिनिगी भर जाँगर ठेठाइ के मरि गइलीं जाँ। ऊ सगरे कमाई कहाँ गइल जे करजा लिआइल हवे।

'करजा ले के हम केवनों रेवड़ी–मिठाई थोरे खइले बानी? केवनो रंड़ी–पतुरिया के नइखीं देले न आपन बिआह कइले बानी। तोहने लोगन पर नू लगवले बानी।' दूबर आपन सफाई दिहलन।

पंच लोग दूबर से हिसाब माँगल त ऊ हिसाब कहाँ से देसु? केवनों लिखि–पढ़ि के बही में थोरे धइले रहलन। केहू का केहू से छक्का–पंजा थोरे रहे कि हिसाब लिखाउ। हाँ हिसाब होई त सेठ का घरे। सेठ जी बोलावल गइलन। ऊ सरखत ले आके पंच का आग पटकि दिहलन। के कहता कि आठ सइ रुपया हवे। हई सोरह सइ रुपया के सरखत बाटे देखि लेईं सभे। सेठ जी कहलन।

दूबर कबों पंच लोगन के कबों लरिकन के आ कबों सेठजी के मुँह तिकवसु।

भँइसि के दूध के असर दूबर का लरिकन पर त ना परल बाकिर सेठ का रुपया पर जरूर परल रहे।

सेठ जी कहलन– दुबर का घरे बाँट–बखरा आगे–पीछे होई। हमार सोरह सइ रुपया लेले बाड़न साल भर में अठारह रुपया सैकड़ा से दू सइ अठासी रुपया सूदि भइल। सवा तीन सइ रुपया में भँइसि ले अइलन दूबर। साल भर मजे में दुहलन। अब ठइरा भँइसि सूदि मिहें बइलाइ ले जात बानीं। पंच लोग सुनत बाटे हमार सोरह सइ मूर के मूर अबहीं इनिका कीहें रहि जात बा। सेठजी भँइसि बइलाइ के चललन। दूबर दउरल घरे गइलन कि साल भर के घीव बटुराइल बाटे ओहू के बेंचि के किछु अउरी बोझा हलुकाई। घरे जासु त घीव के बेंहड़ा झाँपी में से निकासि के बहरा फेंकल बाटे। बिलारि ओके चाटि के साफ करति रहे।

दूबर बहरा अइलन आ कहलन अच्छा भइल सेठजी भँइसि ले गइलन। बिना भँइसि का दूधे के लरिका नीके रहलन। भँइसि का दूध से त दुबराये के नौबति लागलि बाटे। हमनीं का भँइसि के नइखे काम– जेठका लरिका कहलसि। भीम भँइसि का ओर टुकुर–टुकुर तिकवत रहलन। दूबरो का आँखि मे ंसे दू ठोप लोर गिरि परल। का जाने लोहू रहे कि पानी, भगवान जानसु। दूबर के चित्त आ भँइसि के दूध दूनों फाटि चलल रहे। ●●

मछरी

रामेश्वर सिंह काश्यप

ताल के पानी में गोड़ लटका के कुंती ढेर देर से बइठल रहे। गोड़ के अंगुरिन में पानी के लहर रेसम के डोरा लेखा अझुरा अझुरा जात रहे आ सुपुली में रह–रह के कनकनी उठत रहे जे गुदगुदी बन के हाड़ में फैल जात रहे। कबहूँ झिंगवा मछरी एँड़ी भिरी आके कुलबुलाए लागत रहीसन त सऊँसे देह गनगना जात रहे। कुछ दूर पर सरपत में बेंग टरटरात रहऽ सन आ कवनो–कवनो, जब तब पानी में कूद जात रहसन जेकरा से ताल में चक्करदार हल्फा उठे लागत रहे आ तरेंगन के परछाहीं लहर पर टूटे लागत रहे।

झींगुर के अजब मनहूस झनकार हवा में भर गइल रहे। नीम के फूल के गंध से मातल बेआर ढिमिलाइल फिरत रहे। दिन भर के तवँक से अँउसाइल कुंती के मन भइल कि गते से पानी में उतर जाय आ अपना देह के पानी में बोर दे। चुहानी में साँझे से चूल्हा फूँकत–फूकत ओकर जीव उजबुजा गइल रहे। मारे पसेना के लूगा देंह में सट गइल रहे। कसहूँ जीव जाँत के, सब केहू के बीजे करा के फजिरे बरतन बासन मले खातिर पानी ले आवे निकललि रहे। राते में डूभा, छीपा आउर बटुआ पानी में ना फुला दिआई त बिहने जूठ अइसन खरकट जाई कि छोड़वले ना छूटी। बाकी, कुंती से पानी में उतरल ना गइल। अपना देह के आउर ढील के ऊ चुपचाप बइठल रहलि।

बगले में, दहिने ओकरा घर के दुआर लउकत रहे। निकसार में ढिबरी धुआँ रहे। ढिबरी के मइलछहूँ लाल अँजोर में अपना पोंछ से मच्छड़ उड़ावत भँइस लउकति रहे। धवरा बैल कोना में बइठल पगुरावत रहे। कुंती के बुझाइल कि ओकर माई सूत गइल होई आ ओकर नाक फोंय फोंय बोलत होई, बाबूजी भी आँख मूँद के महटिअवले होइहें आ दम्मा के मारे उनकर साँस अदहन लेखा हनर–हनर करत होई। सीतवा, गीतवा, मोतिया, गएत्रिया अबिलखवा, कअिया सब एके खटिया पर गुड़मुड़ा के सूतल होइहें सन। कवनो के लात कवनो के मूँडी पर चढ़ल होई, कवनो के मूड़ी लटकल होई, कवनो के गोड़ खटिया के ओरचन में बाझ गइल होई। अब ओकरा जाके सबके सोझ करे के परी। सब पिल्ला लेखा काँय–काँय किकिअइहन सऽ आ माई काँचे नींदे जाग के अलगे अनरवाह करी– "अइसन कुलच्छन ई कुंतिया बिया, दिन रात लइकन के डँहकावत रहेले, एकर बस चले त ई सब के छछना–छछना के मुआ दिही।" बाबूजी अलगे अपना खटिया पर से गुरगुरइहें– "काहें रोवावत बाड़िस रे, हमारा के जीए देबिस कि ना? एक त हमार जीव अपने खों... खों...." आ ऊ सब के ओइसहीं छोड़ दे त माई लगिहें बिख बोले– "एकर रहन देख के त हमार पित लहर जाता। काठ के करेजा हइस। पत्थल ह पत्थल। एकरा कवनो दम–फिकिर हऊस लइका मूअसन भा जीयऽसन।"

घर के इयाद आवते कुंती के जीव उदास हो गइल जइसे खँखार पर गोड़

पर गइल होखे। कुंती के ना चहला पर भी पहिले के याद ओकरा के आगा पवँरे लागल।

कुंती नौ बरिस के रहे तबे ओकर माई मू गइल रहे। ओकरा अपना माई के मउअत सोझा लउके लागल। माई मउराइल बैंगन लेखा हो गइल रहे आ ढँकना में लाल मिरचाई जरा के टहल ओझा बेंत पटक–पटक के ओझाई करत रहन, फिर माई के मूड़ी एक देने लटक गइल आ बुढ़िया मेहरारू सब सियार लेखा फेकरे लगली स, आजी हमरा के करेजा में जाँत के माई के गुन रो रो के गावे लागल रहे। कुछ दिन बाद बाबूजी आ चाचा मूड़ी छिलवा लेलन, खूब भोज भंडारा भइल आ छौ महीना बा नैकी माई आइल। पहिले दिन ओठ बिजुका के हमरा के देखते पुछलस – "तूँही हमारा सवत के बेटी हऊ?" हम मूड़ी हिला के कहलीं – "हूँ! तहिया से आज ले ऊ हमार जेतना, साँसत कइलस ओतना कवनो दुसमनों केहू के ना कइले होई। के जाने ओह जनम के कवना कमाई से हम दस बरिस में जीयते, छछात नरक के भोग भोग लेलीं। माई के बरसाएने लइका भइल। पाँच गो त मूँ गइले सऽ। ओकरो पाप माई हमरे कपार पर थोपेले कि इहे हंड़साखिन मुअवलस। बाबूजी के दम्मा हो गइल। माई रोज कवनो ना कवनो रोग कछलहीं रहेले। चाचा माइए से आजिज आके अलगा हो गइलन। लइका देखीं त हम, खैका बनाई त हम, भँइस गोसि के सानी पानी करीं, गवत लगाईं त हम। माई अपना हाथे खरो ना टारे। दस बरिस से दिन रात चंग पर चढ़ल रहीला, मिजाज, चरखा भइल रहेला, अतनों साँवस ना मिले कि अएना में सुबहिते मूँह देखीं।" सोचत सोचत कुंती के बुझाइल कि हजारन चिऊँटी ओकरा सऊँसे देंह में रेंगे लगलीसन। ओकरा बुझाइल कि ओकरा देंह में देंहे नइखे।

अठमी के चनरमा, सड़ल तरबूजा के फाँक लेखा बाँस के फुलुँगी में अझुराइल रहे फीका, उदास, सकुचाइल। मारे धूर के असमान सिलेट लेखा साँवर लागत रहे। पानी में डूबल–डूबल कुंती के गोड़ कठुआ गइल रहे, पेंडुरी चढ़े लागल रहे। ऊ गते से आपन गोड़ पानी से बाहर निकाल लेलस। एक मन कइल कि घइला भर के घरे चलीं। ढेर रात बीत गइल। बाकि ओकरा से टकसल ना गइल, आलस ओकर गतर गतर बान्ह देले रहे। कुंती गते से एगो खपड़ा टकटोर के अपना एँड़ी के मइल छोड़ावे लागल।

चिंता के टूटल धागा फिर जोड़ा गइल। एने तीन साल से त हमरा अपने चुप–चाप बइठे के मन ना करे। जहाँ अकेले बइठऽ, मन में किसिम–किसिम के विचार उठे लागेला। ई सभ सोचला से फैदा? बाकि जहाँ इचिको सँवस लागल कि फिरे बैताल ओही डाढ़ पर। मनवाँ खराबे बात देने झुकेला। एही से जानबूझ के हरदम अपना के काम में बझवले रहीला। जेतना हमउमरिया सखी सहेली रहीसन सभ के बिआह कहिए भइल। कै गो त लरकोरिओ हो गइली सन। जहाँ ऊ सब बइठिहसन। खाली ससुर के बात, अपना मरद के बात। खोद–खोद के दोसरा से पूछिहसन आ रस ले ले कहिहसन। हमरा त ई सुनल इचिको नीमन ना लागे बाकि केहू सुनइबे करे तब का कान मूँद लिहीं? झूठ काहे के कहीं, जहिया ई सब सुनीला नींद ना लागे सऊँसे रात करवटे बदलत बीतेला। मने–मने हमहूँ सपना देखे लागीला कि कइसन हमार ससुरा होई, कइसन सास के सुभाव होई, सवाँग खिसियाह मिलिहें कि मिठबोलिया? ऊँह, कइसनो मिलस। आपन आपन भाग ह। नइहर में सौतेली मतारी के दिन–रात के किचकिच से त नीमने होई। माई के बोली हइस? बुझाला कि चइली से मारत होखे। बाबूओ जी के मति न फेर देले बिया। परियार साल बाबूजी एक जगे ठीक ठाक कइलस त माई ठेन बेसाह देलस कि एह साल बैल किनाई। बँटइया पर खेती ना होई, अपने हर चली त जब रोपैया बैल में उठ गइल, हमार तिलक कहाँ से दियाव? परसाल फिर बाबूजी एक जगे बात चलवलन। लइकवा दोआह रहे। डाकपीन के काम करत रहे। एक तरे से सब कुछ पक्के रहे। सखी सहेली में केहू हमरा के मनीआडर वाली कह के चिढ़ावे, केहू लिफाफा पोसकाट वाली कह के चउल करे। हमहूँ मनेमने गाजत रहीं कि दोआह बा त का ह? करकसा मतारी से त जान बाँची। बाकि माई बेंड़ देली कि हम अपना जीयत जिनिगी कुंती के बिआह दोआह बर से त ना होखे देव, नाहीं त सब केहू मेहना मारी कि सवत के बेटी रहइन एही से दोआह के गले मढ़ देली, जिनगी भर के अकलंक के अपना माथे लिही? बाबूजी त हर बात में माई के मूँह जोहत रहेलन। लागल बात कट गइल। भितरिया बात त हम जनबे करीला। माई सोचली कि कुन्ती चल जाई त लइका के खेलाई?

कुन्ती के बुझाइल कि ओकरा कंठ में कुछ अँटक गइल बा आ दुखाता। पँजरी आ हँसुली के हाड़

में जइसे टभक अमा गइल होखे, सऊसे देह जइसे घवदाह हो गइल होखे, माथा के नस के जइसे केहू ताँत लेखा तान देले होखे आ ऊ टन टन बाजत होखे। कुन्ती के साँस तेज चले लागल या गरम साँस के धार ओकर होंठ पर साफ बुझात रहे। गदराइल देंह समुन्दर के हल्फा लेखा साँस के ताल पर उभरत रहे, डूबत रहे, ओठ रह रह कर के ओइसहीं काँप जात रहे जैसे भोरहरी के हवा में बबूर के पतई काँप जाला। बहुत दूर पर मनियारा साँप के कतार लेखा छोटी लैन छकछकात चलल जात रहे। मधिक अँजोरिया बेरमिया लेखा बेदम होके गते–गते हांफत रहे। कुन्ती के एगो लमहर ठंढा साँस निकल गइल आ ओकर सऊँसे देंह लूक में परल मोजराइल आम के गाँछ लेखा सिहरे लागल।

"अइसे कबतक चली? डेग–डेग खाई खंधक बा। ओह दिन अछँवट सिंह के छत पर गेंहू सुखावे गइल रहीं त उनकर भगिना गते से आके हमार नाँव पूछे लागल। सुनीला जे पटना पढ़ेला। मन त भइल कि खूब सुना दिहीं कि बहरकू तोरा हमरा नाँव से मतलब? बाकि पित घोंट के रह गइलीं। हमार खिसिआइल मुँह देख के ऊ अपने लवट गइल। बिरीछ काका के बेटवा के भी उहे हाल, जहाँ हम ताल में नहाए अइलीं कि केवाड़ी का दोबा में लुका के अपना दलान पर से घंटन निहारल करी। मउगा कहीं का। मन त करेला कि कान धर के मारीं दू थप्पर। सीक अइसन त बाड़न, एको थप्पर के मउआर ना होइहें आ रसिया बने के सवख बा। आ बंसियो का कम आफत कइले बा, सिलिक मिरजई पेन्ह क दिन भर में चार भाँवर हमरा गली में फेरा लगावेला। हम का ओकर रंग–ढंग ना चीन्हीं? बाकि बोले–ओले ना। जहिया, टोकलन, अइसन उघटब कि फेन हमरा सोझा आवे के नाँवें ना लींहे; .... बाकि कब तक? अइसे कहिया ले चली?"

कुन्ती के बुझात रहे कि साँप के बिख के लहर ओकरा देंह में उठ रहल बा आ गोंइठा के धुआँ में जइसे ओकर दम घोंट रहल बा आ ओकर गत्तर–गत्तर अब पारा लेखा चारों देने छितरा जाई। गाँव के दखिन सिवान पर कुकुर भूँकत रहलन। खेत में सियार फेंकरत रहसन! काली माई के मंदिल से पाठ कर के चरित्रर काका लवटल आवत रहन। उनका खड़ाऊँ के खटर–खटर साफ सुनात रहे। कुन्ती सोंचलस कि एह रात के चरित्रर काका ओकरा के ताल किनारे बइठल देखिहें त का सोंचिहे? झप्प से घइला बुड़का के घरे चलल। निकसार के बगल में तनी दहिने हट के नेनुआ के लत्तर चढ़ावल रहे। ओहिजा कुछ आहट बुझाइल। कुन्ती चिहा के पुछलस के ह? बंसी के काँपत, खखन से भरल आवाज आइल– "हमार किरिया, तनी एगो बात सुन जा।" मारे घबराहट के कुन्ती के हाथ–गोड़ काँपे लागल। ऊ धड़ से निकसार के भीतर जाके केवाड़ी के पल्ला भिड़ा लेलस। एह समय ओकरा अपना करेजा के धड़कन साफ सुनाई देत रहे ओकरा माथा पर पसेना चुहचुहा आइल रहे आ साँस बहुत तेज हो गइल रहे। घइला थवना भिरी रख के ऊ मने मने बंसी के खूब गरियवलस।

आँगन में माई ना रहे। लड़का सभ दँवरी लेखा खटिया पर पटाइल रहसन। बाबूजी के घर में दिया बरत रहे। पल्ला ओठँघावल रहे आ बुदुर बुदुर के आवाज आवत रहे। आपना नाँव सुन के कुंती गोड़ जाँत के गते से जाके केवाड़ी में कान लगा के सुने लागल। माई, बाबूजी के समझावत रहे– "एह साल कुंती के बिआह के नाँव लेहल त ठीक ना होई। तोहार बेरामी एह साल बहुत उखड़ गइल बा। चलऽ बनारस रह के दवाई करावऽ। हमहूँ ओहिजा डाकटर से जांच कराइब।" बाबूजी कहलन– "से त बड़ले बा बाकि लोग बाग अब अँगुरी उठावता, जवान जवान बेटी के कबले कुआँर रखबू?" माई तड़प के बोलली – "वाह रे, लोग बाग कही त कुँइयो में कूद जाइब? एह साल ना सही, पर साल सही, कवनो मछरी ह जे सड़ल जात बिया।" बाबूजी मान गइलन – "ई त ठीके कहत बाड़ू, कवनो मछरी त ह ना जे सड़ जाई। परे साल सही।"

कुंती के बुझाइल कि पचासो बिच्छू एक साथ डंक मार देलन। बेहोसी में अपना खटिया देने बढ़उलस बाकि अचक्के ओकर गोड़ लगो जूठ थरिया में पर गइल। झन्न से आवाज भइल। माई भीतरे से चिचिया के पुछलस– "काहे रे कुंतिया, का भइल?"

कुन्ती के फफल–फफक के रोए के जीव करत रहे। मन करत रहे कि लाज लिहाज के छोड़के बाबूजी से अभी जा के कह दे कि बेटी मछरी ह बाबूजी, पानी के बाहर कब तक जिही? सड़ी ना त बिलाई ले भागी।

कसहूँ रोआई जाँत के कहलस– "कुछ ना रे माई, बिलार रहे एगो। .... भाग, बिल, बिल... .. .."। ●●

‘पाती’-कला-मंच द्वारा, श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव के विशेष-अतिथि-सान्निध्य में आयोजित ‘‘एगो साँझ: भोजपुरी पावस गीत के’’ टाउनहाल, बलिया के कुछ झलकी

ऊपर गायिका श्रीमती नैनू शुक्ल, दूसरे चित्र में श्री विजयप्रकाश पाण्डेय ‘विक्की’ के साथ प्रो0 रामसुन्दर राय, श्री प्रेमजी (ढोलक), हरेन्द्र प्रसाद (बेन्जू), शत्रुघ्न राय (तबला) आदि।

नीचे चित्र-1 में गायक श्री ओमप्रकाश एवं चित्र-2 में श्री अरबिन्द उपाध्याय

www.jagran.com

पावस राग गीतों को सुन श्रोता हुए मंत्रमुग्ध

पाती कला मंच द्वारा आयोजित भोजपुरी कार्यक्रम का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि • जागरण

जासं, बलिया : भोजपुरी लोक अपनी कृषि संस्कृति में ऋतु उत्सवों के माध्यम से प्रकृति को आलंबन बनाकर अपने हास हुलास चिंता व्यथा और रागात्मकता की अभिव्यक्ति करता है।

अतिथि ईंट भट्ठा संघ के जिलाध्यक्ष प्रदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि जनपदीय गायक कलाकारों के मधुर गीत पारिवारिक सामाजिक अनुरंजन के साथ भरपूर तृप्ति देने वाले है।

13 हिन्दुस्तान
वाराणसी • सोमवार • 26 अगस्त 2019

'पाती कला मंच' की ओर से रविवार को शहर के टाउन हाल में आयोजित 'एगो सांझ पावस गीत के नाम' कार्यक्रम का दीप जलाकर शुभारम्भ करते प्रदीप कुमार श्रीवास्तव। • हिन्दुस्तान

'पाती कला मंच' पर कजरी गीतों की धूम

''जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया'' द्वारा हिन्दी-भवन आडिटोरियम, नई दिल्ली में
आयोजित भोजपुरी कवि सम्मेलन-29 जुलाई 2019

लवकान्त सिंह 'लव' सम्पादित भोजपुरी कहानी-संग्रह 'काठ के रिश्ता' के विमोचन

श्री विजयशंकर पाण्डेय के खण्ड काव्य ''अरावली की आवाज'' के विमोचन-समारोह (वाराणसी)

भैरवी क साज

ईश्वरचन्द्र सिन्हा

'बारे बलम फुलगेनवाँ न मारो लगत करेजवा में चोट'

सिंहवाहिनी देवी के सालाना सिंगार के समय माई के दरबार में जब चम्पा बाई अलाप लेके भैरवी सुरू कइलिन, त उहाँ बइठल लोगन क हाथ अनजाने में करेजा पै पहुँच गयल। रात भर गाना सुनत–सुनत जे झपकी लेवे सुरू कय देहले रहल, ऊहो अचकचाय के उठ बइठल, जइसे केहू ओनके उप्पर लोटा क पानी उड़य देहले होय।

चम्पा बाई के गला जइसन सुरीला रहल वइसहीं ओनकर रूपो अइसन रहल कि देखवइयन के झाँई आवे लगे। औ भैरवी के ओन्हे जइसे सिद्धि मिलल रहल; बनारस में ओह समय ओनके जोड़ के भैरवी गावे वाला केहू दूसर नाहीं रहल।

चम्पा बाई क टीप ओह भोरहरी के बेरा गंगा के चीर के ओह पार रेती तक पहुँचत रहल। जइसहीं चम्पा बाई दोहराय के गउलिन– 'लगत करेजवा में चोट' सज्जै दरबार झूम उठल।

'वाह मालिक, तनी बताय के'– मन्दिर के ओर के सीढ़ी से ई आवाज लगते, दरबार के एक कोने में जइसे हलचल मच गयल। चम्पा बाई चकपकाय के ओहर तकली, त देखें कि बचऊ महराज के छ फुटी काया सीढ़ी पार कइके सामने आइ गइल हौ। चम्पा के गइबै जइसे भुलाय गयल।

बचऊ महराज आवाज देहलन– "सुरू होये दा चम्पा, रुक काहें गइलू। का सच्चों के पीर उठ गयल?"

बचऊ महराजा के एतना कहतै दरबार के जउने कोने में हलचल मचल रहल, ओहर से आठ दस जवान लाठी लेहले तनतनाय के खड़ा हो गइलन। ई पट्ठा बल्ली बाबू के रहलन, जेकरे नाम के दबदबा ओह समय बनारस पै रहल। हर समय दस बीस पट्ठा दुआरे पै पड़ल भाँग–बूटी छानल करें और जरूरत पड़ले पै सौ दू सौ के एकट्ठा करे में देर न लगे।

बल्ली बाबू के पट्ठन के लाठी खड़कतै, लोगन के देही के जइसे खून–सुखा गयल। बाकी बचऊ महराज पै एकर तनिको असर नाहीं देखायल। ऊ अगिला पट्ठा के ओर ताक के कहलन– "का रे सुमेरवा! जाय के बल्ली से कह दीहे कि हमसे मिल लीहें।"

सुमेर टकटकी लगाय के देखत रह गयल। बचऊ महराज कंधे से खसकल दुपट्टा उप्पर चढ़ावत घाट के ओर बढ़ गइलन। दरबार खतम हो गयल। कुछ लोग घरे गइलन और कुछ लोग नहाये बदे गंगा किनारे। चम्पा बाई बल्ली बाबू के पट्ठन के घेरा में दालमंडी के रस्ता धइलिन।

बात ओह समय के हौ, जब तुरुकन के अमलदारी के धूर चटाय के फिरंगिन के कोतवाली चौक के करेजा पर खड़ी होय के भद्दोमल के हवेली से आँख लड़ावे सुरू कइले रहल। बल्ली बाबू के घर एही हवेली के पिछवैं लख्खी चौतरा से सटले रहल। कहल जाला कि एकर नाम लख्खी चौतरा एह बदे पड़ल कि हाथ भरके चौतरा बदे

जब दुइ बनारसिन में ठन गयल त दूनो ओर के कुल मिलाय के एक लाख रुपयाँ लड़े में खरच हो गयल। बल्ली बाबू बनारस के सराफा बाजार क राजा कहल जाँय। का मजाल कि एक्को गुल्ली सोना, चाहे एक्को सील चाँदी बिना ओनके मरजी के बिकाय जाय। उमिर त अबहीं पचीसिये में रहल, बाकी सराफा के बूढ़–बूढ़ दलाल ओनके गुरू कहैं और मानै। जब बल्ली बाबू सराफा में पहुँचैं त बड़े–बड़े सेठ हाथे में पान के दोना लेके खड़ा हो जाय। बल्ली बाबू खाली दलालै ना रहें। बल्ली बाबू के रहत सराफा के ओर केहू आँख नाहीं उठाय सकत रहल। सराफा के नइकी कोतवाली पै ओतना भरो ना रहल, जेतना बल्ली बाबू पै।

बचऊ महराज पैंतीस के पास पहुँचल रहलन। बाल–बच्चा वाले रहलन। शरीर औ रियाज खानदानी रहल। बाप दादा के बखत से जजमानी होत आइल रहल। जजमानियों एकठे रियासतै होले, जेकरे रच्छा बदे मालिक के गुंडा बने के औ चेलन के एकठे फउजो पाले के पड़ेला। बचऊ महराज ई दूनों में बनारस उप्पर मानल जात रहलन। ओनकर हवेली बालू के फरस पै रहल। ऊ हवेली का रहल एकठे किला रहल। सदरी दुआर एक्कै, बाकी ओम्मे अँगना इग्यारह ठे। बचऊ महराज लँगोट के पक्का रहलन, बाकी ओह समय के रईसन मतिन गाना सुनै के सउख ओन्हऊ के रहल। साल भर पहिले जब बनारस के रईसन के महफिल में चम्पा बाई के धूम मचल रहल, बचऊ महराज कब्बौ–कब्बौं चम्पा बाई का कोठा पै जाय के गाना सुन आवें। बाकी साल भर से चम्पा बाई मुजरा त बन्द करी देहलिन, महफिलो में जाब छोड़ि देहलिन, चाहे केहू ओनके एक लाख लेवे बदे काहें न तइयार होय।

साल भर पहिले चम्पा बाई के भेंट जब बल्ली बाबू से भइल, त चम्पा अपने मतारी के कुल सिखावल–पढ़ावल भुलाय के बल्ली बाबू पर लट्टू हो गइलिन। बल्ली बाबू उहाँ जाये त सुरू कइलन गाना के आनन्द लेवे, बाकी धीरे–धीरे ऊ दूसरे आनन्द में पड़ गइलन। ऊहो समय आय गयल, जब मोजरा के समय रईस लोग दालमंडी पहुँचै त चम्पा बाई के खिरकी बन्द पावें। ई बात दालमंडी के घरे–घरे फइल गयल कि अपने रईस के कहले से चम्पा कोठा बन्द कय देहलिन। दालमंडी में बल्ली बाबू, चम्पा के रईस कहल जाये लगलन और चम्पा के दोब–दाव ओह गली में सबके छाप लेहलस। नया–नया आयल कोतवाल फरजंद अली के भी तरस के रह जाये के पड़ल। चम्पा के गाना सुने के लालसा ओनके मने में झुराय गयल।

चम्पा नाचब–गाइब कुछ छोड़ देहलिन बाकी जब सिंहवाहिनी देवी के सिंगार के समय नगिचायल त ओनके अपने माई के कहल इयाद पड़ गयल। ओनकर माई हर साल सिंहवाहिनी देवी के सिंगार के दरबार में गावे बदे जरूर जाँय। ऊ बतउले रहलिन कि चम्पा के नानियो उहाँ जाये में कउनो साल नागा नाहीं कइले रहलिन। ओनके ई बिसवास रहे कि देवी जी के किरपा से ओनकर बंस फूलत–फलत आवत हौ। चम्पौ जब से नाचब–गाइब सुरू कइलिन, देवी जी के दरबार में जाय अपने हुनर से माई के रिझावे से ना चूकें। ऊ बल्ली बाबू के राजी कइ लेहलिन कि भोर के बखत मन्दिर में जाय के एक ठे भैरवी सुनाय अइहें। ओनके संगे बल्ली बाबू के दस बारह पट्ठौ उहाँ गइलन। संयोग क बाति कि ओही समय गंगा नहाये जात के जब बचऊ महराज मन्दिर के पास पहुँचलन त चम्पा के टीप सुनके माई के दरबार में पहुँच गइलन और अन्यासे ओनके मुँह से ऊ बात निकल गयल, जौन दरबारै के खड़बड़ाय देहलेस।

बल्ली बाबू अपने पट्ठन से जइ ई कुल सुनलन त मारे गुस्सा के ओनकर चेहरा लाल हो गयल। ऊ टप से लाठी उठौलन औ दलान के बाहर होय गइलन। गल्ली में पहुँचते ओनके मन में न जाने का आयल कि मुड़ के लाठी फेंक के खाली हाथ बचऊ महराज के घरे पहुँच गइलन।

बल्ली बाबू के देखतै बचऊ महराज उठ के आदर से ओनके बइठावे चहलन, लेकिन बल्ली बाबू खड़ै–खड़ै कहलन– 'सुमेरवा कहलेस ह कि महराज बोलउले हउवन। सुमेरवा कउनो गुस्ताखी कइलेस का?'

'नाहीं हो। चम्पा के भैरवी साल भर पै सुनै के मिलल, तवन ऊ ससुरा लाठी खड़कावे लागल। चम्पौ त अइसन लजाइल जइसे तोहार बिअहुता होय।'

'बिअहुता' सुन के बल्ली बाबू तिलमिलाय उठलन। तब्बौ अपने के संभार के कहलन 'कल भोर में मनकनिका घाट पर चम्पा के भैरवी सुने के तोहके नेवता हौ महराज।'

बल्ली बाबू के चुनौती समझत बचऊ महराज से देरी ना लगल। ऊ झगड़ा बढ़ावे नाहीं चाहत रहलन। ऊ त लाठी खड़कले पै सुमेरवा के ई चेत दियावे बदे कि हम तोहरे मतिन पट्ठा नाहीं, बल्कि गुरू हईं, बल्ली बाबू के भेज देवे वालीा बात ओनके मुँह से निकल

गइल रहल बाकी बल्ली बाबू के बात से ऊ समझ गइलन कि बात उहाँ तक बढ़ गइल हौ, जौने से पीछे नाहीं हटल जा सकत। बल्लिओ बाबू बिना जबाब के इंतजार कइले उलट के बाहर चल गइलन।

ई खबर बिजली मतिन सहर भर में फइल गइल। सबकै जबान पै एकै बात रहल कि कल का होवे वाला हौ। दूनो ओर के पट्ठा लाठी चिकनावे सुरू कय देहलन। दूनो कोठियन में हलचल मच गयल। रात दुइये बजे से मनिकनिका पै लोग जुटे लगलन। भोर होत होत बचऊ महराज और बल्ली बाबू अपने–अपने पट्ठन के साथ पहुँच गइलन। ओहारदार पालकी में चम्पा बाई भी उहाँ ले आवल गइलिन। चम्पा जबसे ई खबर सुनले रहलिन तबै से दाना पानी छोड़ के रोवतै रहलिन। रोवत रोवत ओनकर आँख फूल गइल रहल। बार बार ओनके मन में आयल कि रोय–धोय के बल्ली बाबू के रोकीं, बाकि इ सोच के कि फिर बल्ली बाबू बनारस में कवन मुँह देखइहें, मुँह न खुलि पावें। चम्पा पत्थर के करेजा कय के ई तय कय लेहलिन कि चाहे जवन कुछ हो जाय, बल्ली बाबू के सान में बट्टा, चम्पा के मोहब्बत और चम्पा के अपने स्वारथ बदे न लगे पायी।

बचऊ महराज सामने के मढ़ी पै बइठल रहलन। बल्ली बाबू उहाँ जाय के पुछलन– 'का महराज भैरवी सुने के तइयार हउवा।'

'हाँ हो! हम त सुरू होवे बदे अगोरत हईं।' बचऊ महराज मुस्कियाय के कहलन।

'साज पै का बजे के चाहीं।' बल्ली बाबू तनी तिरछा होके कहलन।

'चम्पा तोहार हई औ साजो तोहरे मन के रहे के चाहीं।' बचऊ महराज तनी ठनक के कहलन।

बल्ली बाबू लउट गइलन। चम्पा के पालकी से उतार के सामने के मढ़ी पै बइठा देहलन। हाथ में तलवार ले के माथे पै लगवलन आ आगे बढ़के बचऊ महराज से कहलन– 'आवा महराज! पहले साज मिलाय लेवल जाय।'

बचऊ महराज अपने चेला से तलवार लेके माथे लगउलन और जय जगदम्बा कहके सामने आ गइलन। जइसे जइसे तलवार खनके, बार अउर ओकर काट होय, वइसे वइसे देखवाइन के साँस टँगाये लगल। एक घड़ी बीत गइल, लेकिन दूनों लड़वइन के तेजी में कउनो कमी ना आयल। चम्पा दाँत से जीभ दबउले करेजा थाम के बइठल साज मिले के घड़ी टकटकी लगाय के अगोरत रहली। बाकी ई साज त भैरवी से मेल खातै नाहीं रहल। झलफलाह होवे लगल। नहवाइया घाट पर आवे लगलन। बल्ली बाबू के निगाह तनी अँजोर में जब चम्पा के झुरायल मुँह पै पड़ल, त ओनके देह में जइसे बिजुली दउड़ गइल। अब त ओनकर वार एतना तेज हो गयल कि बचऊ महराज के बचावै करे के फुरसत न मिलै। देखवइन के अइसन बुझाइल कि अब मैदान बल्ली बाबू के हाथ में हौ। तब ले त चारों ओर हल्ला मच गइल। चम्पा के भाग फूटल। बल्ली बाबू के वार रोके बदे जइसहीं बचऊ महराज तलवार चलउलन, बाबू के गोड़ गोबर पै पड़के अइसन बिछलायल कि झटका से चलावल गइल बचऊ महराज के तलवार पर ओनकर गर्दन अपने–आपै लटक गइल।

बचऊ महराज झपसे तलवार फेंक के बल्ली बाबू के दूनो हाथ में उठाय लेहलन। ओनके उठउले तुरते अपने घर पहुँचलन। चेला भेज के डाक्टर बोलउलन। तबले त कुल खतम हो चुकल रहल। चम्पा के जइसे काठ मार गयल। ऊ न तो रोवलिन न कुछ बोललिन। बल्ली बाबू के पट्ठा रोय–रोय के चम्पा से घरे चले के समुझवलन, बाकी ऊ त जइसे पत्थर हो गइल रहलिन। न कुछ बोलें न कुछ सुनें। दुइ घंटा बाद मनिकनिका पर चिता सजावल गयल। बचऊ महराज रोवत–रोवत लास के चिता पे सुतवलन। ओनकर रोवाई देख के पत्थर के करेजा पिघल जाय। अइसन बुझाय जइसे सग्गै छोट भाई के चिता में आग लगावे के होय।

चिता में आग लग गइल। चिता जल गइल। बाकी चम्पा अपने जगह से हिलली नाहीं। जब लोग चिता बहाय के चले लगलन त अइिसन बुझायल जइसे झटके से चम्पा के नींद खुल गइल हौ। बल्ली बाबू के पट्ठा ओहीं रहलन। चम्पा चकपकाय के कह उठलीं– 'हमें भैरवी गावे के रहल न। जगउला काहे नाहीं। देरी न हो गयल होई। बल्ली बाबू नराज न होइहें?'

चम्पा के देख के सुमेर के आँख से पानी झरै लगल। चम्पा उठलीं। धीरे–धीरे उहाँ गइलिन; जहाँ बल्ली बाबू के चिता जलावल गइल रहल। पलथी मार के बइठ गइलिन। कुछ गुनगुनइलिन, फिर अलाप लेहलिन। ओकरे बाद ओनके कंठ से फूट निकलल भैरवी–

सैयाँ बेदरदी दरदिया न बूझे, रहत नजरिया के ओट। ●●

चिखुरा

अशोक द्विवेदी

बंझुआ अपना लइका के मारत–झहियावत, घिसिरवले जात रहे। बाप–बेटा दूनों के चिचिचाइल सुनि के हम चाह का दोकान से बहरा निकलि अइलीं। चिखुरा के फेंकरल आ बुझुआ के चिचियाइल दूनों सुर एक्के में मिलि के एगो अजबे सुर बन गइल रहे। जेतने चिखुरा चिचियाव, बंझुआ ओके ओतने मारे। दूनों के चिल्लहट से ओइजा ढेर लोग बटुरा गइल रहे। एगो मेहरारू से ना रहाइल त बोललि– 'आय हाय, बेचारा के काहें मुवावऽ तारऽ ए दादा? अइसन अइसन कसाई ना बने के।'

– "एही स्सारे से पूछीं ना! एके का घटल बा? हम एकर बाप हईं। खियावे–पियावे आ पहिरावे में कवनो कसर ना उठा रखीं। तब्बो ई घूमि–घूमि हमार सिकाइत करावता।" बंझुआ रोवाइन मन कइले सफाई दिहलस।

– "च्... च्... च्....! ना बेटा ना, ई तोर बाप हऽ। तोके एकर कहल माने के चाहीं" एगो पुजारी जी उपदेस दिहलन

पँड़ाइन के बड़ अनकुस बरल। बे देंहि–परान के लइका के ई सबका सोझहीं गदहा अस पीटत बा आ इहाँ का उलुटे उपदेस देबे लगनी। ऊ कहली, "अइसहीं सिकाइत थोरे करत होई? ओकरा कुकुर कटले बा? खियावल पहिरावल त सोझहीं लउकत बा। कसाई कहीं का।"

बंझुआ तिलमिला उठल, "ए सरकार जवन जूरी–ऑटी तवने नऽ? कहाँ से ए स्सारे के छत्तीस बिजन ले आईं? पहिले त ई अपना नानी का सँगे भीखि माँगि के खात रहे। हम एकरा के समझा बुझा के काम धरवलीं। एकरा के सत्तर गो रुपियो मिलेला। बाकिर जहिया एकर पेट भरल रही ई मटरगस्ती करे लागी, ना त भागि के ओही भिखमँगिन ननियाँ किहाँ चोंहपि जाई।"

अभी ऊ सफाई देते रहे तले प्रैमरी इस्कूल के मास्टर सुकुल जी ओके गिनि के पाँच गारी दिहलन, फेरु कहे सुरू कइलन– "मेहरारू मरि गइल त लइका के के पूछेला? मयभाउत मेहर कहिया के छोहगर होली। ई भुखाइल छटपटाइल फिरेला। दू दिन त खुदे हम एके इस्कूल का लइकन से खाना दियवनीं।

चिखुरा सुकुल जी का ओर निरीह लेखा तिकवत रहे। ओकरा आँखि से लोर का सँगे उमड़त कृतज्ञता, ओकरा हीनता के बड़ काया का आगा छोट परि गइल। आँखि में पानी लबालब भरल रहे आ ओकरा भीतर दीनता के करिया पहाड़ झलकत रहे। बंझुआ सुकुल जी का बाति से अउर भड़कि गइल। चिखुरा के एक चटकन लगावत फेरू झहियवलस– "एही स्सार खातिर नू हम चारू ओर से बेदीन होत बानी। चलु स्सारे घरे चलु!"

– "का रे? चिरुआ भर पनियो नइखे जुरत तोरा डूबे के? अतना अदिमी

कहऽ तारन आ ई सरवा तड़ तड़ हाथ छोड़ले चलल जाता! साफे बुझाता कि खोट तोरे में बा!" यादव जी गुरनाइ के ओके डपटन

— ए साहेब, रउवा ना बूझब एकर हाल! एकर ननियाँ—ममवा एकर चाल खराब क देले बाड़न सऽ। जेकर आदत बिगरि जाला ऊ बे लात खइले कबो सुधरेला? रउवा अनेरिहे नू हमरा पर तरनात बानीं? छोहगर बानीं त रउवे लिया ना जाईं एके अपना घरे!"

बंझुआ के बोली सुनि के सभे सिटपिटा गइल। कुछ लोग घसके सुरू क दिहल आ कुछ लोग बंझुवा के समझावे सुरू क दिहलस। यादव जी गोड़ पटकत पहिलहीं जा चुकल रहलन। चिखुरा अनबोलता लेखा चुपचाप आँस चुवावत सभकर सुनत रहे। रहि रहि ओकरा हुचुकी आ जात रहे। बंझंआ जब जानि गइल कि भीड़ पर ओकर सिक्का जमि गइल त चिखुरा के ठिठिरावत लेके चलि दिहलस।

चिखुरा.... नाँवें अस चीखुर। हाथ गोड़ सिरिकी आ कोई हत्तल। जइसे खइला बिना धीरे धीरे आगा के पेट पीठि में सटि गइल होखे। उघारे निघार, एगो अंडरबीयर पेन्हले खड़ा बा। खड़ा बा, सड़क का ओह किनारा, जहाँ एगो देंहि धजा के कड़ेर बड़ लड़िका, जुआ वाला कागज फइलाई के बइठल बा। ओकरा के घेरि के कुछ छोट छोट लइका खड़ा बाड़न स। ऊ कुछ गोटी डिब्बा में डालि के जोर जोर से हिला रहल बा, चलऽ जा आपन आपन दाँव लगावऽ जा। लइका कागज के रंगीन चरखाना में आँखि गड़ा के ताके लागल बाड़न स। सबका पाकिट से पइसा निकलि निकलि के फइलावल कागज का अलगा—अलगा खाना में रखा गइल बा। जुआ वाला जोर से डिब्बा झनझना के कागज पर उलटि देता। चिखुरा का बगल वाला लइका बाजी मारऽ ता, बाकी सबकर मुँह लटकि जाता। खेल दुबारा सुरू होता।

"अबे घोंचू के औलाद, चमरपिलाई सरऊ। एकाध दाँव चले के बा त चलु ना त भाग इहाँ से।" जुआ वाला चिखुरा के डँटलस त चिखुरा का पीयर चेहरा प भय के लहर दउरि गइल। ऊ अपना झुराइल ओठ पर एखाली जीभि फेरलस आ निरही लेखा ताकि के रहि गइल। पता ना ऊ जुआ देखत रहे कि भूखि के महँटियावत रहे। ओकरा ना मालूम रहे कि जवन जुआ अनजाने ओकर बाप ओकरा सँगे खेलऽता, ओकर हारल जुआरी ऊहे ह। थोरिकी भर सुख खातिर अनजाने धरती पर पैदा हो गइल निर्दोष बेचारा।

चिखुरा के ओइजा बेमतलब खड़ो भइल जुआ खेलावे वाला के खराब लागत रहे। ऊ कई बेरि ओके गिड़ोरि के देखबो कइलस, बाकि चिखुरा या त ओपर धेयान ना दिहलस या अन्नासो खड़ा होके खेल का ओर ताकत रहला से ओकरा जोर मारत भूखि के बहँटियवला में सहायता मीलत रहे। सुरुवे से सभकर धिरकार आ अपमान सहत—सहत ओके एकर रपटा परि गइल रहे। जुआ वाला फेर नजर उठवलस, आ ओके जस के तस दरियें खड़ा देखि के, ओकर खीसि चढ़ि गइल। ऊ झटका से उठल आ एक चबड़ा ओकरा मुँह पर जमा के अइसन ढकेललस कि चिखुरा सड़क किनारे नारी में फेंका गइल। जुआ खेले वाला बाकी लड़िकन का आँखिन में एक्के समय दू किसिम के भाव नाचि गइल— दया आ भय। फेरू जुआ वाला के डिब्बा झनझनावते ऊ चरखाना कागज वाला चारट पर ताके लगलन स। जइसे अब्बे पिटाइल चिखुरा के नारी में बिगाइल कवनो खास घटना ना होखे।

पहिले त चिखुरा ओही तरे जस के तस परल रहे फेरु हदसल उठल। ओकर कटल ओठ से खून निकलि आइल रहे। ऊ बायाँ हाथ से आपन ठोढ़ी पोंछलस आ झर—झर लोर गिरावत सड़क का किनारे किनारे अनमनाहे चल दिहलस। साइत अपना नानी का लगे। ओह घरी, ओके बस खाली आपन ननिये इयाद आवत रहे। पहिलहूँ जब—जब ऊ अपना के एकदम बेबस आ कमजोर महसूस कइलस, ऊहे ओके अपना कोरा में समेटि के, ओके असरा आ अपनाइत दिहलस। ओह बूढ़ मेहरारू के खुरुदुरा हाथ का छुवन में ना जाने कवन ताकत रहे कि लिलार पर दू—तीन हाली चुमते ओकरा ओंहाई लागे लागे, आ ऊ कवनो दोसरे लोक में पहुँचि जाय।

चिखुरा चलते—चलत सोचत जात रहे कि आजु नानी से का बताइब? ना कुच्छु ना बताइब नाहीं त बाबू मारि के मुवा घाली। पहिले ओकरा से रोटी माँगब! माई काल्हुए से खाना नइखे देले आ बाबू से लहराइ के ओके पिटवइबो कइलस। अगर जो ई कूल्हि नानी से कहब त ऊ सरापे सुरू क दी। बाद में ओकर बाबू अगर जोहत जोहत ओइजा पहुँचिये जाई त फेरू नानी से झगरा होई आ बाद में बाबू आपन कूल्हि खीसि हमरे पर उतारी। नानी करिये का सकेले? बूढ़ बेचारी.... .... हर बेरि बाबू ओके झँपिलाइ के धसोर

देला आ, ओकरा के ठिठिरावत घिसिरा ले जाला। चिखुरा के चेहरा पर अज्ञात भय बेयाप गइल। ओकर बढ़त डेग जहाँ के तहाँ रुकि गइल। बाप के मन परते ओकर दहिना हाथ अचानक पीठि पर चलि गइल– आँखि में आतंक के बादर छितरा गइल आ चारू ओर अन्हारे अन्हार.... .... खाली मुक्का, लात आ गारी आ बंझुआ के खून लेसाइल धुँधला चेहरा.... .... ना ना अब ना जाइब! मोर बाबू नू! मति मारऽ आहि रे माईऽऽ! कुछ देरी ले ओकर हाथ कपार से पीठि पर जात रहे फेरु रुकि गइल। सोझा से एगो ट्रक के हार्न जोर से बाजल रहे। चिखुरा जथारथ में लवटि आइल।

चिखुरा नानी किहाँ जाये के बिचार तेयाग दिहलस। ऊ सड़क का पटरी पर कुछ देर ले खड़ा ओइसहीं सोचत रहे, फेरू ओके बड़ भाई सन्तुआ मन परल। ओकर हाथ ओकरा दुखात ओठ पर गइल अँगुरी में करिया–लाल गाढ़ खून। आक्थू.... .... चिखुरा मुँह साफ कइलस। सन्तुआ के के घर साफे लउकत रहे। सन्तुआ के मेहरारू, ओकर भउजी, दुआरी पर बइठल कुछ सीयत रहे। चिखुरा धीरे धीरे गोड़ धरत ओकरा आगा जाके खाड़ हो गइल।

– "करिखापोतना, चलि आइल हूरे खातिर। जनाला कि बाप कमा के एही जा गँजले बा!" चम्पवा भुनभुनाइल

– "भइया नइखन?" ए भउजी, भउजी?

– "चल अइले तें हूरे! बुझाता कि एइजा भंडारा सजल बा! अरे मरकिलौना, कमा के त देबे अपना अठराजी के आ ठेंसे खातिर छिछियात एहिजा अइबे?" चम्पवा के चेहरा लाल भभूक हो गइल।

– "खिसियो मति रे भउजी! हम कुछ कहितीं ना बाकिर बरदास के बहरा हो गइल बा भूखि। बाबू त खाली मरबे नू करेले, केकरा से कहीं रे भउजी? चिखुरा अपना कटाइल ओठ पर फेरू जीभि फेरलस

चम्पवा ओकरा चेहरा पर खून लागल देखलस फेर देहीं में पाँकि आ धूरि। ओकरा दया आ गइल चिखुरा के दसा देखि के। ऊ घर में ढूकि गइल। फेरु लवटल त हाथ में दूगों रोटी आ आलू के तीन चार गो फरी रहे। चिखुरा दीन भाव से चुपचाप टुकुर–टुकुर ताकत रहे। ऊ कबो रोटी के देखे, कबो भउजी के। ऊ सोचलस भउजी कतना दयालु बिया, गरियाइयो के रोटी त दे देत बिया बाकिर ओकर मयभा महतारी– ओफ चुरइल बिया पूरा। पता ना काहें ओकरा से जरत रहेले। चिखुरा, चम्पवा का हाथ से रोटी लेके ओही जा धइल एगो पत्थल का पटिया पर बइठि गइल। चम्पवा लोटा में पानी लियाइल, "पहिले आपन हाथ मुँह त धोइ ले, फेर खइहे!" चिखुरा एगो हाथ धोइ के, ओही से कुल्ला कइलस आ हाली–हाली रोटी खाये लागल।

साँझि होखे लागल रहे। सूरुज के किरिन अपना आँच के सहोरि के लवटत रहली सन। चिखुरा अपना भउजी के दिहल रोटी खाइके पारक में चलि आइल रहे आ एगो फेंड़ तर बइठि के ऊँघात रहे। रोटी के खोमारी पूरा चढ़ि चुकल रहे, ऊपर से ओकर पूरा देहिंयो बत्थत रहे। ऊ ओही जा ओठँघि गइल। जब नीनि टूटल त अन्हार हो गइल रहे। पारक में जगहे जगह बिजुली के बलब जरि गइल रहलन स। ऊ उठि के नल पर गइल। दू चार छपाकी आँखि पर मरलस फेरु डगमगात घरे चल दिहलस। ओकर भूखि फेरु जोर मारे लागल रहे। दू दिन से छछाइल जरल पेट में ऊ दू गो रोटी का जनी काहाँ बिला गइल रहे। रहि रहि ओकर पेट में कुछ अउँड़ेरत रहे।

दुआरी पर गोड़ धरते मयभाउत भाई चिकरलि, "काऽ रे? खाये के जून हो गइल? कहीं ठेकान ना भेंटाइल हा दू दिन? आ गइले लीले के बेरा? हरमेसा एकर भरसायँ सुनुगते रहेले!"

चिखुरा उल्टे गोड़े बहरा चउतरा पर लवटि आइल आ चुपचाप बइठि के बंझुआ के जोहे लागल। बिना ओकरा खइले, ओकर महतारी टिकरियो ना दीही, ई बाति ओकरा अच्छी तरे मालुम रहे। ओठँघल कबो आसमान के तरइन के देखे कबो बन्न केंवाड़ी के। बाप अइबो कइल। सिकड़ी बजावते दुआरी खुलल आ ओकरा ढुकते फेरु बन्न हो गइल। रहि रहि ओकर पेट गुड़गुड़ात आ अँइठत रहे। ऊ अपना भूखि के आड़त–आड़त परेसान हो गइल रहे बाकिर बाबू का डर का मारे, हियाव ना जुटे कि ऊ अपना नवकी माई से जाके खायेक माँगे। रात धीरे–धीरे गहिराये सुरू हो गइल रहे। ऊ चुपचाप हाथ गोड़ बटोर के किकुरी मारि लिहलस।

अतने में कँवाडी खुलल। ओकर माई बहरा निकलल। ऊ ओही जा भइल अपना बाप के खटिया पर बइठल देखलस। ऊ आपन कुरता कान्ही पर धइले रहे आ कुछ रुपया हाथ में लेले गीनत रहे। घुरली बहरा भइल ओनिये तिकवत रहे। चिखुरा धीरे से उठल आ धीरे–धीरे आके दुआरी का सोझा खाड़ हो गइल।

ओकर देंहि रहि रहि सिहरि उठत रहे। बंझुआ के नजर एखाली उठल। चिखुरा के देखते पुछलस, "का रे अभी तें जगले बाड़े?, घुरुली एखाली पाछा घूमि के तकलस फेरु बंझुआ का लग्गे जाके ओकरा हाथ से रुपया झपट लिहलस फेरु ओके हाली–हाली अपना फुफती में खोंसत चनकल, एकरा मारे त रोवाइन परान भइल रहऽता। दिन भर जाने काहाँ काहाँ छिछियाइल करी आ जब दू घरी तहसे बोले–बतियावे के मोका मिली त ई खलल डाले खातिर हाजिर हो जाई!"

"का रे? सबेरे काम पर नइखे जाए के का? कामचोर ससुरू जाके सूतू नाहीं त जवन झापड़ देबि कि भुभुन फूटि जाई!" बंझुआ खाड़ा होत तड़कल

चिखुरा एक्को लफ्ज मुँह से ना निकललस। बस बल–बल रोवे लागल। ओकरा आँखि से आँस गिरत देखि के ऊ कुछ भभतल फेरु–आवाज नरम करत पुछलस, "का ह रे? अभी खइले नइखे का?"

अब का तहार–हमार हाड़–माँस खाई? सँझिये खान त भर ढींढ़ ठुँसलस हा। तोहईं एकर दिमाग चढ़वले बाड़ऽ। एके एकर ननियाँ जवन सिखाई–पढ़ाई तवने नू करी! देखि लीहऽ ई कहियो हमार जान लेके रही।" घुरुली पोंहड़क फइलावे सुरू क दिहलस। बंझुआ के देंहि अगियाये लागल। नया मेहरारू के खिसियाइल देखते मातर ओकर बिचारे काहें दो बदलि जाला।

चिखुरा नदान थोरे रहे। ऊ खूब नीक तरे समझत रहे कि ए बेरा ओकर बाप ठर्रा पी के आइल बा। नसा में एघरी ऊ ओकर कुछऊ ना सुनी। तब्बो ऊ जीउ कड़ा कइके बोलल, बाबू, हम परसों से कुछ नइखीं खइले....।"

बंझुआ पर ओकर कवनो असर ना परल। ऊ निरदई अस चिखुरा के पँखुरा धइलस आ धसोरि दिहलस। घुरली झपटि के केंवाड़ी बन्न कइलस आ घूमि के नाज से मुस्कियाइल, जइसे दुनियाँ ओकरा मुट्ठी में होखे। फेरु ऊ अइँठत बंझुआ का लग्गे जाके खड़ा हो गइल। बंझुआ अपलक ओकरा देंहि का उतार चढ़ाव के ताकत रहे। घुरली के मुस्कियात चेहरा ओकरा नसा के अउरी तेज कइले जात रहे। घुरली थरिया में रोटी तरकारी लिया के खटिया पर ध दिहलस फेरु लोटा के पानी लियाइल आ भुइयाँ धइके बंझुआ का बगल में बइठि गइल, "खात काहें नइखऽ? कि खियावे के परी?" बंझुआ रोटी तुरलस आ तरकारी संगे उठाइ के, उल्टे घुरली के खियावे लागल। घुरली खिलखिलाइ के जोर से हँसल आ आपन मुँह बा के खा लिहलस। बंझुआ मदहोस खाली ओकर खाइल देखत रहे।

किरिन फूटलि आ चउतरा का बायाँ अलँगे सरकारी नल पर पानी भरला खातिर हउँजार मचि गइल। चउतरा पर किकुरी मरले चिखुरा पर केहू के धेयान ना गइल। घाम तनी अउर कड़ेर भइल त लोग नहाये खातिर नम्मर लगावे सुरू क दिहल। घाम तनी अउर चटकार भइल। चिखुरा के जाड़ा से सिमसिमाइल देंहि में हरकत भइल। अब ओकर गोड़ सोझ फइल गइल। बंझुआ उठि के बहरा आइल। ओकर नजरि चिखुरा पर परते खीसि चढ़ि गइल। गरियावत झपटल आ सुतल चिखुरा का पीठि के लतियावत चिचियाइल, "कारे स्सारे अभिन टेम ना भइल तोर? कब तें काम पर जइबे?"

चिखुरा पीठि सुहुरावत उठल। मिचमिचाइल आँखि से बाप के निरदई चेहरा देखलस आ जइसे ओकरा बेखून का देंहि में करन्ट दउरल होखे, उठि के देवाल का कोना धवरल। झाडू उठाइ के बे एने ओने तकले धवरि गइल। पढ़निहार लइकन का हास्टल कालऽ जात–जात ओकर सोचे समुझे के सकती थोरिकी देखि खातिर लवटि आइल। भूखि का मारे ओकर कपार झन झन करत रहे ऊ सोचलस... .... हमहूँ सौ पचास रुपिया पाईला, बाकिर कब्बो चएन के दू गो रोटी मवस्सर ना भइल। कबो हास्टल के लइका बाँचल–खुचल पाव–रोटी भा भूजा के दिहन स त खेमटाव हो जाई ना त दिन भर अइसहीं भूखि बहँटियवला के खेला सुरू हो जाला। हमार कमइलको रूपयवा बाप छीनि लेला। भीखि आ नोकरी में का अंतर बा? आजु ओकर माई जीयत रहित तऽ... .... अतने भर सोचि पवलस ऊ..., फेरु कब दूनी अन्हार हो गइल आ ऊ चकराइ के दरियें उलटि गइल। ओकरा हाथ के झाडू फेंका गइल।

सड़क पर जात दू–चार गो अदिमी धवरलन फेरु भंगी जानि के कगरिया गइलन।

– एगो टीका वाला पंडिज्जी ओकरा ओरी ताकि के कहलन– "राम!– राम! बित भर के लइका बाड़न सऽ आ सबेरहीं ठर्रा ले लेत बाड़न सऽ!" ●●

अभागिन

नरेन्द्र शास्त्री

तीन बरिस बाद आज फेरू दोसरहा हाली अपना बाप के देखते सुगिया मुँह फेर लेहलस। मनुआ के फटहा अंचरा से ढाँपि के कोरा में समेटत, एकोर क छाती मुँह में थमवलस। लरिका थोरि देर ले चुभुर–चुभुर कइलस फेरू चिचियाये लागल। सुगिया ओकर मुँह घुमवलस आ दोसरकी छाती ओकरा मुँह में डाल देहलस। कुछ सेकंड बाद मनुआ फेरू चिचियाये लागल।

लरिका के डँकरल सुनि के, बगल का झोपड़ी से सुनरी निकलि आइल, ''अइसे कहिया ले चली रे मलेच्छिन, लरिका के मुवाइये के दम लेबे? खइबे–पियबे ना त दूध होई कहाँ से? फेर तुहीं बताउ, हे लइका क कवन कसूर बा? अब त एकरे के देखि के तोरा संतोष करे के बा।'' सुनरी पद में काकी कहाउ। जब सुगिया ना बोलल त ऊ लइका के ओकरा कोरा से छीन लेहलस, ''हमरा घरे बकरी के दूध बा। देख, तोर बाप कई दिन बाद आइल बा। दू–चार गो रोटी सेंकि ले– देहि जाँगर ना चलइबे त कइसे काम चली?''

सुनरी के चलि गइला का बाद नगेसर बोलल, ''तोरे के लिया जाए आइल बानी बेटी। इहाँ अकेल औरत जात के रहल ठीक नइखे। फेर मनुआ पाल पोसा जाई त....'' बीचे में बात काटत सुगिया बोलल, ''अब कहीं ना जाइब। बाबू जवन करम में लिखाइल होई तवन होई। जब सोहागे ना रहल, त हे हाड़ चाम में का धइल बा?''

बूढ़ नगेसर के आँखि छलछला आइल, हमरो कहल ना करबे। अरे तोर बाप हईं हम।''

''तहसे त तीन बरिस पहिलहीं नाता टूटि गइल रहे बाबू, जब...'' आगे सुगिया ना बोल पवलस ओकरा रोवाई फूटि परल। नगेसर उठल आ धीरे–धीरे मड़ई से बहरा निकलि गइल।

सुगिया के आपन माई इयाद आइल। बेचारी कबहूँ सुख क मुँह ना देखलस। ओकरो भागि में करिखा लागल रहे। रात–रात भर बेमारी में खाँसत रहे। हाड़े हाड़ हो गइल रहे। राती खान बाप ताड़ी पी के आवे। पहिले लाड़ देखावे फेरू पीटे लागे। माई के पिटाइल मन परते ओकरा फेरू रोवाई बरे लागल।

फजीरे सुगिया उठि जाव आ एक टुकी बासी रोटी खाइ के बकरी चरावे जंगल का ओर चलि जाव। नगेसरा धुड़के, ''देख, गाभिन बकरी ह। गड़हा–गड़ही मत फनइहे। ए बेरी बगड़वा बकरा से लगवले बानी। दुइयो बच्चा दे देई त पोसल सुफल हो जाई।'' सुगिया समझ ना पावे कि बगड़ा बकरा से लगवला के का माने होला?

भरटोली से थोरिकी दूर पूरूब लालाराम के जंगल पड़ेला। जंगल त अब रहे ना, बन जलेबी, आम, महुआ के फेड़ आ कंटीली मकोय के कइ गो झाड़

झंखाड़ एह बात के साबित करऽ सन कि कब्बो एइजा छोट मोट जंगल रहल होई। एही बंजर क्षेत्र में भरटोली, नोनियाटोली आ चमरटोल क लइकी, औरत आपन–आपन बकरी चरावे आवें सन। ओही में रहे भगजोगनी। आँखि में चटकार काजर, लिलार पर बड़की टिकुली। मटक–मटक बतियावे त बड़ा नीक लागे। सुगिया से ओकरा खूब पटे। एक दिन मोका देखि के ऊ पूछलस, 'ए भउजी बगड़ा बकरा से बकरी लगवला पर का होला? ठठाइ के हंसि देहलस भग जोगनी, 'अब्बे जानि के का करबू ए बाछी? एक दिन कूल्हि बुझा जाई।'

लेकिन कुछे दिन बीतत–बीतत सुगिया जान गइल कि 'बगड़ा बकरा' का होला, महतारी के मुअला का बाद नगेसर नया बियाह क लेले रहे। ऊ जब रोवत रहे त टोला के सकला फुआ समझवले रहली, ''तूँ अनेरिहे रोवत बाड़ू। सादी बियाह के बाद तूं त चलि जइबू बुढ़वा के देख भाल के करी? फेर कुल पलिवार के चलावहू वाला त केहू चाही।'

त ई कूल्हि ना समझत रहे सुगिया। दिन भर बकरी चरावे आ जंगल से लकड़ी बीनि के सांझि खा घरे आवे। फेर कनिया माई का हुकुम पर चउका–बरतन आ दाल रोटी बनावे। सांझि होते ओकर बाप गनेसी नोनिया के संगे ताड़ी के लबनी लिहले आवे। पच्छिम का कोठरी में कनिया माई चहकत पहुंचि जाव। गनेसी नोनिया चिखनी निकाले आ अंगौछी पर ध देव फेर तीनू मिल के खूब पियन स। कहियो–कहियो ओही जा पी पा के ढिमिला जा सन। कनिया माई गनेसी से खूब बखान करे। चहकत कहे लागे, ''तूं ना बुझबे बबुनी। तोरा बाप के कतना मदद ऊ देला। लकड़ी के कार बार बा ओकरा। हाकिम–हुकाम मानेलन स। पता नाहीं काहे, ओ घरी काहे ऊ अतना नेह–छोह देखावे।

पछिली रात बकरी दू गो बच्चा बियाइल। दूनो पाठी। नगेसर खूब खुस रहे, 'तीने महीना में तीन सौ रूपिया मिल जाई इन्हनी के।' तहिया कनिया माई सुगिया के अलगा ले जा के समुझवलस, ''जुग जबाना के आगि लागो। छ महीना में तोहार हाथ पियर करबि त चैन मिली। तोरा बाबू के आजु एही से परमानापुर भेज रहल बानी। लइका तंदुरूस्त बा चीठी–चपाती बांचि लेला। लैनमैन के काम करेला आ बिजुली के फिटिंग सीखेला।'' लजा के भागि गइल रहे सुगिया। घर में लुका के कनिया माई के अयना चोरा के आपन मुँह देखलस, ''हाय राम, हम त भकजोगनी भउजी का बरोबर हो गइनी।''

रात भर सुगिया के नीन ना परे। पियर होत हाथ ढोलक के थाप, लाल पाढ़ के बियहुती पहिनि के ऊ ससुरार जाई ओकरा भीतर गुद–गुदी बरे लागल। फेरू अचके खिलखिलाइल, सुनि के चिहुंक गइल। कनिया माई का जानी का बुदबुदात रहे। बाबुओ घरे नइखन। कहीं ओकरा हावा–बतास त ना लागि गइल। अभी दुइये दिन पहिले मदना बो के चुरइल धइले रहे। हे काली माई, हमरा कनिया माई के रइछा करिहऽ। ए बेरी कवनो मरद के आवाज बुझाइल। ऊ डेराते डेरात उठल आ कनिया माई के दुआरी ले चलि आइल। फाँफर से जवन देखलस त करेजा धक्क से हो गइल। गनेसी कनिया माई के धइले फुसफुसात रहे, ''फिकिर मत करू फुलबसिया हम तोरा के कवनो तकलीफ ना होखे देब।''

सुगिया भागि के अपना कोठरी में चलि आइल आ सिकड़ी चढ़ा देहलस। त इहे ह 'बगड़वा बकरा' .. ऊ बुदबुदाइल, आ ओकर मन घिरना से भरि गइल।

फागुन बीतते ओकर आँगन गवनिहारिन से भरि गइल। ढोलक बाजे लागल। अंगना में मड़वा गड़ाइल। गवनिहारिन कढ़वली सन्

''जइसन बनवा के उकठल काठ।
ओइसन बर बाटे करिया लुवाठ।।''

साँचो ओकर मरद बिसेसर करिया रहे बाकिर चेहरा पर चमक, गठीली देहिं आ चाल में मस्ती। सुगिया केंवाड़ी का आड़ से देखलस त ओकर मन खिल गइल। ओ दिन ऊ बुझला अकेले आइल रहे। अट्टीदारी पट्टीदारी के लोग छक के ताड़ी पियल गनेसी ओह दिन खूब उछरत रहे।

परमानापुर पहुंच के सुगिया के मन तनी जरूर उदासल बाकिर रात खा जब बिसेसर ओके अपना अँकवारी में भरलस त ऊ लजा गइल फेरू मने मने अपना भाग के सराहे लागल। ऊ ओह दिन कहले रहे, ''तोरा के पावे खातिर हम आपन कूल्हि पूंजी गँवा देहनी।'' सुगिया डेरा के हटि गइल। ऊ फेरू अंकवारी में बान्हि लेहलस, अब का डेरा तारे पगली। तोरा के ओह दिने हम मन में बसा लेनी जहिया असेगा का मेला में तोरा के देखले रहनी। बाकिर तोर बाप बड़ा जालिम बा सात सौ रूपिया हमरा से गिनवा लेहलस।''

सुगिया फफकि के रोवे लागल बिसेसर का

गोदी में, ''साँचो कह तानी। हम कुछ नइखीं जानत।'' ओकरा के अपना भीतर समेट लेहलस बिसेसर, ''पगली, तू मिल गइले इहे बहुत बा मेहनत मजूरी से दिन ओरा जाई।''

सातवाँ दिने जब नगेसर ओकरा से भेंट करे आइल त सुगिया क मन कसैला हो गइल। ऊ बाप से कहि देहलस, ''तू बेटीबेचवा हउवऽ। आज से मत अइहऽ हमार हाल–चाल पूछे।''

तीन बरिस कइसे बीति गइल सुगिया के पते ना चलल। बिसेसर दिन भर मजूरी करे आ खाली टैम में लाइममैन साहब का संगे बिजली के काम देखे। पाँच सात रूपिया भेटा जाव ओकरा। लैनमैन कहे, ''खम्भा पर अतना फुर्ती से चढ़ि के काम करे वाला कवनो लैनमैन ना होई, भगवान चहिहें त तोरा के परमानेन्ट लैनमैन बनवा के छोड़ब।''

पता ना काहे लैनमैन के देखि के सुगिया मुँह फेरि लेव। ओकर कचर–कचर पान खाइल आ फिच–फिच थूकल ओकरा ना सोहाव। पचास के उमिर में रंडी–मुंडी के बात करे। सुगिया के देहिं जरि जाव बाकिर रात खा बिसेसर ओके समझावे ''रंड़वा आदमी अउर का बतियाई रे। ओइसे ऊ खराब अदिमी ना ह। ओकरे कारन त पाँच रूपया भेटा जाला।''

सुनरी काकी मनुआ के सुगिया के कोरा दे गइल। ओकर पेट भरल रहे एही से आवते सूति गइल। ओकरा कपार पर हाथ–फेरत सुगिया के मन फेरू हिलकोरा खाये लागल, ओफ, अतना जालिम निकलल लैनमैन। आधी रात खा जगा के ले गइल ओकरा मरद के। कहे, ''बिजली के रूपया ना जमा कइला पर सभापति के टीबुल क लाइन काट देहल बा। जोड़ला पर पचीस तीस रूपया भेटा जाई। आधा तू ले लिहे। अभी बारह बजल बा।

एक बजे लाइन आई। खतरा के बात नइखे। बाकी हम देख लेब। संगसाथ का कारन निभावे के परेला। बेचारा के फसल सूखऽता। नियम फियम कहाँ ले देखल जाई।''

जात खान बिसेसर सुगिया से कहलस, ''ए बेरा ओतना लम्मा से ना लवट पाइब। सभापति किहाँ रहि जाइब। आ चलि गइल।

अन्हारा टार्च का फोकस में खंभा पर चढ़ल बिसेसर आ चमगादड़ अस लटकि गइल। लैनमैन कहऽता,–''जल्दी करू भाई, घबड़इहे जिन बिजुली के लाइन अभी एक बजे आई अभी बारह चालीस भइल बा।''

एक ब एक अन्हार में तेज अंजोर कउंधि गइल। एगो लपलपाहट आ तेज कउंध में एगो चीख फेरू नीचे एगो करिया पहाड़ भहरा गइल।

'अब का होई दादा।' लैनमैन कहलस, हरामी स्सारे लाइन दे दिहलन स। कि घड़िये स्लो रहलि हा? सभके साँप सूंघि लेहलस। ''घबड़इला से का होई? अरे कहा जाई कि तार चोरावे चढ़ल रहल स्साला।'' सभापति कहलन।

सबेर भइल बाकि सुगिया खातिर हमेशा के अन्हार। सभापति, लैनमैन का संगे दरोगा पुलिस आ ढेर आदमी। सुगिया चिचिया–चिचिया के कहे, ''कूल्हि कसूर लैनमैन आ सभापति के बा। आधी रात के जगा के ले गइल हतियार ओघरी कहे कि हम कूल्हि देब लेब तू लाइन–जोड़ दिहे।'' दरोगा ओके डँटलस, ''कइसे मान लीं तोर बात बिजली इन्सपेक्टर लिखित रपोट कइले बाड़न। लाइनमैन रात भर उनका क्वाटर में रहे। चोरी करते रहे ऊ अब पा गइल ओकर मजा।''

सभापति मीठ आवाज में कढ़वलन, ''हँ सरकार एने का इलाका में कुछ ताँबा के तार बाँचि गइल बा। चोर एनिए चोट मारेलन सऽ हजूर।''

ई सफेद झूठ बरदास ना भइल सुगिया के। ऊ झपट के सभापति क कुर्ता ध लेहलस, ''मरकिनौना झूठ कम बोल आ सुगिया बेहोश हो गइल ए अन्हेर से।

पंचनामा भइल। टोल–परोस क लोग जी हजूरी में लागल रहे। केहू असलियत ना जानल चाहत रहे। बुधुआ भर सभापति के पक्ष लेत कहलस, ''राम–राम भला सभापति जी झूठ बोलिहें। आरे ई सब करम क खेल ह।'' सुनरी काकी समझावे,'' जीउ छोट जिन करू। अतना सुघ्घर लरिका तोरा कोरा बा। समुझिहे कि इहे मोलाहल ह।'' सुगिया फफकि–फफकि रोवे।

'सब समुझत बानी रे। भरटोली वाला स्वार्थी हउवन सऽ। सभापति का जमीन पर बसला से चापलूसी करत बाड़न स। आरे ई कूल्हि चील्ह–कउवा, हउवन स पावँ स त जियत आदमी के माँस नोचि के खा जाँ स।'' सुनरी काकी ओकरा धारना के मरहम लगवलस।

मुनुवा के तेल लगावत–लगावत उदास हो गइल सुगिया। दिन भर गारा–माटी कइला से देह में दरद उठे लागेला। मजूरी ना करी त खाई का? लइका कइसे पोसाई? सुनरी काकी ना रहो त ए बेचारा के

के संभारी। दिन भर एके लेले कहाँ–कहाँ फिरित ऊ? मालिस कइला का बाद ऊ मुनवा के दूध पियावे लागल। नजर उठवलस त सोझा बिन्दा आवत लउकल। ननजी काका के लइका। ओकरा निगिचा आवते सुगिया के आँख भरि आइल, 'तू कइसे डहर भुलइलऽ भइया?''

''नगेसर काका के तबियत बहुत बिगड़ गइल बा। केहू सेवा टहल करे वाला नइखे।''

–'आ कनिया माई बइठल–बइठल का करेली?' सुगिया व्यंग से पुछलस। हालांकि ओकरा भीतर कवनो अनजान आशंका से धुकधुकी बढ़ गइल रहे।

–'तोके नइखे मालूम का?'

–'कवन चीज'?

–''अरे ऊ त साल भर पहिलहीं गनेसी नोनिया का संगे कलकत्ता भाग गइल।''

सुगिया के आँख से टप्–टप् आँस चुवे लागल। ''बाकिर बाबू त हमके कुछ ना बतवलन।''

–'तू मोका कहाँ देहले।'

सुनरी काकी ई सुनत रहे। बोलल, ''सुगिया अब तू बापे का लगे चल जो। इहाँ कवन दउलत गड़ाइल बा। कतहूँ जाँगरे चला के खाये के बा। फेर नइहर त नइहरे ह।

रात केहू तरे बीतल। भोरहीं सुगिया आपन कूल्हि समेट के बिन्दा का संगे भरटोल से बहरिया गइल। टीन क बक्सा आ एगो बोरी कपार पर लेले बिन्दा आगे–आगे चलत रहे। कभी एही रहता से ऊ लाल पाढ़ के साड़ी पहिन के परमानापुर आइल रहे। बिसेसर का संगे। तब मन उछरत रहे। आजु गोड़ एक–एक मन के हो गइल बा।

ओकरा घर के बहरा भीड़ रहे। सुगिया के मन धुकधुकाये लागल। मेहरारू बाहर भीतर आवत जात रहली सन। एकोर बढ़ई बाँस रसरी आ मूंज के जोरत बेवान बनावत रहे। सुगिया कूल्हि समझ गइल। सीधे घर का भितरी गइल। जमीन पर ओकर बाप सुतावल रहे। धरीक्षन बो ओकरा कोरा से लइका ले लेहली, ''बबुनी थोरही देर पहिले परान छूटल हा उनकर। जाये–जाये का बेरी ले सुगिया–सुगिया कहत रहलन।''

चेहरा पर से धोती हटा के कुछ देर ले बाप के शांत चेहरा निहारत रहे सुगिया फिर पुक्का फार के फूट परल, ''आहि हो बाबू! अब हम कहाँ जाइबि हो ....?'' ओकर चिल्हिकल सुनि के टोला भर का मेहरारून के आँखि बहे लागल। ●●

गजल

अशोक कुमार तिवारी

कलम के का दबा पाई कबो हथियार के ताकत,
अबर के हाय के आगे कहाँ बरियार के ताकत।

जगह के बात थल पर गज, जले घरियार के ताकत,
मजूरन के बिना कहंवाँ बा ठीकेदार के ताकत।

मिटावत रह गइल ना मिट सकल आवाज गुरबन के,
कबो बारूद गोली के कबो तलवार के ताकत।

हईं गामा न दारा सिंह न कवनो राजनेता हम,
रहेला साथ अपनन के हमेशा प्यार के ताकत।

भइल ताकत बा जादा तऽलगा दीं नेक कामन में,
निरीहन पर होई अजमा के का, बेकार के ताकत। ●●

❑ सूर्यभानपुर, लालगंज, बलिया

दिनेश पाण्डेय के तीन कविता

बने-बने पतझार

घास चुलबुली पीठि पऽ, धइले ओनत माथ।
छली घाम के मिन्नती, सँवरी झटकति हाथ।

घाम सहाउर ना रहल, तन सिहरावन छाँह।
बिरिछनि का जवरे हिले, हवा डारि गलबाँह।

तरी ओठ के चलि गइल, परली दूब मलीन।
आतप आँगछ जानि के, मन भइलसि गमगीन

टेसू फुलवा का खिलल, लागल बन में आग।
तितिकी ना धूआँ उठल, जरल जीव हतभाग।

पात झुराइल गुम गइल, मिल माँटी मँझियार।
लहुरा अँखुआ उग रहल, गते गाछि के डार।

दिन कुछ ऊसठ हो चलल, फगुनहटी आगाज।
मद्धिम-मद्धिम उठि रहल, जंगल के आवाज।

इक्का-दुक्का सुर उठल, कोरस में तब्दील।
तलछत तरे पहाड़ के, उमड़लि आबाबील।

बनखंडी निर्जन भयद, सूखल तरुअरि डार।
बादुर-कुल उलुटे लटक, साधसि वामाचार।

दिन में लागसि जोगिया, अति अबोध अविकार।
होते रात अन्हार में बधिकन के सरदार।

धुआ सरिस लवले रहस, घोंचू भद बदनाम।
जसहीं धरस चपेट में, चिमट चबावस चाम।

मौसम अस गर्हुआह बा, उजरल टाटी बाड़।
पछिया हवा ओसार में, उलिछे धूर कबाड़।

करइल छँउड़ी छज रहल, भले साख बिनुपात।
समय बतइलसि ठीक से, इतरिन के औकात।

महुआ ठाढ़े कोंच भर, तन उघार बदजात।
सुध-बुध नाँसल बावरी, इचिको ना सरमात।

देहगंध केकर बसल, हवा चलल मदमत्त।
पूरनकाम छिछोर के, चाले हऽ अलबत्त।

गुलमोहर बन्हले रही, जूड़ा गुच्छा फूल।
कवन झुरावल निरदयी, नोंचि बिखेरल धूल।

उसकी-बिसकी करि रहल, गदरल तीखी नीम।
करुई में गुन कम कहाँ, कुछुओ कहस रहीम।

टटकी टूसी पर चढ़ल, चटख धूप के रंग।
कब तक गोपन रहि सकी, मन में दबल उमंग।

दुपहरिया पेन्हे पियर, ढुलकल साँझ सियाह।
गरजल भयगर राति में, मानर बेपरवाह।

रात झुटपुटी झोंटही, जंगल गझिन भयार।
सूखल पतई ढेर पऽ, चुरमुर धुनि पगचार।

गाढ़ राति गुमसुम हवा, अहथिर साल बलूत।
अस लागसि अँधियार में, सिर अलगवले भूत।

चरबत्ती बारत रही, झरबेरी के आड़।
सैन करी भकजोगनी, कहाँ पराइल राँड़।

अगवासा अमगाछ तऽ, लागल जरे मसाल।
भीत मटीली ऊपरे, थिरिक रहल बैताल।

नवहिन के सहगीत में जिनिगी के अहसास।
बढ़ल गहिर अँधियार में, तरइन आँखि उजास।

पूरुब में सुकवा उगल, बात रहल बेअंत।
भोरहरी के सपन में, बगरल सरस बसंत।

कहईं कोइल बोलली, सिहर गइल बँसवार।
एक परींदा उड़ि गइल, जेने कुछ उजिआर।

सगरे पसरल जात बा, जंगल में पतझार।
केहू जीए भा मरे, केकरा का दरकार?

ऋतु-चक्र

धुंध-मेह पानी-अरक, कारन काज समंध।
फेरु रंग रचना बिबिध, पसरल जगत प्रबंध।
\+ + +
अबो करिअई राति के, साइद परलसि भोर।
एक बरन धरती गगन, भादव घन घनघोर।

कइ दिन ले झापस रहल, उपटल आर-डँड़ेर।
सलसल सीलन से सभर, मसकल थून बँड़ेर।

भादव भद्द उड़ाइ के, तब पइहें संतोख।
अपने जब बाउर भइल, का दीं अनका दोख।
\+ + +
दिन दूरसा कुआर के, सितिआइल अस रात।
चढ़त घाम चमड़ी जरे, उदबस साँझ-परात।

धान पौध गाभा भरल, उगल आस के पंख।
उतरत हथिया ना परल, मन कुछ भइल उझंख।

साइद चितरा चित रखे, परि जाए कुछ बून।
तब भेंटी परिवार के, चाउर दूनों जून।
\+ + +
धवर बछेरी चाननी, धावल सारी रैन।
कतकी रात परात ले, जगत रहल बेचैन।

अनमुनहे सुकवा उगल, थोरिक देर बिहान।
डोलडाल निबटाइ के, चचिया गइल नहान।

पातर तन खोंछा कमर, सूनापन भर आँखि।
बिधना काहे बाँव हो, नुचल परेवा पाँखि
\+ + +
सबुज रंग के दिन गइल, पियरे लागे नीक।
पाकल बाली जानि के, करे महाजन दीक।

चूल्हा पारत सुखमनी, आँचर ढलकल कान्ह।
चरकल लूगा देखते, टूटल धीरज बान्ह।

अगहन अइते पहिलहीं, भरखर होइत धान।
ई दिन ना देखे परित, पूरित सभ अरमान।
\+ + +
फूस पलानी झंझरी, झिरझिर बहे बयार।
पूस-राति के चाननी, खोजत फिरे पयार।

दिन के काया खिन भइल, कुहरा घना सुफेद।
परस हाथ के हाथ पऽ, लागे भइलसि छेद।

दरद दिहाड़ी देत बा, पेट करे सनताप।
अब बकसऽ हो रामजी, कवनि जनम के पाप।
\+ + +
सूनसान धनखेत में, पैरा परल पथार।
लगल खबातिन सोहनी, आर खाड़ मउआर।

लउकत मेघ अकास में, तनिका परित मघेर।
बुचिया के ब्यहतीं असों, होत जात बा देर।

सरकल आधा माघ अब, कंबल उतरल कंध।
सभकुछ भइल सुहावना ,बीतल दिन जड़ अंध।
\+ + +
बहते फगुनहटी हवा, तन मन भरल उमंग।
उठल फुरेरी ठूँठ में, छतनारी के संग।

सिव के बान्हल सरहदा, भइले मदन जीवंत।
जड़-चेतन पऽ छा गइल, दिब परभाव बसंत।

अबो प्रकृति में सेस बा, जीवन राग अभंग।
करि लिहलनि बस आदमी, आपन मुँह बदरंग।

कुछ असहीं

फगुआ के अनवाध में, चइत दुआरे ठाढ़।
ललकी किरिन परात के, तकलसि घूघा काढ़।

मादक महुआ गंध में, डूबल बनी समूल।
हवा कटखनी बिन रहल, मउनी भरि-भरि फूल।

चइता के धुन अस चढ़ल, भइल असंभो बात।
लवँडा संग जटेसरो, नचले सारी रात।
\+ + +
ए बबुआ बइसाख के, बतिया तू जनि पूछ।
तरबन्ना का राहि में, सभ सझुरावसि मूँछ।

दिन चढ़ते हू-हू करत, बहे डहेंडर पौन।
अइसन में असमान में, पानी धइलसि कौन?

बहुते जस यहि माह के, का कहँ कहल न जाय।
बूढ़ कहस बइसाख में, गदहा जात मुटाय।
\+ + +
हेठ जेठ खूबे तवे, गरमी चघल कपार।
दिन हाँफे हाँफे हवा, फेंड़-पात जरि छार।

उखम-बिखम देही भरल, बस्तर सहल न जाय।
तन मन सीतल होय के, निहफल सभे उपाय।

मिरिगडाह डाहे डहे, झाँवर धरती देह।
अबहूँ तऽ घर आइजा, कहाँ लुकइलऽ मेह।
\+ + +
भइल फिजा कुछ दोसरे, चढ़ते माह असाढ़।
बादर घिरल अकास में, छइलसि करिया गाढ़।

बदर-बदर पानी परल, ठंडक के अहसास।
तिरपित तिसना जीव जड़, सोन्हाँ गंध उसास।

मेघा हर घर बरखिहऽ, जनि ललचइहऽ जीउ।
ऊ घर कबो न लंघिहऽ, जिनके घरे न पीउ।
\+ + +

सावन मनभावन सखी, झींसी बरखे मेह।
सभ बजूद रस में भिगल, हिया बरोह उरेह।

नीक लगे धानी चुनर, गदरल धरती देह।
कजरी हिना हिंडोलना, सगरे परगट नेह।

दरद दिहाड़ी देत बा, पेट करे सनताप।
अब बकसऽ हो रामजी, कवनि जनम के पाप।
\+ + +
सूनसान धनखेत में, पैरा परल पथार।
लगल खबातिन सोहनी, आर खाड़ मउआर।

लउकत मेघ अकास में, तनिका परित मघेर।
बुचिया के ब्यहतीं असों, होत जात बा देर।

सरकल आधा माघ अब, कंबल उतरल कंध।
सभकुछ भइल सुहावना ,बीतल दिन जड़ अंध।
\+ + +
बहते फगुनहटी हवा, तन मन भरल उमंग।
उठल फुरेरी ठूँठ में, छतनारी के संग।

सिव के बान्हल सरहदा, भइले मदन जीवंत।
जड़-चेतन पऽ छा गइल, दिब परभाव बसंत।

अबो प्रकृति में सेस बा, जीवन राग अभंग।
करि लिहलनि बस आदमी, आपन मुँह बदरंग। ●●

❑ सरकारी आवास-100/400, राजवंशीनगर,
रोड-2, पो० शास्त्रीनगर, पटना-23

आनन्द संधिदूत के दू गो गजल

(एक)

फार के दिल देखवला में दम नइखे।
उनका हमरा उजरला के गम नइखे।

खुद-पसन्दी के का दोस उनके दिहीं
एहिजा के बा कि जेके अहमं नइखे।

हुस्न के नूर देखे आ लिख दे सही
अइसन दुनिया में कवनो कलम नइखे।

बिन धुआँ-आग के फाटे आ प्राण ले
ओके कइसे कहीं कि ऊ बम नइखे।

काहें बंचित हईं उनका दीदार से
नेह हमरो त केहू से कम नइखे।

दिल टकराला दिल से बड़ी आस ले
उनकर ठण्डा बा दिल अब गरम नइखे।

सबकर एहसान राखब हम सिर-माथे पर
भूले आनन्द एतना अधम नइखे।

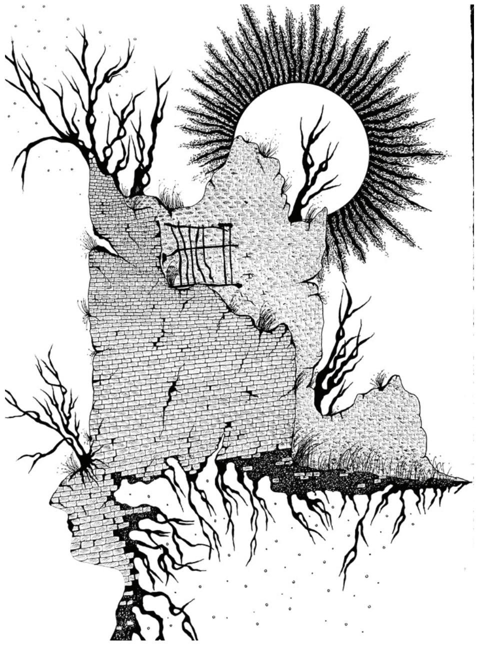

(दू)

केकरा से दुख कहो, सबही डेराला जी
बरि-बरि आप भवसागरऽ बुताला जी।

तरल सुभाव नाहीं रुकि के थिराला जी
जलवे में जलवा, डूबेला-उतिराला जी।

सगरे समुद्र बीच टापू अस जिनिगी।
तनिको हिलल, पानी-पानी होइ जाला जी।

लहर प' लहर घघोटि चढ़ि लपके
जलवे में जल क कतल होइ जाला जी।

जल से लड़त जल, वायु से लड़त वायु
तब काहें अदिमी से अदिमी डेराला जी।

भीतरे लड़त मीर बढ़े ना फफाइ के
कवना दबाव झूलें तट पर ताला जी।

सन्धिदूत डगमग-डगमग जिनगी
ताके बिहान होय नींद ना जनाला जी।

- ("पाती", अंक-30, दिसं.-1999) ●●

❑ पदारथलाल की गली, वासलीगंज, मिर्जापुर

दू गो कविता

संगीत सुभाष

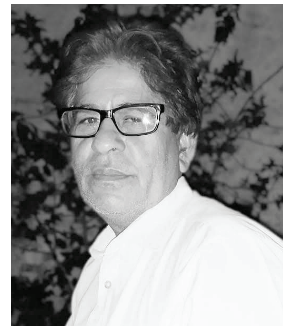

(एक)

ढरकत लोर नयन से काहे?
हमरी पीर कि रउरा दाहे?

पलकन के बिनती ना मानत,
ना पुतरिन से नेह निबाहे।

फफनल नदिया बंधन टूटल,
कजरा गिरल चिताने आहे।

कुँइयाँ गहिर पताले पानी,
उलिचत गगरी भरत उछाहे।

बिदा होत पत्थल दृग आँसू,
बेटी का अनजानी राहे।

दुख के ताप, खुशी के छाँही,
हिया राखि बहि जात अथाहे।

चलल डगरि सब लाज बिसारी,
के बिसरावल, के अवगाहे?

छोट गडहिया कतिना पानी?
समुझि परे ना जिनिगी थाहे।

बादर जस बरिसत कहियो तै,
धोइ देत मन, अँगन निठाहे।

मति पूछीं ‘संगीत‘ के आँसू,
सूखल बिरह अगिनि का धाहे।

(दू)

बेंड़ल बजर किंवार, यार अइलें, चलि गइलें।
ना सुनि परल पुकार, यार अइलें, चलि गइलें।

सूरुज, चन्दा की जोती से, तरइन का झिलमिल से।
शान्त गगन का मौन सुरन से, पर्वत, विश्व अखिल से।
हँसि-हँसि करत गुहार, यार अइलें, चलि गइलें।

पवन बसंती उनके चिट्ठी ले के आइल दुअरा।
उपवन गंध उड़वलसि पहुँचल घ्राणरंध्र का नियरा।
सबकुछ देल बिसार, यार अइलें, चलि गइलें।

चहकत चिरँइन की बोली में राग मिला के गवलें।
बालक बनि हँसलें, एने से कुछ ना आहट पवलें।
खुलल न भुज अँकवार, यार अइलें, चलि गइलें।

खिड़की ऊपर इन्द्रधनुहिया परदा रोजे तननीं।
के आइल, के हाँक लगावल भरि जिनिगी ना जननीं।
तकनीं न आँखि पसार, यार अइलें, चलि गइलें। ●●

❑ मुसहरी, गोपालगंज-841426

दू गो गजल

अशोक कुमार तिवारी

(एक)

भूख पेट में अउर आँख में पानी बा,
हर गरीब के ऊहे राम कहानी बा।

अब सरका के केने खटिया ले जाईं,
पूरा घरवे बनल आजु ओरियानी बा।

अबले ओकरा हाथ पसारे ना आइल,
पता ना ओकर शान हकि नादानी बा।

हाल-चाल पुछला पर कहे कि ठीके बा,
बड़ा मजे से बीत रहल जिनगानी बा।

दुख तकलीफ कहे से केहू मदद करी,
ई समुझल सबसे बड़का नादानी बा।

(दू)

जल में रहिके लड़े मगर से जाई के,
जे डाक्टर बा ओकर करी दवाई के।

टोला गाँव-जवार सभे से पट जाता,
क्हाँ पटत बा अब भाई से भाई के।

कइगो बाटे अगवे आई गिन लेहब,
का हुदकावत बानी झुठ्ठे नाई के।

चाल चलीं कब कवन कि धरी, लपेट दिही,
के चिन्हले बा नेता के, हरजाई के।

जवन करेके बाटे धइके धीर, करीं,
कबो नीक ना होला फल अकुताई के। ●●

❑ सूर्यभानपुर, लालगंज, बलिया

डॉ0 हरेश्वर राय के कविता

इज्जत के खेंसारी

हमर पप्पू हो गइल बा अधकपारी ए लोगे,
बिगहा बय कके किनले बा सफारी ए लोगे ।

गहुम चाउर बूँट मटर के दाना भइल मोहाल,
इज्जत भइल बिया अब खेंसारी ए लोगे ।

बाप दादा के कइल कमाई हावा में उधियाइल
मनवाँ करत बड़ुए कि रोईं पुक्का फारी ए लोगे ।

गर में गमछी डाल के पप्पू जिल्ला टॉप कहाता
एकरा भइल बड़ुए बड़कन से इयारी ए लोगे ।

गाँव के तीसी में ना बाँचल बड़ुए तनिको तेल
चलनी देंह ठेठावे खातिर मारामारी ए लोगे ।

ह साँच बतिया

जेजे रची से बाँची, ह साँच बतिया,
जेजे झुकी से बाँची, ह साँच बतिया ।

आपन आ अनकर त खाली भरम ह,
तनी गीता के बाँचीं, ह साँच बतिया ।

आदिमी के करम कठपुतरी नियन,
जले जीही त नाची, ह साँच बतिया ।

जवन लउकता ऊ सब बिलइबे करी,
चाहे गाड़ीं उपाचीं, ह साँच बतिया ।

जइसे सुगना उड़ी डाल के छोड़ के,
भिनक जाई हो माछी, ह साँच बतिया । ●●

❑ सतना, मध्यप्रदेश

लोकतंत्र के पर्व
(व्यंग्य गीत)

श्रीभगवान पाण्डेय

लोकतंत्र के पर्व खुशी से चलऽ मनावे भाई
अइसन पुण्य काल जिनिगी में बार बार ना आई।

घर में भले किरासन नइखे बहरी दीया जरावऽ
अपना घर में आजादी के सम्पुट पाठ करावऽ
ईसर घर में अइहन घर से दुःख दलिद्दर जाई।।

राज घाट हऽ राजनीति के तीर्थ उहाँ तू जइहऽ
सरधा से करिहऽ परिकरमा फिर तू माथ झुकइहऽ
दिल्ली दूर रही ना तहसे पटना भी पटि जाई।।

अगहर बनि जइबऽ समाज के राष्ट्र भक्त कहलइबऽ
सभ अवगुन छिपि जाई बहुते मान प्रतिष्ठा पइबऽ
सोहरत पइब+ चढ़ी चढ़ावा मान-शान बढ़ी जाई।।

जे होखे इतिहास- पुरुष सभके बौना बतलइह
अपना अंदर देव दूत के भाव भंगिमा लइह
पूजल जइबऽ देखि देखि तहरा के लोग जुड़ाई।।

तू कमाल होख कबीर के भा पुलस्तय के नाती
तू ही पाठा एक दिन बनबऽ लोकतन्त्र के थाती
का मजाल जे केहू आके तोहसे हाथ मिलाई।।

पंचशील माथा पर रखिहऽ मन से शील हटइह
जवने पत्तल में खइहऽ ओकरे में बील बनइह
खइहऽ तू सहदेव खेत में लोटा ले के जाई।।

बोलब साँच आँच लागी तब बाँचि कबो ना पइबऽ
आन-बान-पद-मान प्रतिष्ठा पल में सभे गँवइबऽ
छनकल रहबऽ तब केहू कुछुओ बिगाड़ ना पाई।।

नेता उहे कहाला जे सुख के ना, दुःख के बाँटे
कबो समय पर केहू के कवनो कामे ना आँटे
जइसन रोगी आवसु तू दीहऽ ओइसने दवाई।।

जवन जोजना मिले सोगहगे लील सभे तू जइहऽ
जतना छँटुआ होखन स उहनी के मीत बनइहऽ
तहरे फोटो अखबारन में रोजे -रोज छपाई।।

डूबि -डूबि के पानी पीहऽ बहरी मउज मनइहऽ
सीधा-साधा भेष बना के अपना गाँवे अइहऽ
देखिहऽ तब कइसे जवार तहरे जयकार लगाई।।

लागल रहि जइबऽ त बनबऽ भारत-भाग्य विधाता
तहरे खातिर छछनत बाड़ी कब से भारत माता
एकरा से अधिका तहरा के केहू का समुझाई।

रउरो पावे के बाटे त कर लीं करम कमाई
अपना घर में आजादी के रउरो कीर्तन गाईं
पिचकल गाल करम कइला से सेव मतिन हो जाई।

बाकी सभ जनता जनारदन राम राम गोहरावे
अपना अपना घर में सभे झंडा के फहरावे
झंडा के फहराते घर -घर लालकिला हो जाई।। ●●

❑ शिवगोविंदायतन, राम बाग,
पी.पी.रोड, बक्सर 802101।

सौरभ पाण्डेय के
दू गो गजल

(एक)

ओकरा बस इहे बुझाइल बा
मार लंघी बड़ा ठठाइल बा

हम भरोसा उहाँ लगा अइनी
हाल सुनते जवन पराइल बा

बस, सियासत-फिलिम-फुटानी में
भोजपुरिया बुला मताइल बा

फेरु गंगाजी बेग में बाड़ी
बान्ह पऽ गाँव, फेरु आइल बा

बात बूझीं, सखी दुका बोली..
जोहि दीं कान के भुलाइल बा

फाग-फागुन-फुहार फहिरल कब
देहि से देहि जब रँगाइल बा

बात बहिराउ, तऽ खुलासा से
ना त नीमन लकम चुपाइल बा

साँच बाड़ऽ, प्रमान दऽ सौरभ ?
देखि लऽ.. टोल भर नधाइल बा !

(दू)

रटौले रटल बा नियम का ह, मत का?
बुझाइल कबो ना सही का, गलत का !

सियासत के सोझगर गनितओ बुझाई
गुना-भाग छोड़ीं, बताईं जुगत का?

गुनत जा रहल बा, पटाइल उपासे-
कमाई जे हासिल, त आखिर बचत का?

धुआँ बा, कुहा बा, रुखाइल घराँगन
सुखाइल इनारा त ढेंकुल, जगत का?

चकाचौंध देखी, लहालोट होखी..
मताइल जे नइखे भला ऊ भगत का?

करब गाल रउआ, हँसब देइ ताली
जबाबी मिली तब पुछाई सखत का! ●●

❑ एम-2/ए-17, ए० डी० ए० कॉलोनी,
नैनी, प्रयागराज - 211008

पाती

✍ कृष्ण कुमार

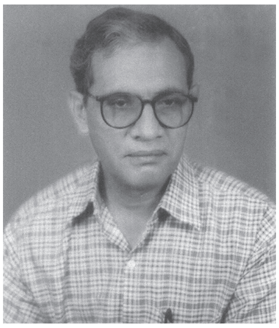

चढ़त कुआर के महीना। पुरखा लोग के विरासत–थाती के संगोरे आ ओह लोग के फरूे से इयाद करे के परब। राति के पहिला पहर प दसू रा पहर के लखेदा–लखेदी। कच–कच कचाइन अन्हरिया। कहे खातिर जिला मुख्यालय। सही–सांझे से रूसल बिजली रानी के उबले कवनो आह–अँटकर ना लगा पावल ताहिरपुर के लोग। पूरा शहर अन्हार के आगोश में अझुराइल। बुझाई ठाकुर हाथ में बकुली धइले ठेघत–ठाघत, पूछत–पाछत पहुंचि गइलें निमिया टोला। निरंजन बाबू के एक सौ तीन नम्बर मकान पऽ। कुबेरा हो गइल रहे। डेरइले, केवाड़ी ठुकठुकवलें। निरंजन बाबू ऑफिस से ले आइल फाइलन में अझुराइल रहन। ओकरा के सोझिआवत आवाज देलें, ''के हऽ भाई...?''

आ मने–मन सवाल कइलें, ''अतनी बेरा ई के धमसि आइल...?''

''केवाड़ी खोलीं ना...! निरंजन बाबू के घर इहे ह नूं...!''

झटकाहे केवाड़ी खोललें निरंजन बाबू। देखलें – हाथ में पाती, कान्हि में कपड़ा के झोरा, फाटल–पुरान–मइल झागा पहिरले दुबर–पातर एगो झुलरी बूढ़ गेट प खाड़ बाड़ें। बड़ा फेर में परले निरंजन बाबू। ई के हऽ...? अतनी बेरा ई कहंवाँ से आ गइलें...? खाना बना के सोचले रहन निरंजन बाबू – आजु पितर लोग खातिर आखिरी दिन के जल तरपन कइले बानी। ऑफिस के फाइल से अहथिर भइला के बाद पितर लोग के पहिले भोग लगाइबि। तबे पारन करबि। बाकिर...

निरंजन बाबू अबहीं एक टक से आंखि गड़ा के ओह पुरनिआ के निहारत रहन कि बुझाई ठाकुर डबड़बाइल आंखिन से सुबकत चालू हो गइलें, ''तू तनिको मत घबड़ा। तू हमरा के नइख चीन्हत। बाकिर तूँ जान जा कि हम तोहरा बाबूजी के जिगरी संघतिया हईं। तोहरा शहर ताहिरपुर में कुछ जरूरी काम बा।

ओही फेर में आइल बानी। कुबेरा आवे खातिर हम तोहरा से माफी मागंत बानी...।'' – ई कहत उनका बाबूजी के लिखल पाती निरंजन बाबू के हाथ में थम्हवलें बुझाई ठाकुर। पाती में लिखल रहे – प्रिय निरंजन, विश्वास बा, तू ठीक से होइबऽ। ई हमार अभागा संघतिया तोहरा लगे जा रहल बाड़ें। इनका साथे एगो अप्रिय घटना घटि गइल बा। इनकर जवान बेटा लगलाहे एगो ट्रक से चाँपा परि गइल। ओकरा मुआवजा देबे खातिर ट्रांसपोर्ट कम्पनी तइआर हो गइल बिया। ओह कम्पनी के मुख्यालय तोहरा शहर में बा। ई अनपढ़ आ बहुत गरीब आदमी बाडें। इनका से एको पइसा खरच मत करवइहऽ। हमार दीली इच्छा बा कि इनकर मसला के निपटावे में तू इनकर भरपूर मदद करिह आ इनकर खातिर–बात पसन से क दीहऽ। कवनो बात के दिक्कत इनका ना होखे के चाहीं। शेष कुशल बा।

प्रेम के साथे – तोहार बाबूजी...।''

आहत के कुछ रहहिं न चेतु, बार–बार कहे आपन हेतु...। निरंजन बाबू के पाती पढ़ते कहे लगलें बुझाईं, ''जानि जा कि मुंहलुकान भोरहरिआ में गांवे से निकलल रहीं। बाकिर गाड़ी–घोड़ा के बात जानते बाड़ऽ। बस लेट आइल आ बीच राह में दू बेर खराब हो गइल। खँजड़ी–खरकोच गाड़ी के कवन भरोसा...? एहि से कुबेरा हो गइल। एह सुतली रात के बेरा में तोहार घर मिल गइल, तोहरा से भेंट हो गइल। हमरा खातिर ई बहुत बड़ बात बा। अब हमरा सोरहो आना विश्वास हो गइल कि हमार काम पक्का हो जाई...।''

निरंजन बाबू कहलें,''चलीं, सभ ठीक बा। कवनो बात नइखे। भीतरी चलि के बइठीं। हमहूँ गेट में ताला बन्द क के आवऽतानी...।''

निरंजन बाबू अकेलहीं शहर में रहत रहन। माई के साथे परिवार गांव प रहत रहे। ताहिरपुर से उनकर गांव नियरे रहे। हरेक शनिचर के ऑफिस से छुटला के बाद दीआ–बाती बरात–बरात गांवे पहुंचि जात रहन। अतवार के दिने गांव के घर–गिरहती के काम सलटा के सोमार के सही समय प ऑफिस में जुमि आवत रहन। गेट के ताला बन्द क के घर के भीतरी अइलें निरंजन बाबू। फटाफट खाना गरम कइलें। पितर लोग के भोग लगवलें। प्रेम से खिअवले बुझाई ठाकुर के। जवन बांचल ऊ अपने खा के सबुर–संतोष कइलें। फेरू बुझाई के मछड़दानी में होके पन–पिआड़ के जोगाड़ में घर से बहरी निकलहीं वाला रहन कि सोफा प बइठल बुझाई ठाकुर कान खजुआवत अपना अतीत में डुबकी लगा देलें। तब निरंजन बाबू ऐनक के सोझा अपना कपार के बार झारत रहन। बगल में बइठल बुझाई ठाकुर के चेहरा के फोटो ऐनक में उनका साफ–साफ लउकल। उनका चेहरा प आँखि गड़ा देलें निरंजन बाबू। भयानक अनुभव, लाल आँखि, पीड़ा आ साहस से लबरेज बुझाई ठाकुर के चेहरा प से हँसी बीचे में कतहीं थथमि गइल रहे। ऊ महसूसलें, ओही चुप्पी से अपना दुख–दलिदर के सहत–सहत ऊ थोरे विक्षिप्त अइसन हो गइल रहन। इयाद के टोअत–टावत कहे लगलें बुझाई ठाकुर, ''ऊ हमार जवान बेटा रहे। बस, उहे एगो अकेले। एकरा बाद कवनो बेटा–बेटी हमरा देंहि से ना भइलें स। बड़ा सरधा से ओकरा के पलले–पोसले रहीं आ पूरा खरच–बरच क के पढ़वले रहीं। ओकर नोकरी शहर में लाग गइल रहे। ढेर उमेद ओकरा के कइले रहीं। बाकिर का कहीं करम के बात। हमहीं अभागत, केकर दीहीं दोष। हमार उमेद ओह दिन पाला मारल खेसारी लेखा झुरा गइल। ऊ छठ परब में छुट्टी आइल रहे। पारने के दिने सांझि में दिल्ली जाये वाली गाड़ी में ओकर 'रिजरभेसन' रहे। बेग–झोरा हाथ में लेले स्टेसन जाये खातिर सड़क पार करत रहे। सड़क के बाँयें–दाँयें ना तकलस। आंख मूंदले सड़क पार करे लागल। तले बेलगाम रफ्तार से जा रहल ट्रक ओकरा कपार प चढ़ि गइल। दवरे प आँखि तड़ेरा गइल। सही–साँझे के बेरा रहे। ड्राइवर ट्रक लेले फोर लेन के ओरे हाली–हाली भागे लागल। अगल–बगल के लोग मोटर–सायकिल से लखेदा–लखेदी कइलें आ खदेरि के ट्रक के पकड़ि लेलें। एहि बीचे ड्राइवर चलत ट्रक से कूदि के पराइल। बाकिर ऊ पकड़ गइल। लोग ओकर धुनाई करे लगलें। चालू ड्राइवर रहे। ऊ आपन अलि लगा के कवनो तरे भीड़ के फारत ओइजा से नव–दू–एगारह हो गइल। खिसिआइल लोग ट्रक में तोड़–फोड़ करे लगलें। ओहू से ना सबुर भइल त ओकरा के आग के हवाले कर देलें। सड़क जाम क के मुआवजा लेबे खातिर हंगामा आ नाराबाजी करे लगलें। सूचना पा के सदर ए.एस.पी. आ अगल–बगल थाना के पुलिस मोका प पहुँचल। मुआवजा देवे के वादा कइला के बादे बेटा के लाश पोस्टमारटम करे खातिर जगहा से उठल। आजु–काल्हु के टरकउअल में मुआवजा के रोपेया अझुरा गइल। बेटा के मउअत के मुआवजा वाली बात–बतकही से मन घिना गइल। ऑफिस में ढुकते मन लजा जात रहे। बुढ़ारी के देहिं। जूता तुरल पार ना लागल। महटिआ गइनी। लोग कहेला, ''दुनिया बहि गइल बा। कुछुओ नइखे बाँचल। बाकिर हम तोहरा से का बताईं बबुआ निरंजन...? ओह दिन हमार आंखि खुलि गइल, जब ट्रक–मालिक पूछत–पाछत हमरा घरे आ गइलें आ मुआवजा देबे खातिर हमरा से पुरहर कोशिश कइलें। बाकिर हम ई सोचि के साफा धोती झार देनी, ''अपना बेटा के लाश के बदला में मिलल रोपेया से आपन छुधा ना भरबि। ई ढींढ़ बड़ा चंडाल बड़का कुंआँ ह। एकरा के आजु तक ना केहु भरले बा आ ना भर सकऽता। एह से अतना छोट करम हमरा के पार लागे वाला नइखे। भलहीं हम गरीब बानी। उपासे सुति जाइबि। बाकिर एह पाप के कींचड़ में कबो ना कूदबि...।''

''समय आदमी के कब आ कहंवाँ धसोरि दी, ई केहु नइखे जानत। हमरो साथे कुछ अइसने भइल। तरकुल से गिरनी, बबूल प अटकनी। बेटा मुअला के अबहीं सालो–माथना लागि पावल कि घरनी गंभीर

बेमारी में चपेटा गइली। पहिलहीं से ऊ 'सुगर' से तबाह रही। बीतत समय के साथ हाथ–गोड़ फूले लागल आ दूनों किडनी फेल होखे के हिसाब में आ गइल। उनका दबा–बीरो के जोगाड़ में घर खउरा–खपट हो गइल। दाना–दाना खातिर मोहताज। चूल्हा उपास होखे के ठेकान। बड़ा अफदरा में परि गइनी। आगा नाथ, ना पीछा पगहा। जेने ताकीं ओने अन्हारे–अन्हार। आखिरी दाव में परसों तोहर बाबूजी हमरा दिमाग में के मईल धोवलें – ''का बुरबक बनल बाडऽ...? गोड़ तर गंरवट जँताइल बा, ध ल, ना त बड़ा पछतावा होई। ढेर इज्जतदार बने के कोशिश मति करऽ। ट्रक मालिक बहुते भलमानुस आ एकबाली मरदाना बाड़े। मुआवजा देबे खातिर खोजत–खाजत तोहरा दुआर प अइलें। ओह बेचारा के लाखों रोपेया के ट्रक फुँका गइल। तबो देख, उनकर इंसानियत। अइसन आदमी खोजलो प ना मिलिहें। चलऽ, तोहरा के साथे लेके चलि जइहऽ। ओहरा हमार बेटा नोकरी करऽतारें। एगो पाती लिख के तोहरा के दे देबि। तोहरा कवनो बात के दिकदारी ओहिजा ना होई। आ तोहरा मुआवजा ट्रांसपोर्ट कम्पनी से घरी–छन में भेटा जाई...।''

''हमहूं सोचनी–जले ले जीये के बा, तले ले सीये के बा। ओह से पहिले कसहूं कांखत–कुंखत गुजारा त चलावहीं के परी। चाहे हंसि के करीं भा रो के। एह से हम मन के मनवनीं आ तोहरा लगे जुमि अइनी...।'' – ई कहत–कहत डबडबा कइलें बुझाई ठाकुर।

निरंजन बाबू कान खोलि के बड़ा धेयान से सभ सुनलें बुझाई ठाकुर के आ कहलें, ''सुख–दुख सभका साथे बा। एह से केहु नइखे बांचल। ई मति सोचीं कि ई खाली रउये साथे अइसन भइल बा। चलीं कवनो होटल में। पहिले पनपीआ लिहल जाउ आ झटकाहे ट्रांसपोर्ट ऑफिस में पहुँचल जाउ। 'फर्स्ट आवर' में काम करा लिहल ढेर निम्मन होई। सभकर मन–मिजाज भोरहरिआ में फरहर रहेला...।''

सभ औपचरिकतन के पुरवला के बाद ठीक एक बजे दिन में उनका चेक भेंटा गइल। निरंजन बाबू सबसे पहिले खाना खिअवलें बुझाई के। फेरू कुछ नस्ता आ पानी के बोतल किन के दे देलें आ साथे बस पड़ाव प छोड़े अइलें। निरंजन लोराइल आंखिन से निरंजन बाबू के धन्यवाद देत कहलें बुझाई, ''हम जब गाँवे पहुंचबि, त सबसे पहिले तोहरा बाबूजी के बताइबि के आजु तूँ हमार कतना मदत कइलऽ। हमरा खातिर छुट्टी लेलऽ। हमरा के पसन से खिअवलऽ। राह के नास्ता देलऽ। साथे बस पड़ाव तक छोड़हूं आइल बाड़ऽ। तोहरा एह करजा से हम कइसे उबरबि...।'' – ई कहत फफकि गइलें बुझाई।

बुझाई के बतकहि सुनि बड़ा अहथिर आ शांत बोली में कहले निरंजन बाबू, ''बाबा, हम ऊ निरंजन ना हईं जेरा के रउआ काल्हु राते में खोजऽतानी। ऊ त न्यू निमिया टोला में रहेलें। हम उनका के पसन से जानऽतानी। आ संजोग अइसन बा कि उनका आ हमरा घर के मकान नम्बर एके बा। राते जब रउआ हमरा घरे अइनी त हम सोचनी कि होत पराते रउआ के असली निरंजन के घरे पहुंचा देबि। रउआ सुतला के बाद रातहीं हम पाती प लिखल नम्बर डायल क के निरंजन के बाबूजी से बतिअवनी। ऊहाँ के निरंजन के नम्बर लेनी आ उनको से बतिअवनी। पता चलल कि कवनो जरूरी काम से ऊ ताहिरपुर से बाहर चलि गइल बाड़ें। रावाँ शहर में कुबेरा पहुँचनी। राउर पूरा इन्तजार कइला के बाद निरास हो के ऊ निकलल बाड़े। ओहि घरी हम सोचि लेनी कि काहें न हमहीं असली निरंजन बनि के राउर काम फते करा दीं। ई कवनो बड़हन काम ना रहे। बस पकावल रोटी झारि–झूरि के सरिआ देबे के बा...।''

निरंजन बाबू के बतकही सुनि सनाका खा गइले बुझाई। आंखिन से घइलन लोर ढ़रके लागल। मत पूछीं। गंगा–जमुना बहाव के तड़िआ देलें रहले बुझाई। उनकर कंठ बाझि गइल। कहे खातिर उनका भीतरी कुछुओ ना बाँचल। बहल लोर छोड़ि के सभ बिला गइल। निरन्तर हो गइलें। मुँह के बात मुँहे में फ्रीज हो गइल। धन्यवाद शब्द के कंगाली हो गइल। निरंजन बाबू से माफी माँगे खातिर दूनो हाथ जोड़ले बस के सीट प से उठि के खाड़ हो गइलें। उनकर दूनों हाथ भरि जोड़ पकड़ि लेलें बुझाई। अबले कन्डक्टर बस में आ गइल रहन। निरंजन बाबू अपना जेबि से पांच सइ के कड़कड़हति नोट निकाल के टिकट खरच के देलें बुझाई के आ कहलें, ''राखीं...राखीं...। कवनो बात नइखे। तनिको मत संकोच करीं। हमहुँ राउर बेटे हईं। राउर आशीर्वाद हमरा खातिर काफी बा...।''

थोरहीं देरी के बाद बस रवाना हो गइल। निरंजन बाबू आपन पर्स खोललें। ओह में से अपना बाबूजी के फोटो निकलले, जे पांच बरिस पहिले गुजर गइल रहीं। बाबूजी के फोटो निहारत मने–मन कहलें निरंजन बाबू, ''बाबूजी, हमार पितरपख सुफलान हो

गइल। हम उनकर मदत एह से कइनी हाँ कि ओह पाती के लिखावट एकदमे रउआ निअन रहे। हमरा अइसन बुझाइल कि हम रउरे कवनो संघतिया के मदत कर रहल बानी...।'' ●●

❑ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा - 802301 (बिहार)

कहानी

घरवे मठिया बनि गइल

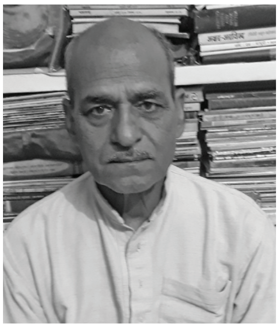

विजय मिश्र

कई दिन बाद गाँवे आवे के मोका मिलल। बाहर बाइक खड़ा कऽ के एक नजर मकान पर डालत आगे– बढ़नी त दरवाजा पर लगावल ताला ठीकेठाक लउकल। बरामदा में तीन–चार गो कुक्कुर आराम से बइठल रहलन स। बुझात रहे जइसे, इहवें इन्हनी के बसेरा हो गइल होखे, आ इन्हनिए के मूल मकान मालिक होखन सऽ आ हम बहरवाँसू। ताला खोलि के अन्दर घुसनी, त भीतर अन्हार भकसावन लेखा लागल। मोबाइल से अँजोर कऽके देवाल का बल्ब के स्विच दबवनी, बिजुलियो नदारत रहे, फेरू इन्वर्टर वाला स्विच दबवनी तऽ ऊ कइ हाली चिचियाइल, बुझला डिस्चार्ज हो गइल रहे। जब केहू रहबे ना करी तऽ एके चार्ज के करी? जंगला खोलनी तऽ तनी अंजोर भइल। चउकी झारि पोंछि के दरी फइलवनी आ ओठँगि गइनी।

गजब के गरमी रहल, ऊमस से जीउ घबड़ाइल तऽ पंखा डोलावे लगनी, तनी राहत मिलल। तले केहू के बोली सुनाइल, "ए भाई, मास्टर साहब के जँगला खुलल बा, आइल बानी का?" गुदरी रहलन। ऊ जंगला का पास आके बोललन– "मास्टर साहब!" बानी का?

– "का करीं हो, कइसे अकेले रहीं? तहरा त सब मालूमे बा, कहऽ का समाचार?"

– "खेतवा काहें परती रखले बानी, बोआई ना का?" ऊ असल मकसद पर आ गइलन।

– "ना हो असों पलिहर राखे के बिचार बा।"

– "इहो ठीके सोचले बानी, धान के खेती बड़ा टँग–फँसाव वाला आ खर्चीला हो गइल बा।

ट्रेक्टर, पानी, बनिहार आ दवाई बगैरह के झमेला।" तनि रुकि के फेरू पूछलन–

– "ई कवन नछत्तर चलऽता मास्टर साहब?"

– "पुनर्वसु, तीन दिन अउर रही, तब पूख चढ़ी।" हम कहनी।

– "असो एकदम सुखारिये परि जाई का जी?"

– "लच्छन त अइसने बुझाता।"

– "धरती पर अनेति बढ़ि गइल बा, भगवानो का करसु?" कहत ऊ चलि गइलन।

गुदरी का हटला के बाद महटियाइ के सूते लगनी। नीन त आइल ना, मन अतीत में भटके लागल। केतना तकलीफ सह के ई मकान बनल रहे? एम्में माई के सपना रहे आ मेहरारू के सहयोग। बबूजी के कहनाम रहे कि मकान छोट होखे के चाहीं तबे ऊ ज्यादा टिकाऊ होला आ देख–रेख मरम्मतो आसानी से होत

रहेला। बड़ मकान के उमिरि कम मानल जाला, काहें कि ओकरा मरम्मत सफाई सबके काम सही भा उचित समय पर हो ना पावेला।

हमार सोच कुछ अऊर रहल। अपना बड़हन परिवार के हिसाबे से घर बनवलीं। इहे घरवा बाद में भरल पूरल लागे लागल। जेतना बेटा बेटी रहलन, केहू के अँड़सा ना बुझाइल। लड़िका लोग पढ़ि–लिखि के कमासुत भइल त आपन आपन परिवार ले के बाहर चलि गइल लोग। तबो ई घरवा काटे ना धउरे, काहें कि घरवा में सहयोग देबे वाली हमार मेहरारू संगे रहली। उन्हहूँ के साथ छूटि गइल, दइब क लीला कहीं कि उनुका जाते सब कुछ अस्त–व्यस्त हो गइल, इहाँ तक कि हमार जिनिगियो।

अचानक आवाज आइल, "पंडीजी! ए पंडी जी!" जँगला का ओर तकनी त सुमन्त खाड़ रहलन। हमरा कुछु कहे के पहिलहीं पूछि बइठलन, "सूतल रहनी हा का?"

– "ना जी असहीं ओठँगल रहनी हाँ।" हम बइठि गइनी।

– "हईं देखीं ना तनी, बियाह के गनना बनऽता कि ना?"

उनुकर पर्चा ले के पत्रा खोजे लगनी। अलमारी पर धूरि जम गइल रहे। पन्ना निकाल के पहिले धूरि झरनी फेरू रासि नाम देख के गुन गनना के मिलान करे लगनी।

– "आजु सबसे कठिन काम लइकी के शादी हो गइल बा पंडीजी!" ऊ आपन परेशानी बतवलन।

गनना तेइस गुन बनत रहे। – "तेइस गुन कइसन कहाई।" ऊ जानल चहलन।

– "ठीके कहल जाई, असल गुन गनना त ई बा कि लड़िका रहनदार, जिम्मेदार आ लइकी के जोग होखे के चाहीं बाकिर बनना रउवाँ बनाइब त सब सुफल होई।" हम तसल्ली दिहनी।

बात चलते रहे तले घंटी बजावत, माथ पर टोकरी लेले– "झालदार भूजा" के हाँक लगावत बूढ़ा भगत लउकलन। उनुके बोलवनी– "आवऽ आवऽ भगत का हाल बा, बूढ़ भइलऽ, कबले हाड़ ठेठइबऽ, लइकवा कहाँ बा?"

– "अरे मलिकार, ऊ कुराहा चलि गइल, अब आपन जिनिगी अपने पार लगावे के बा।" कहत कहत ऊ हमरा के एक मुट्ठी भुजा कागज पर डालि के बढ़ा दिहलन। हम पाँच गो रुपया थगली में से निकालि के थम्हवनी, "चलऽ भाई सबकर इहे हाल बा।" हमहूँ कहनी।

भगत के जाते सुमन्तो चलि गइल रहलन। भूजा चबात हमार दिमाग अटक गइल। पता ना काहें आजु उन्हनी पर हमरा खीसि ना बरल। पहिले इन्हनी के अशुभ जानि के हम बहुत दिकियात रहनी। आजु अइसन कुछ भाव ना जागल। उठि के पानी पिये के सोचते रहनी तले नारायन जी आवत लउकलन। ऊ घुमन्तू साधू हरलन। पहिलहूँ कबो–कबो आवसु, बाकिर जहें साँझ तहें बिहान, उनुकर कवनो निश्चित ठेकाना ना रहल। बेरा नवल रहल, हमरा मन में आइल कि, "आजु काहें ना साधु के एइजे रोकल जाव।" आवाज दिहनी, "आईं आईं नारायन जी आजु एही जे टीकर लागो।" पहिले त ऊ हँसलन, फेरू बेरा नवत देखि के मानि गइलन।

– "रउरो कहल ठीके बा।"

हम उठि के दलानी के दुआरि खोलनी आ चउकी झारि के उनुके बइठा दिहनी। अँगना में जा के नल से एक बाल्टी पानी आ लोटा उनुका लगे रखत कहनी कि, "लीं पहिले हाथ मुँह धोईं।" मीठा पानी दिहनी आ सोचनी कि अकेल से दुकेल भला। आजु इनहीं के बहाने हमरो चूल्हा चाकी से जान बाँचल। कुक्कुरो दुआरि छोड़ि के बहरा निकलि गइल रहलन स।

हम राती खातिर ललटेन साफ कइनी। बहरा पाँच–सात गो गोईंठा ले आके धइनी। भण्डार में से आटा आ आलू निकलनी तले लाइन आ गइल।

राति खा लीटी चोखा लागल, नारायन जी साधु संगे जिनिगी आ आध्यात्म पर बतकही भइल। सूते गइनी त मन परि गइल, कबो परिवार में धौंस जमावे खातिर घर छोड़े आ मठिया पकड़े के धमकी दीहीं। हमरा अपने पर हँसी छूटि गइल, अइसन स्थिति बनि गइल कि जवन बात हवा में रहल, उहे आजु साँच हो गइल, घरवे मठिया बनि गइल...। ●●

❑ टण्डवा, बंकवा, बलिया

कचहरी

✍ प्रेमशीला शुक्ल

आजु से करीबन बीस साल पहिले हम ये जगही पर आ के बइठनी। बाप के किरिया–करम निपटा के, माथ छिलवले जहिया मोटरी में दू–चार असबाब लिहले माई का साथे उतरनीं, अगल–बगल के हवा–बतास देखि के हमके कठुवा मार दिहलस। आजु ले ऊ सब अइसन बुझाला जइसे अजुए के बाऽति हऽ।

बाबूजी का मरनसेज का एक ओर हम बइठल रहलीं, दोसरका ओर माई। बाबूजी के हाथ–गोड़ पल्ला होत जात रहे आ बोली लटपटात जात रहे। बाबूजी, माई का हाथ में ले के लटपटाते कहत रहलें– "देख हमरा मरला का बाद बबुआ के कचहरी ले जइहऽ। कचहरी जइसे हमरा जिनिगी निबाह कऽ दिहलस ओइसे बबुओ के जिनिगी निबाह दी।"

बाबूजी अटऽकि–अटऽकि के बोलत रहलें बाकी माई का समझले में कवनो दिक्कत ना भइल। बाबूजी के तोख देत माई कहली– "केतना बेर इहे बाति कहब? बरिस भर से इहे रटऽ तानी, अब अन्त समे आ गइल, राम–राम कहीं।" बाकी बाबूजी का मुँह से राम–राम ना निकलल। बबुआ–बबुआ कहत–कहत बाबूजी बुआ–बुआ कहे लगलें आ उनुकर बोली बन्न हो गइल, प्राण पखेरू उड़ि गइल।

हमके रोआई छूटे लागल। माई आपना आंचरा से आँखि पोछत हमके अँकवारि में भर लेहली आ सुबुकत कहली– "रोवले के सांस कहाँ बबुआ? सब तोहरे के करे–धरे के बा, उठऽ, कफन–तिकठी के इन्तजाम करेके होई।"

ढेर कुछु करेके ना परल। छन्ने भर में बिना केहूके बतवऽले गाँव भर के लोग बाबूजी के मुवला के खबर पा गइल आ देखते–देखते सब तइयारी हो गइल। कान्हा पर बाबूजी के गाँव के लोगन का साथे उठऽवले जब अपना दुआरे से हम चले के भइनीं, दुआरे माई दुनुँ हाथे में मुँह चोरववले रोवति रहे। ओही छन–ठीक, ओही छन हमरा बुझाइल–बाबूजी के लेजा के फूँकि दीहल आसान बा, माई का रोवत चेहरा से हाथ हटावल मुसकिल बा। आगे के काम कइला में कवनो मुस्किल ना भइल। एक तऽ गाँव–घर के लोग सब काम हाथे–हाथे ले लिहल लोग दोसरे हमरा दिल आ दिमाग में माई घूमऽति रहे।

बाबूजी के मरला के महीना भर बाद माई हमके लेके गाँव के सीवान पर गइल। ओह घरी हम रेखिया उठान लइका रहनीं। खेती–बारी रहे नाहीं, माई–बाप के एकलौती सन्तान। बाबूजी कमायें, तीन जने खाईं। कब्बो ई जाने के जरूरत ना पड़ल कि बाबूजी कइसे कमालें, का कमालें। दिन भर ये गली–ओ गली लइकन का झुण्ड में बतकुच्चन आ मजलिस–कचहरी।

जवना ठावें माई मोटर से उतरि के हमके लिहले ठाढ़ रहली उहाँ आदमी के झुण्ड रहे जइसे हाड़ी के खतौना। केहू–केहू के सुननिहार ना। माई एक नजर हमके देखें एक नजर सभके। देखत–समुझत आगे बढ़ली आ एक जगह ठमकली– ई हऽ बबुआ कचहरी, तुहरे बाबूजी के रोटी के देवनहार, जिनगी के निभावनहार,

इहें उनुकर दोकान छनात रहे, बइठऽ, देखऽ, जानऽ, समझऽ आजु से ई सब अब तहके जाने–समझे के बाऽ।

देखावत–समुझावत माई पुड़िया–पुड़िया खोली के दू–चार जिनिस के टाटे पर धइली आ गोहार लगऽवली– आइए, लीजिए, आठ आना पुड़िया मूसमार दवा, मच्छर मार दवा, आइए–आइए एक पुड़िया में झंझट साफ, खटमल साफ, खटिया साफ। आइये लीजिए, आठ आना पुड़िया, आठ आना पुड़िया,।

मरदाना लोगन का भीड़ में माई के पातर महीन आवाज हेरा गइल। माई पुरहर जोर लगा के 'आइए, लीजिए, आठ आना पुड़िया, आठ आना पुड़िया' कहि–कहि बोलत रहली। हम पूछल चहलीं– "माई–ई जिनिगी के निबहे खातिर मउति के बाऽति कइसन?" बाकी माई के गटई के तनल नस देखि के पूछि बइठलीं–"माई का धीरे बोलला से काम ना चलीं, 'आईं, ले जाईं'– अइसने कहला से बात ना बुझाई?"

दुर बउरहा, भीखिओ मांगे खातिर भेष चाहीं, पुरनका जमाना में कहात रहे अब नवका जमाना के कहनाम बा– दोकान दउरी चले खातिर रंगरेजी चाहीं, हमार–तुहार रंगरेजी इहे हऽ, बोलऽ– आइए, लीजिए– आठ आना.....।

माई के पाठ सीखत में महीना लागि गइल। बाकी जब आ गइल तऽ आ गइल। पहिलका पाठ सिखा के माई दोसरका पाठ के सीख सुरू कइली– देखऽ बबुआ कचहरी दूगो होला–कलट्टरी अलगे आ देवानी अलगे। इहाँ दू किसिम के लोग आवेलें–देखते चिन्हा जइहें–सहराती अलगे, देहाती अलगे। दुइए, उनुके पच्छ होला–वादी अलगे, परतीवादी अलगे।

माई के पाठ सिखले में अब देरी ना लागे। धीरे–धीरे मन कचहरी में रमे लागल। माई अब साथे कचहरी ना आवें। गुजर भर के जोगाड़ आठ आना पुड़िया से होखे लागल।

असली पाठ एकरा बादे सुरू भइल। सबसे पहिले हम भेष बदलनीं। कमीज–पैजामा का जगह फुटपाथे से कीनल टी–सट आ चितकबरा पैंट पहिन के जब अपना के पाने की दुकानी में टांगल सीसा में देखनीं तऽ रामजी के गोड़ लागे के मन कइल, का रूप देले बाड़ें, वाह रे हम– कहत मोंछि पर ताव देवे के हाथ उठल, बाकी मोछिया अबहिनो ताव लायक भइल ना रहे। दीवान के टाट गुमेटि के कचहरी के नाला में फेंकि एगो छोटवर टेबुल पर पुड़िया पसारि के जब असली रंगरेजी में हम टेरनी– हलो, हलोऽऽ, लीजिए, मोस्ट पावरफुल पुड़िया, करे वो जो ना करे टिकिया, हलोऽ फिफ्टी पैसे पर पीस, परपीस, परपीस, तऽ रोज के चीन्हल लोग बेचीन्हल अइसन ताकल।

बिकरी बढ़ऽल डेढ़ गुना।

मन बढ़ऽल सौ गुना।

अब नजर पुड़िया से आगे हुलिया पर जाये लागल।

हुलिया किसिम–किसम के। करिया कोट के बढ़न्ती, उज्जर मन के घटन्ती।

केहू केतनो बनो, जवन बाति उज्जर चमड़ी में हऽ ऊ करिया चमड़ी में हो ना सके। आऽ ओह पर जो गोर चमड़ी सजल–धजल रहे, आह का पूछे के?

अपने से हमार नजर अपनी बाँहिं पर चलि गइल। इहे तनी हमरा दऽब कोर हऽ। रंग हमार बाबूजी अइसन साँवर परि गइल, माई तऽ दूध अइसन उज्जर हऽ।

अइसे कुछु दुनिया के देखत कुछु अपना के देखत कुछु बरिस बीतल कि एक दिन एगो गाड़ी आके दोकानी का लग्गे रुकलि। गाड़ी में से एगो मेम खटाखट चलत हमरे हाथ भर दूरे आके ठाढ़ हो गइल। देखि के चीन्हा गइल, गाहे–बेगाहे कचहरी में आवेले बाकी आजु ले किनलऽसि एक्को पुड़िया ना। एहूकी खटिया में का खटमल परि गइल? अब सोचते रहनी कि सुनाइल– "ए छोकरे पिछले चार–पांच साल से देखती हूँ, तू यहीं बैठा मक्खी मारता रहता है, क्या बिक्री होती है तुम्हारी?" छोड़ चूहा मार–खटमल मार की दवा का चक्कर, मेरे साथ चल, जिन्दगी सँवर जायेगी, कौन–कौन है तेरे घर में? बीवी बच्चे हैं?

"बाप रे, एतना सवाल बिना एक्को जवाब पवले, आदमी बोलऽता कि मसीन।"– मने में सोचनीं आ मुहें से बोलनी– "सोच के बताइब।"

दूइए बाति बोलले में टाइम लागल। एतना देर में मेम आँखि का गज–फीट से हमार अंग–अंग नापत रहली।

"ठीक है, अगली बार आऊँगी तो तुझे ले चलूँगी, सोच विचार क्या करना? मेरे साथ चलना, जिन्दगी सँवर जायेगी।" कहत मेम गाड़ी में बइठि के कचहरी का भीतर बढ़ली।

जेतना हमके अपना बारे में सोचे के रहे ओसे ढेर उनुका बारे में। उनुका बारे में सोचे खातिर हमके कचहरी की भीतरी जिनगी में उतरे के पड़ल, बाबू कहीं कि अपना से अलगा ए दुनिया–समाज के रंग देखे के मोका मिलल।

कचहरी में हमरा रोजी–रोटी चलावे वाला दस पाँच अउर लोग रहेलें– साँप के तमासा देखावे वाला,

जड़ी–बूटी वाला, भागि–तकदीर देखे वाला। ई सब कचहरी के घोंघ–सेवार रहलें। असली कमल आ कि मगरमच्छ–सूंस तऽ दोसरे केहू रहे। अब हम बूझि पवनी कि कचहरी माने मोवक्किल, वकील आ जज, कचहरी माने फैसला–असल चाहे कमसल निआय, दूध के दूध आ पानी के पानी चाहे दूध के पानी आ पानी के दूध।

दोसरा दिन से हम ओ तखता का आसपास घूमे लगलीं जहाँ अक्सर उजरकी मेम के गाड़ी रुकल रहे। महीनन चक्कर लगवला का बाद जवन कुछ जानकारी जुटा पवली अनहोनी से भरल लगल।

उजरकी मेम के नाम हऽ सपना। नाम आ रूप तऽ एके अइसन लागल। सपने अइसन सुघ्घर, मीठ का चीक्कन। बड़हन बाप के एकलौती सन्तान। अकूत धन दउलति। अपने मरजी के मालिक। माई–बाप के कवनो रोक छेंक ना। बिआह अपने से कइली। माई–बाप आपन रजामन्दी दे दिहलन। ससुरे कब्बो गइली ना। बापे के घर में मरद–मेहरारू दुन्नो जन रहेलन।

इहाँ तक तऽ सब गटई के नीचे उतरत गइल, बाकी एकरा अगवा के बतिया, राम–राम, कहीं अइसो होला? हम आपन कपार धइ लिहलीं बाकी जवन कहत रहे उहे तऽ साँचे होई, एगो हमार कपार धइले का होई?

तख्ता के मुंसी बतवलन कि दुन्नु जने में छुट्टा–छुट्टी के नउबति आ गइल बा। हम अपनो समाज में बिआह के बाद पटला–ना–पटला के बवाल देखत रहनीं। रामरेखा काका के बेटी गवना से लवटि के आइल तऽ दोहरउवा ससुरे ना गइल। चार–पांच बरिस रामरेखा काका अपने घरे रखलें फेर ओके दोसरा घरे कइ दिहलें। छुट्टा–छुट्टी आ ओकरे खातिर कोट–कचहरी? हम कपार धऽ लिहलीं। आगे मुंसी जी से कुछ पूछीं एकरा पहिले तखता के बड़का वकील दुइ–चार छोटकन का साथे अइलें आ आपस में कुछ राय–मसविरा होखे लागल। हम अलगे बइठल बाति बूझे के कोसिस करे लगनीं।

"यह केस किसी न किसी तरह जीतना ही होगा।" बड़का वकील साहब कुर्सी पर बइठल बोलनीं।

"सर, पहले इसे अपने हाथ में तो लें, मुवक्किल से कह तो दें कि मैं तुम्हारा केस देखूँगा।" एगो नवका वकील तुरते बोललस।

"तुम लोग क्या समझते हो मैं उस मुवक्किल से वाकिफ नहीं हूँ या केस की अहमियत और फीस की मोटी रकम मेरी आँखों के सामने नहीं है? अच्छी तरह जानता हूँ, इलाके का सबसे बड़ा आदमी है धन में और बल में भी, जो माँगूंगा वही मिलेगा। बात केस की नहीं है, बात है दूसरी पाटी के वकील की। दूसरी पार्टी ने अपना वकील पंडित बंश बिहारी को रखा है, उन्होंने केस अपने पास लेने की हामी भर दी है।" बड़का वकील एतना कहि के गिलास के पानी उठवलन आ गट्–गट् पी गइलन।

एतना बाति सुनि के तखता पर चुप्पी छा गइल। "अच्छा देखा जायेगा।" कहत वकील साहब कागज–पत्तर समेटे के कहि के उठि गइलन।

मुंसी जी सब संभारि के बस्ता बन्हलन आ हमरी मन में उजरकी मेम का जगही वंस बिहारी के नाँव घूमे लागल।

पता ई चलल कि पं0 बंस बिहारी जी सहर के नामी वकील हईं। मोवक्किल से फीस कब्बो ना मांगी। बस एतने पूछिलें कि केस में मोवक्किल के पच्छ सांच वाला हऽ कि झूठ वाला। सांच वाला हऽ तऽ केस स्वीकार। झूठ वाला हऽ तऽ दोसर वकील देखीं। बंस बिहारी जी ढेर केस ना लेनीं आ जवन लेनी, हारीं ना।

अब समूझि पवनीं वकील साहेब के बेचैनी। आ इहो कि कचहरी में सांच का पच्छ में लड़े वाला की लेखा झूठो की पच्छ में लड़े वाला ओतने मजबूती से खड़ होलें। जीति तऽ केहू एक्के के होई, सांच के कि झूठ के– देखल जाव।

ई सब जाने–समुझे के हमार नया चस्का रहे। एह चक्कर में हमार धन्धा कुछु मन्दा पड़ल जात रहे बाकी एह सब के छोड़ल अब तनी मुस्किल रहे।

हमके लागत रहे कि आगे के बाति अब बंस बिहारी जी की तखता से खुली, एहसे पूछत–पूछत हम बंसबिहारी जी की तखता के आरी–पासी चक्कर काटे लगलीं।

पं0 बंसबिहारी जी लमहर के एकहरा बदन के कुर्ता–पैजामा वाला आदमी रहनीं। तखता पर कवनो ढेर भीड़ि ना रहे, छोटवन वकील एक जन रहलें। बंस बिहारी जी की हावभाव से सच्चाई जइसे बोलति रहे। देखि के मन का बड़ा सन्तोष मिलल आ इहो पक्का बुझा गइल कि ई आदमी हारे खातिर बनले नइखे। हम चुपचाप थोड़की दूर पर ठाढ़ हो गइलीं। एही तरे आवत–जात कई दिन बीतल।

एक दिन रोज सान्त रहे वाला पं0 बंसबिहारी के तेज आवाज में बोलत सुननी। अपना सामने बइठल आदमी से ऊ कहत रहलें– "तुम्हारे केस में मुझे कोई रुचि पैदा नहीं हो रही है, कोई ऐसा सटीक प्वाइंट मुझे मिल नहीं रहा जिसे लेकर मैं आगे बढ़ूँ, तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे हो, तुम गलत पक्ष के आदमी तो नहीं हो?"

सुने वाला आदमी सकपकात रहे अउरी नाहीं, हुजुर, नाहीं हुजुर के रट्ट लगवले रहे।

ठीक ओकरा दोसरे दिन उहे आदमी हमरा पुरनका तखता के एगो छोटवर वकील से बतिआवत लउकल। दूनों जने के तखता पर पहुँचत देखि हमहूँ पीछे लगनीं।

बाऽति छोटका वकील सुरू कइलन– "सर यह आदमी आपसे कुछ कहना चाहता है।"

"इसे घर पर बुला लो।" बड़का वकील एगो फाइल देखत कहलन।

"सर, सुन लीजिए, घर पर आ जायेगा लेकिन एक मिनट समय इसे दे दीजिए।" छोटका वकील विनती के सुर में कहलन।

"ठीक है, तुम समझ लो और कल घर पर बुला लो।" बड़का वकील के पास तनिको समय ना रहल, जल्दी से आर्डर दिहलन आ आगे बढ़ि गइलन।

अब छोटका वकील आ नवका मोवक्किल अपने असली रूप में अइलें।

"काम करेंगे वकालत का और दम मारेंगे सच्चाई का। जज तक तो सही फैसले करते नहीं और इन्हें अपनी सही वकालत का बड़ा गुमान है। जब कचहरी में गीता की कसम खाकर झूठ बोला जा सकता है, तब एक वकील के सामने सच बोलने की मजबूरी क्या? अरे भाई वकील हो, फीस लो और काम करो।" मोवक्किल तैस में बोलत जात रहे।

"आपको जीतने से मतलब है न, मैं आपको बतलाता हूँ, अगर आपको एतराज न हो तो मैं अपनी बात आपके सामने खोलूँ।" वकील एक हाथ से दूसरे हाथ के मलत बोललें।

"इसीलिए तो आया हूँ, समझ रहा हूँ आप जो कहना चाह रहे हैं। तैयार हूँ मैं, आप बात आगे बढ़ाइए।" मोवक्किल के आवाज मद्धिम हो गइल रहे।

"भई देखिए, हमारे यहाँ का काम तो सीधा–सादा है। जैसे दुनिया का रंग–ढंग है वैसे ही हमारा भी। केस जीतने के लिए आपकी खिलाफ पार्टी ने जितनी फीस हमें दी है, उससे दूनीं फीस आप दे दें तो हम केस हार जायेंगे, आप वाली कर देंगे। हमारे यहाँ जीतने का एक और हारने का दो– खुला हिसाब है, खुला इसलिए कि सीधा है, खुला इसलिए नहीं कि सबके लिए है, यह खासम–खास मुवक्किलों के लिए है, किसी से कहियेगा नहीं, देखिए जीतने की तो कोई गारण्टी नहीं पर हारने की तो गारण्टी है, हम हार जायेंगे, जरूर हार जायेंगे। और सबसे बड़ी बात एक भले मानुस वकील के सिद्धान्त की रक्षा हो जायेगी, उसके विश्वास की रक्षा हो जायेगी। यह तो धर्म का काम है।"– अब जा के वकील थम्हलें, धीरे–धीरे, थाहि–थाहि बोलतो रहलें। मोवक्किल के देखि के बुझात रहे, सब बात उनुका हिरदय में बइठि गइल बाऽ।""

हमरी पल्ले थोरे परल, ढेर नाहीं। राति के अन्हारे में हार–जीत के खेल हमार मन बूझत रही।

एही तरे दुनिया के कार–बैपार चलल करी। के कइसे जीतल, कइसे हारल, काहें जीतल, काहें हारल – एकर हिसाब के करी? कहे वाला कहलें कि जइसे सुरुज–चान नियम से बन्हल बाड़ें ओइसे अपना समाज के सही तरीका से चले खातिर जवन नियम बनावल बा उहे कानून हऽ। ओकरा हिसाब से चलल मनई–मानुष खातिर जरूरी हऽ बाकी अपना खातिर, अपना लोभ में मनई जवन बगले के राहि निकाल लेऽता ऊ का हऽ? आजु ले वकील के फीस के जवन रूप जानत रहनीं, ई तऽ ओसे अलगे कवनो नया तरह के फीस हऽ। सोचत–सोचत ना सोचे के मन करे लागल। मन कइल कहिओ ऊजरकी मेम अवती त नीक रहल हऽ।

आखिर ऊहो सुयोग आइल। उजरकी मेम का हाथे में एगो फाइल रहे। फाइल तऽ पहिलहूँ उनुकी लगे हम देखते रहलीं जवना के ऊ गाड़ी में धऽ के दउरल करें। आजु फाइल सहित्ते बिहँसत गाड़ी से उतरली– "देखो, आज मेरे मन की मुराद पूरी हो गयी। उस मनहूस से पाला छूट गया, जिसे मैं देर से समझ पाई। मुझे तलाक मिल गया। अब मैं नये सिरे से जी सकूँगी। मैंने तुमसे कहा था न एक दिन मैं तुम्हें लेने आऊँगी। मैं आ गयी हूँ।"

हम हक्का–बक्का आखिर ई सहराती लोग एक्के सांसे काहें बोलेला? कुछु ना बुझाइल तऽ पूछि परनीं– "का करना होगा मेम साब?"

"कुछ खास नहीं, घर में मेरे बूढ़े माँ–बाप हैं, देखभाल के लिए नौकर–चाकर भी हैं। तुम माली का काम करना। पेड़–पौधों की सिंचाई, कटाई–छँटाई।" – कहत के उनुकर देंहि अइसे लहकल जइसे देंहि नाहीं कवनो बेलि होखे।

हमार देहिं सनसनात झन्न से हो गइल। "अइसे अचानक?, थोड़ा सोचने का मोका और दें। जरा माई से तो पूछ लूँ।"

– भकुआइले जवाब दे दिहनीं, अब आगे सोचब जरूर कि का करीं? ●●

❑ 'प्रदक्षिणा' दक्षिणी उमानगर,
सी०सी० रोड-देवरिया-274001

माई के जीउ

आशारानी लाल

खोज–खबर तऽ हरदम उनका फोन से मिलते रहत रहे, एहसे गाँव घर में उनकर अकेल रहल–सहल कबो ढेर खलत ना रहे। इहाँ रहिके ऊ उबियात ना रही। दूर–दूर जाके बसल चाहे रहल तऽ अब आजकल के लरिकन क मजबूरिए भऽ गइल बा– एह बातसे ऊ वाकिफ रही। रोज बचपन क हाल–चाल जनले बिनो न–त् उनका नींन परे, नऽ पेट के खयका पचे। एही चलते अपना मोबाइल के ऊ अपना जान के पीछे राखत रही।

उनका एगो दुलरूवा बेटा क बदली दूर बहुत दूर एगो पहाड़ी इलाका में भऽ गइल रहे। उहाँ से जल्दी–जल्दी आइल–गइल ना होत रहे। ई बात ऊ जानत रही, आ इहे उनकरा सोच क मजबुरियो बनल रहे। रोजे अगियारी देखावत खा, ऊ अपना देवी–देवता से अपन ई मजबूरी कहल भुलात ना रही।

फोनवे से ऊ जनली कि कबो–कबो दौरा पर उनका बचवा के बहुत दूर का इलाका में जाये–आवे के परेला। उहाँ क कुल रस्तवे पहाड़ी बा। रहिया सकेतो बा। बड़ा सोच में रहली।

फोन के घंटी बजवली आ कहली कि–"बबुआ हो अकेले कबो गाड़ी लेके ओह पहाड़ी रास्ता पर कहीं मत जइहऽ। अपना साथे ओइजा के दू–चार गो लोग के जरूर ले लीहऽ। बरसात क मउसम बा। ऊहाँ के रास्ता टेढ़–मेंढ़ आ ऊँच–नीच बा। सम्हर के रहिहऽ। बरसात में पहाड़–नदी बड़ा खतरनाक हो जाला।

अतनहीं तऽ बोलले रही, आगे का जाने का–का बतवती कि ओने से एगो कड़क आवाज आइल। एह आवाज में बिजुरी क कड़कड़ाहट रहे। ऊ जोर–जोर से उनके डपटत रहन। लागल कि एके साथे कइगो ओह आवाज क तीर उनका मुँह का धनुष से एक प एक छूट रहल बा, जवन उनका हियरा आ कान के खूबे बेधत रहे। कुल बान कान में घुसत गइल बाकी उनकर मन के घवाह ना कऽ पवलस। काजाने ऊ मन कइसन रहे कि छेदाइल ना।

सुनाइल कि–तूँ चुप्पऽ रहबे कि ना? रिटायरमेन्ट निगिचा गइल बा आतूँ अब हमके सिखइबे कि कइसे रहीं आ कइसे नोकरी करीं। तूँ अपने के देखु आ सम्हारु। दूसर के फिकिर कइल छोड़ दे। बुढ़ापा में ढेर बकबकाइल ठीक ना होला। सुनतारे किना? हमरा के तूँ आपन अक्किल मत दे। तोरे अक्किल के लेके हम जीयऽ तानी का–रे? अइसने कुल बहुते बात उनका मुँह से छुरछुरी नियर छुटत चलल जात रहे। ऊ सकपका गइली। सुन्न भऽ गइली। एहू पर उनकर मनवा चुपाइल ना। लगली बिचारे। अबे उनकर जियरा बतियवला से जुड़ाइल ना रहे। मोबाइल ऊ अपना हथवे में धइले रह गइली। लगली सोचे।–केतना गलती हमसे हो गइल–ई–त् हम पुछबेना कइलीं हँऽ, कि बचवा खइलन हँ कि ना, आ खइलन हँ तऽ का खइलन हँऽ? कहे के तऽ ओह दिन बताइए देले रहीं कि सावन–भादों में साग–पात चाहे दही–मट्ठा भुलाइयो के मत खइहन।

–अच्छा आज अउरी कुछु हमना पूछब, तबो तनी ई–त् जानिए लेबे के चाहत रहल हऽ कि नीके–सुखे तऽ बाड़न नऽ? रात भऽ गइल रहे। घुप्प अन्हरिया छवले रहे, तब का करती, करिहाँय धइले उठली। कइसहूँ खाढ़ भइली, तब आपन मोबाइल अपना बटुआ में सहेजली। लागल कि देहिया सुन्न भऽ गइलबा। बिछौना पर जाके लगली अपना हाथ हीं आपन गोड़वा सुहरावे, एतनो पर उनकर मनवा अबे सुस्ताइल ना रहे। ऊ सोचत रहे कि उनकर बचवा आज अतना काहे रिसिया गइलें? आजु कल उनका क्रोध बहुते होता। बुझाता कि ऊ भितरी से कमजोर भऽ गइल बाड़े, तबे नऽ जल्दिए झनझना जा ताड़े। बेटा के मोहे, ऊ भितरी–भितरी कुहुँकत रहली तले अचके केहू क कहल लाइन मन परल–माई क जिउआ गाई अइसन बेटा के जीउ कसाई अइसन! ●●

❑ काकानगर, डी-2/147, नई दिल्ली–110003

दू गो कविता

गुरुविन्द्र सिंह

(एक)

जियत मरत जूझत बा घर के परानी।
जिउवा के भइल, जंजाल ई किसानी।

सूखा में सूखि जात बाढ़ में दहावे
आफत में हीत-मीत नजर कहाँ आवे।
सोझबकई में अब ना कटे जिन्दगानी।

खाद-बीज टेक्टर के खरचा बा भारी
सोहनी-पानी के बा अलगे बेमारी
खाली पसेना से बनी ना कहानी।

पुतवा भा भाई जेकर बहरा कमाता
खेतिया ओकर नीके फरत आ फुलाता
फउँकत बा उहे ओकर लउकत बा पानी।

(दू)

भूँके वाला रोजे भूँकी
रुकल कबो ना अब का रूकी!

लूट खसोट कमीशनखोरी
काला धंधा आ घुसखोरी
जब कानून फरज से चूकी।

गिरहत-घर कउड़ी के भाव
बीच बजरिया दूना भाव
सोगहग भाव बिकाले टूकी।

नौ गो नीमन, नब्बे दागी
जस दसनन बिच जीभ अभागी
सोझिया के सब पगरी लूटी।

●●

❑ आर० के० पुरम, नई दिल्ली

परिछावन-लीला

निशा राय

कहाँ बाड़े पण्डित कहाँ बाड़ी नाउन,
आ खोजऽ जा जाके कहाँ बाड़े पाहुन।

अँगनवा में बन्ना नहा के बा खाड़ा,
ओढ़ावऽ जा कमरी लागतबाटे जाड़ा।

बाड़ी चुप दीदी, बाड़ी चुप फूआ,
आ मुँहवे पर इनके बनल पूड़ी-पूआ।

कि लावा भुजवनी में खोजेली सोना,
मिलल बाटे साड़ी फेकसु ओना कोना।

निहोरा पर पाहुन अँगनवा में अइले,
आ सारे के बूसट आ पाईंन्ट पेन्हवले।

कि मन हीं में जीजा करें माई-माई,
कि काहे के देवता बना देहलें टाई।

आ छोटकी सरीनिया बूझत बीया लीला,
कि जीजा के बुद्धी भइल बाटे ढीला।

आ घुँघुटे में सरहज सुनावेली गारी,
नचावेली अँखिया, बजावेली तारी।

कि तभिए दुआरे से आ गइले कक्का,
आ गावत पतोहिया भइल हक्का-बक्का।

इ गवते बजवते में कइलू अन्हार,
न चहुँपी बरतिया ना लउकी दुआर।

कि रे बूढ़ी तोरा बुझाला ना कीछु,
तुँ घूमत रहेले पतोहिए के पीछू।

कि घंटन से दुअरा प बाजऽता बाजा,
आ टाली प सजल अरकेस्टा के छाजा।

कि गँउए के बहरी परिछबू तुँ जाके,
अ लोढ़ा घुमाके आ पइसा लुटाके ।

कक्का के देखि सब एक्सन में आइल,
गहना आ कपड़ा के झगरा भुलाइल।

लागल लिखाए नहछुआ फटाफट,
बटुआ में नगदी धराता खटाखट।

कि इमली घोंटावे चहुँपि गइले मामा,
आ दही झोंकाइल त भींज गइल जामा।

बन्ना के माई ले तेजी में आके,
आ अंचरा में फुटकर के झोरी दबा के।

कि मइया के गाना चटक के कढ़वली,
आ पंडित हजामिन के गारी सुनवली।

उ देवी-अथाने पर मूड़ी पटक के,
आ बन्ना के लेके निकलली झटक के।

आगे-आगे घोड़ा, पीछे-पीछे हाथी,
आ कक्का के फूलल छप्पन इंची छाती।

बियहुती सफारी में मामा चलेलें ,
आ फूफाजी बान्हत पजामा चलेलें।

कि बाजऽता मुन्नी आ शीला के गाना,
कि छपरा, बलियाँ, आरा जीला के गाना।

काका भइया संगी साथी चलेलें,
आ ठुमका लगावत बराती चलेलें।

कि ए सखी हमनी के घरे चलेके,
बिहाने आवल जाई कनिया के देखे।

●●

❑ निशा राय, गोरखपुर

हँसुआ-खुरुपी के गीत

शारदा पाण्डेय

कइसन आगि दहक रहल बा। अदिमी अदिमी के जरा रहल बा।
जनता के भड़कावे में सर्टिफिकेट लवटावऽता, बाकि ईनाम के धन टेंटिआवऽता।
जहाँ से होता आपन लाभ कमा लेता। गजब क चल्हाँक- आ धूर्त्त !
ई मौखिक सहानुभूति के सोता बहा दिहें सऽ।
अपने तऽ वातानुकूलित घरे में रहिहन सऽ।
कुल्ही सुख-सुविधा, सुरा-सुन्दरी के भोगिहन सऽ, जीहन सऽ
आ मजदूरन में हँसिया-खुरूपी से आगि बोइहन सऽ।
हड़ताल करइहन सऽ आ सब्जी दूध सड़क पर बहवइहन सऽ।
काम बन्द करावे में सुतार परी तऽ खूनो बहवा दीहन सऽ।
बरिजे वाला के हत्या करवावे में, देस में आगि लगावे में
इन्हन के महारत हासिल बा ! लाजो ना लागे, चाहेलन सऽ-
कि कहीं ना कहीं रोजे आगि धधके
ईहे इहनी के धन्धा आ दोकानदारी हऽ।
सच्चाई आ शांति से इहनी के तीन छव के नाता हऽ।
मुअला मार्क्स आ लेनिन के गीत
इहनी के राष्ट्रगीत-भजन हऽ।
रामकृष्ण बुद्ध अशोक इहनी खातिर खलनायक हवें
ऊ सच्चाई, आदर्श ना होके कल्पना के प्राणी हऽ लोग।
आतताई बिदेशियन के अत्याचार भुला के, उन्हन का वीरता के कविताई गवाइल इन्हन क रीत बा।।
इ देश के विकास खातिर दीमक बाड़न सऽ।
अपना पर तनिको अवरेब ना आवे। दसो अँगुरी घीव में डूबे।
आपन लइका विदेश में पढ़े, घूमे, कमाय आ गरीब के लइका भूखे मुए
ना तऽ इन्हन खातिर नारा बोवे।
गरीब के घर बिकाऊ, बिलाऊ। लइका के जान मराऊ।
आगि के भाषण से खून में उबाल आवे
विदेश से आवे वाला धन इनहन का काम आवे।
अपना देश के विभाजन में
जनता के डँसवावे, भोरावे में
अपना सुख में लबरेज रहे में इन्हनी के कीर्तिमान बा
अपने देश के हलुक बनावे में। विकास के झुठियावे में
एही बारूदी शहरी बुद्धिजीवियन के हाथ बा।
अब न्यायो के अँगूठा देखावे वालन के साथ, इन्हन के मिलल जाता। 'पी.एम.' पाकेटमार कहाता।
जनता चुप बिया, केहू के एमे का जाता?
जनता का करो? देखि, सुनि के भकुआइल, जानियो के अलचार बा।
कुंठा के सिकार बा भा ओकरो बुझला, सही समय के इन्तजार बा!! ●●

❑ 142, बाघम्बरी गृह योजना, भरद्वाजपुरम्, प्रयाग-211006

नकछेद आम के पेड़ आ हमार गाँव

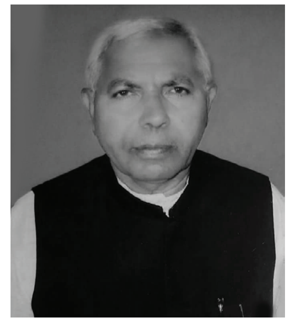

इंद्र कुमार दीक्षित

हर साल की तरे एहू साल आम पाके क सीजन आ गइल। आ मन ललच ललच के रहि जाता कि कब आम पाकी आ कब खाये के मिली। इहे सोचत बिचारत कब पचास साल पहिले के अपनी गाँव की बारी में चोंहपि गइलीं,पते ना चलल। अब त तनको बुझाते नइखे कि कवन सीजन कब बदल रहल बा, लेकिन गाँव में रहल जाव त ई बात ना रहे। जब कउनो नाया फसिलि तइयार होखे, महुआ फुलाय, ऊंख पेराये लागे, आमन में बउर आ टिकोरा लागे, फगुआ चइता गवाय, आल्हा कजरी होखे भा नया चाउर (धान) गेंहूँ कटाये लागे, गाँवसिवान में बनिहारिन क गीत उठे लागे त पता चले कि सीजन बदल रहल बा। हर सीजन के अलग अलग परब तिहवार मनावल जाय, नेवान के घरके बड़ा बुजुर्गन से नाया पुरान खाये के आसिरबाद मिले। गाँवगाड़ा से बाबा–इया काका–काकी, भइया–भउजी, बाबू–बबुनी क एगो परिवारिक रिस्ता रहे। केहु भरसक केहु के नाव लेके ना बोलावे। केहु से कउनो बात के लेके कहासुनी आ भा मारोपीट हो जा त होली दिवाली पर ऊ भुला के फेरुसे मेल मिलाप हो जा। ज्यादा तर कामकाज एक साथे मिलजुल के होखे चाहे ऊ खेत किसानी आ भा सादी–बियाह, मुअनी–जियनी सबमें सब सामिल रहे।

बोअनी–बइठवनी,हर–हरवदि,मुंड़न–छेदन,गवना–बियाह कुंआँ पोखर, घर–बखरी बनावल, बाग बगइचा लगावल, कूर–कुरमुन्नन सब कारज साइति–समहुति से होखे। आ एह मौकन पर तरह तरह के बिंजन आ रसोई–बारा–बरी, दलपीठा–दलपूरी, पुआ–सोहारी, हलुआ–पूड़ी, कढ़ी– फुलउरी, बखीर–रसियाव, लिट्टी–चोखा, दही–चिउड़ा आ खिंचड़ी से परब तिउहार क धमक पता चले। बिअहल आ लरकोरि बेटी–पतोहन किहाँ हरियरी, तीजि, पिड़िया आ खिंचड़ी भेजले क रिवाज रहे जवनामें कपड़ालत्ता चाउर –चिउड़ा, लाई–मिट्ठा, फलफूल, के अलावा सिंगार–पटार के सामान आ लइकन के खेलवनो भेजल जाय ना त उन्हनी के नइहरा–ससुरा से ताना–मेहना आ सिकाइतियो सुने के मिले। कहे क मतलब कि हारी–बेमारी, मुअनिजीअनि, संपति बीपति, सूखादहार, अभाव–सुभाव झेलत, एक दुसरा के सुख–दुख में सामिल–सरीक होत, हालचाल लेत–देत, नेवता हँकारी, मर–मेहमानी, खेती– किसानी, करज–उआम निबुकावत पते ना चले कि कब साल सुरू भइल आकब साल– माथ भंटा गिल। गाँव में एह दुख–सूख के साथी बने गीत–गवनई, नाच–फरुवाही, हाट–बजार, लीला–रमलीला आ आल्हा–लोरिकाइन जवन सीजन के अनुसार मनोरंजनके साधन रहे।खलिहर टाइम में नवहा–नवही

लोग चिक्का–कबड्डी, कुश्ती–अखाड़ा, दंगलबाजी, गुड़िया –पिड़िया, ओल्हा–पाती आ नाटक–नकटउर में मशगूल रहे त बुढ़ऊ लोगा कीरतन–भजन,

चौपाल आ बतकही में। सबलोग सबके चीन्हे पहिचाने, टोला परोसा के मेहमान पाहुन सबके मेहमान पाहुन रहे। पचइंया, दसहरा, दिवाली–होली भा सादी गवना में सब सबकी दुआर प जा के अपनी पद आ बेंवत के मोताबिक सहजोग करे। एसे ओगरह गाँव एगो परिवार की माफिक बुझाय। अब त गाँव सहर आ सहर गाँव में पइठि गइला से सबकिछु उलटि पलटि गइलबा। दूनो कि पास निखांटी आपन कहाये खातिर किछु बाचले नइखे।

बाति आम के सीजन से सुरू होके काहाँ से काहाँ चोहोंपि गइल किछु पते ना चलल। हमार गाँवहऽ मरहवा सज्जो गांवन जइसन एगो गाँव जौना में करीब तीनि सौ घर के आबादी पाँच टोला में बंटल बा–पुरुबटोला, बीच गांव, चमरउटी, बारीटोला आ दुबउली। अब त पूरा गाँव एगारह वारड में बा, हरएक वारड से पंचाइत के आरक्षण के मुताबिक एक एक सदस्य चुनल जात बाड़ें। ए तरह से गाँव में साठ–सत्तर घर अहिर करीब एतने आ भा दु–चार घर ज्यादा कोइरी, चालिस घर मुस्लिम्, एही के आरे पासे चमार, दस घर धोबी, पाँच घर तेली, पाँच घर मलाह, दस घर गोंड़, सात–आठ घर कमकर छव घर दुसाध, सात घर बाभन आ एकघर बनिया के बा। बाबा लोग में से दुइये तीनि घर गांव में रहता बाकि सब लोग बहरें रहता। अउरी बिरादरी में भी बहुत लोग नोकरी भा बेवसाय के चलते सहरन में जा के वोंही घर दुआर बना के बसि गइलबा लोग। कबो कालि के सादी बियाहे, केहु के मुअला पर भा परधानी के चुनाव मे लोग वोट डाले आवेला।

त हमरी गाँव के चारु ओर कई गो बगइचा आ गड़ही पोखर तब रहेंसऽ। अब त सगरो बारी बगइचा कटि उजड़ि गइल, ना त हमरी टोला क नाँवें बारीटोला धइल रहे। एगो–दुगो छोड़ि के सब गड़ही भराके घर मकान बनि गइल बा। साहु के बगइचा, रंफल के बारी, टोलापर के बारी, दुबेआ दीक्षित बाबा लो के बारी बिरजु के बारी, परसहिया, जिगिनहिया, अकटहिया आ करबलही नांव से कुलि गड़हिंन आ बगइचन के नांव बुता गइल जहाँ पूरा गरमीभर चउआ चुरुंग आ अदिमी के रातदिन बसेर रहत रहे। ए बगइचन में सबसे जियादे आम के पेड़, फेर महुआ के, कुछु जामुन के फलवाला पेड़ रहें स। एकरे अलावा गूलर बरगद पीपर, पाकड़, नीबि, कटहल आ कतों कतों बइरि, सहतूति आ तरकुल के भी पेड़ रहे। सज्जो बगइचन में बीजू आमन क उहे उहे वेराइटी–सेनुरिहवा, लिटिहवा, टैरिहवा, चिनिहवा, चोंपहवा, चउरिहवा, मदहवा, गोबरहवा, लंगड़हवा, तीन फेड़वा, कोइलिहा, डूंड़ाआ मंल्दहवा नामसे मसहूर रहे। कउनो कउनो बारी में दु चारि पेंड़ कलमियो आमे के रहे लेकिन ओकर बिसेष रखवारी रहे। दुबउली के दुबे बाबा क आ दीक्षितबाबा के बगइचा गांव के पछिम चतुरी के सिवान प रहे। आम आ जामुन के सीजन में चमटोला बारीटोला आ दुबउली के लइका मेहरारू सब एही बगइचन में जमल रहे।

दुबेबाबा लोग के घर के पिछुआरा सटले एगो बहुते बिसाल आमे के पेड़ रहे जौने के डाढ़ि पात बरगद के तरे करीब चार पाँच कट्ठामें चारुओर फइलल रहे, अकेले दसगो पेड़ के बराबर। जइसने ऊ भारीभरकम रहे ओइसने कउनो सालि ऊ फरले बिना बांव ना जाय। हरसाल बेपनाह फरि के लदर जा। ऊ पेड़ नकछेद के नाँव से मसहूर रहे। कहे लोग कि दुबे बाबा लोग में से नकछेद नाँव के पुरनिया एके लगवले आ पोसले रहस। जब एहपर झोंपे क झोंपा टिकोरा लटके लागे तब्बे से लइका आ टोला परोसा के लोग घुरियावे लागे। जेठ–असाढ़ी में जब बरखा के पहिला लवन्नर गिरे तब्बेसे नकछेद क आम पियराइल आ पाकल शुरू हो जाय आ वो ही समय से जइसे मधु की छाता पर माछी छापें सऽ वोही लेखा लोग नकछेद के छपले रहे। वोजह रहे एह आम के खुशबू आ मिठास जौन दुसरा कउनो आम में ना मिले। जब ई आम पाकल सुरू होखे त पूरा सिवान–सरेह मादक महक आ मिठास से भरि जाव।

एक्कादुक्का आम चूवल सुरू होते दुबेबाबा लोग के घर के अउरतन आ लइकन के पहरा बइठि जाउ। हर परिवार से चउबिसों घंटा चरपाई–चटाई बिछा के पेड़वे तर सूतेजागे लोग। सबेरे तकले जतना आम चुवल रहे एकट्ठा कइल जाव आ आठ बजत बजत बखरा लागे। एक दू खाँची से सुरू होके सीजन के चढ़ंती पर पनरह बीसबीस खाँची आम गिरे। आम बंटाये लागे त जेभर उहाँरहे पहिलहीं सबके पँचपंच दस दस आम साझे से बाँटि के त बखरा लागे। दुबे परिवार से रिश्तेदारी के नाते हमरी घरके केहू रहे त वोके खासमानि के ढेर आम दिआउ। केहु झिहिलवले की बहाना, केहु छंहइले की बहाना आ केहु सुस्तइले की बहाना त केहु मिठका आम पवले की लालच बस

नकछेदआम तर हिरले रहे लइका त दू बजे रतिये से झोरी लटकवले आम बीने खातिर अन्हारे धुन्हारे घर छोड़ि दें सन। उनहन के सांप गोजर कीरा मकोरा किछऊ के डर ना लागे। आम के सीजनभर दाल–तेवना किछऊ के जरूरत ना लागे अमवे से पेट भरल रहे। नकछेद क आम त बहुत साइज में बड़वर ना होखे बाकि रसगर बहुत रहे आ सवाद में वोकरी आगे लंगड़ा, दसहरी, कपुरी आ सफेदा सब फेल रहे। आमे के चलते दुबे परिवार के समहुरिया लइकन से खूब दोस्ती गाँठल जाव ताकि सीजनभर नकछेद पेड़ क आम खाये के मिलत रहो। एक्के पेड़ कम सेकम बीस परिवारन क सहारा रहे। इहां तक कि हमरी होश में वइसन खुशबू आ मिठास क दूसर आम ना देखाइल।

करीब पचीस–तीस बरिस पहिले एगो बाबू साहब गाँव की पछिम सिवान पर बिरजू के बगइचा कि लगे ईंटा पकावेवाला चिमनी खोलि दिहलन जवने के धूंआ लगला से पूरा गाँव क बारी बगइचा लाही लगके खराब हो गइलेंसऽ। माघ फागुन में केतनो नीमन बउर लागे लेकिन सब लसिया के गिरि जा एगो टिकोरा तक ले ना बांचे। इहे हालि नकछेदो के आम क भइल। धीरे धीरे कुछु पेड़ उकठि गइल किछु कटि गइलकिछु आन्हीं बावख में गिरि टुटि गइलन स। बचल तवन ठिकदार खरीदि के कटवा ले गइलन स। आखिर बाँझ पेड़के राखित।दुबे जी लोग आपुस के झगरा छोड़ावे खातिर नकछेदो पेड़ के बेचि दिहल लोग।ए तरह से आम के बगइचन के साथे हमरी गांव के संस्कार आ संस्कृति भी खतम हो गइल । एही लिए अब गाँव में जायेके मन ना करेला काहे कि गइला पर गाँव क बाग बगइचा, इनार पोखर घर दुआर आ सबसे प्रिय 'नकछेद क आम' मन परे लागेला आ ओमे से किछऊ ना देखले पर मन थोरिके देर में उचटिजाला। बारी के आमन के मिठास अ सवाद की जगह चिमनी के अप– संस्कृति गांव के छापि लेलेबा। आम की सवाद के जगह चिमनी के भठ्ठी पर चुवावल ठर्रा क सवाद लोगन के जीभि पर चढ़ि गइल बा आ गाँव के राजनीति गांव के लोगन के कतर ब्योंत रहलि बा। ●●

❑ वार्ड नं.13/45 गीतांजलि, मुंसिफकालोनी
रामनाथ देवरिया (उत्तरी), देवरिया(उ.प्र.) 274001

पाती

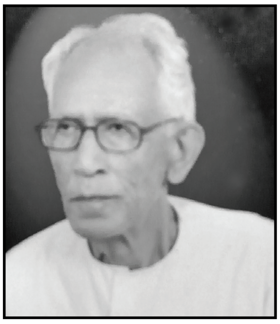

पतिया बाँचत मोर छतिया जुड़ाइ गइली
सपना भइल साकार।

बारह बरिस पर पिया मोर इयाद कइले,
जगि गइले भगिया हमार।

ललसा के कुर्सी हमरो चमकि गइली,
झाँकत बाड़े नयना दुआर।

अँगिया फरके मोरे अँचरा भितरवा,
धरती प डेग ना हमार।

छिने अँगना, छिने घरवा में जाईं, हम
कब होइहें पिया से दीदार।

पतिया के देखि-देखि सबुर अँटकि गइले,
निरखीला हम बार बार।

'किसलय' के पतिया सटाई लिहनी, छतिया
खिले लगले नयना कचनार। ●●

❑ हरिद्वार प्रसाद ''किसलय''

कहिया आ रहल बाड़ू तूँ...

संजीव कुमार श्रीवास्तव

जाड़-पाला के असकतियाइल बिहने पहर
कउनो गहिरात कुहासा जइसन
हमरा भीतर समाइल रहेलू तू ।

पातर-पातर पगडण्डियन के बीचेबीच उगल
हरियर-हरियर दूब पर
जमकल ओस के एकहिक ठोप मिल के
मखमली सेज बिछवले बाड़ी सन
तोहरा खातिर
कि ओहपर से होके कहियो त डेग डलबू तू !

फूलल-फूलल पियराइल सरसों
बउरा गइल बारी सन फेरु
तोहर आर-पार लउकेवाला/झिलमिलात
सेनुरिया आ बुल्लू चुनरी में
नेहिया के नवका रंग जे भरे के बा ओहनी के
का बिटोरे ना चहबू
आपन अँचरा में तूँ !

गेहूँ के नान्ह हरियर बाली
होश सम्हालत
बाट जोहे लागल बिया तोहार
कि कहिया आके ओहनी के दुलार करबू तूँ !

उगत सुरुजदेव अबहिंयें-अबहिंयें
आपन किरिनि के छितरावल शुरु कइलें बाड़ें
सोना नियन आभा जेकर
कइल चाह रहल बा
तोहरा माथा के साज-सिंगार
का ए अभिसार ला बेकरार नइखू तूँ !

शीशम के गाछी के
बीच से होके सँसरत
सरसरात ठाढ़ हवा
रोज बिहने पहर
कनवा में चुपेचाप
कनफुसकी लेखाँ कइ जाला
तोहार अइला के
चलअ ! अब त बताइये दऽ कि
कहिया आ रहल बाड़ू आखिर तूँ ! ●●

❑ जक्कनपुर, पटना

बलिया गाथा

शशि प्रेमदेव

ज्ञान-दान-संघर्ष-बगावत। इहवाँ कऽ पहिचान।
- बलिया जिला देश के शान!! बलिया जिला....

एइ माटी का कोख से जनमे, त्यागी अउर विरागी
जगर-मगर का पाछा ई धरती भागल ना भागी
        तपोभूमि हऽ; जे एकरा से घात करी, ए भाई
        सात जनम ले छाती पीटी, रोई आ छपिटाई
        बेसी ना कूदे-फानेला/बलियाटिक एतने जानेला
        -बैमानी का धन-दउलत से/बढ़ि के बा ईमान!! बलिया जिला...

डेग-डेग पर जंगे-आजादी कऽ अमिट-निशानी
जल्पा-कलपा, मंगल, चित्तू, कौशल-जस अभिमानी
        कवनो जुग आयी, दुहराई एकर, गौरव-गाथा
        केतनो जोर लगवलस दुशमन, हेठ भइल ना माथा
                लिलकरस जब तान के सीना/अँगरेजन क' छूटल पसीना
                - असहीं ना 'बागी' कहि-कहि के/दुनिया करे बखान!! बलिया जिला...

झारि के धोती-कुर्त्ता, कान्ही पऽ गमछा लटका के
चले त सइ गो मनई में लउके बेटा-बलिया के
        चाल नदी के धार मतिन, सुरहा-जस चाकर छाती
        आँखि मिला के बतियावे, जाने ना ठकुर-सुहाती
                संघतिया असली मोका कऽ/गुन गावे लिट्टी-चोखा कऽ
                - ऊपर से सुकुवार-सुकोमल/भीतर से चट्टान!! बलिया जिला....

सोच-समझि के बलिया पऽ हँसिहऽ, तूँ फेर ठठाके
कुछुवो कहला ले पहिले, पढ़ि लऽ इतिहास उठाके
        राजनीति, साहित्य, कला, विज्ञान भा खेती-बारी
        रहल बा हरमेसा बलियावासी सबका पर भारी
                खबरदार, जनि आँखि देखावऽ/तनी अदब से सीस झुकावऽ
                - ए' धरती पर आके बौनाऽ बनि जालन भगवान!! बलिया जिला...

●●

❑ प्रवक्ता, कुं० सिंह इ० का०, बलिया

बलिया-चौक: शहीद पार्क के कहानी

राजगुप्त

गाँधी बाबा के सोझा, तीनिगो बानर बइठावे के बाति आवते मन घबड़ाये लागल। तबले आपन साहित्यिक गुरु-चेला पं. जगदीश ओझा 'सुंदर', नगेन्द्रनाथ भट्ट जी अचकले में इयाद परि गइले। भट्टजी नब्बे के लगभग के होत होखब। "रात्रि संस्था" (नाइट क्लब) के सदस्य रहलीं। इहाँ के जरूर जानत होखब कि गाँधी के मूरत कब बइठावल गइल रहे। भट्टजी का लगे चोहँपली, सवचलीं। कवि जी कहले- "गाँधी बाबा के मूरत कवना सन् में लागत रहे। हो, बाबा के स्थापना, के कइले रहे? बुढौती में भुला गइल बानी। सज्जी कर्त्ता-धर्त्ता मोती बाबू रहलें। उनसे सवचला पर पता चली। फेड़ के पता चलि गइल, तऽ सोरि के पता लगावल, कवनो मोसकिल काम नइखे। मोती बाबू से मिले खातिर हम उहाँ के धरे गइली। पता चलल मोती बाबू आजु के तारीख में शिकागो (अमेरिका) में बाड़े।" घर के लोग बतावल-"केतना बढ़िया संजोग जुटल बा। हालि चालि लेबे आइल बानी। आजुवे अमेरिका क राष्ट्रपति ओबामा, शिकागो आइल रहले ह। ओबामा के अवाई में मोती बाबू अगुआनी क... के उहाँ के आवभगत कइले ह। धोती कुर्त्ता पहिरे वाला मोती बाबू, पैन्ट कोट टाई में आदर सत्कार कइके ओबामा से हाथ मिलवले ह। अबहिने टटके फोन आइल रहल ह।

मोती बाबू के दवाई ओइजा से चलेला। दवाई करा के एक-दू महीना में उहाँ के गाँवे लवटब। 1966 क बाति ह। हम

मझौली पढ़ावत रहलीं। घर के सोझा लक्ष्मी के पान के दोकान रहे। अउरी दोकान बन्द होते लक्ष्मी के पान के दोकान के सोझा चउकी लगि जाउ। मोती बाबू के 'राति संस्था' (नाइट क्लब) में नौ बजे के बाद लोग खा-पीके पारा-पारी आवे। मोती लाल सरावगी 90 बरिस, कविवर नगेन्द्रनाथ भट्ट 90 वर्ष, स्व. काशी प्रसाद 'उन्मेष', अनवारूल हक पत्रकार, स्व. मुजफ्फर साहेब (रईस आदमी), स्व. भोला बाबू चूड़ी वाले, स्व. विश्वनाथ सिंह चेयरमैन, नगर पालिका परिषद, कोतवाल लारी-साहेब (साइकिल वाले), स्व. गुप्ता जी इतिहासकार, स्व. जगदीश ओझा, आ सबसे कम उमिर के हम रहलीं। ओही समय में शीश महल के उद्घाटन भइल रहे। मोती बाबू के अजबे गजब के शायरी आ चउकी हिला देवे वाला हँसी के ठहाका, भट्ट जी के कविता, गुप्ता के बहस पर, ओझा जी के वीररस के कविता, मुजफ्फर साहेब के टोका-टोकी, अनवारूल हक आ चेयरमैन साहेब के गाभी, उन्मेष जी के राजधानी एक्सप्रेस लेखा बेलगाम बाति? आजु 2019 में बीतल बाति इयाद आवता त सज्जी दुःख-दलिद्दर, देहि के बात्था गदहा के सींग लेखा हेरा जाता। मीठा पर जइसे चिउँटा झूलेले। हमहूँ राति संस्था में बइठे के बान डलले रहलीं। ढेर गर्मी पड़े त हवा खाये खातिर शहीद पार्क में जाके बइठि जाईं जा। केतना नीक ऊ दिन रहे। मन परला पर सरग-सुख झूठ हो जाता। सितम्बर 2013 में मोती बाबू के बलिया आवते हम उहाँ के घरे चोहँपली। शहीद पार्क नाव हम आ उन्मेष जी मिलजुल के रखलीं जा। स्वतंत्रता सेनानी के परिवार से हमहूँ रहलीं बाकिर श्रीनाथ भगवान कवनों चीजु के कमी ना देले रहले, जवना देश खातिर कुर्बानी दिहलीं ओकरा एवज में देश से कुछ लिहल भला ना कहाइत। एह से हम स्वतंत्रता सेनानी पेंशन ना लिहलीं। चउक के बीचो बीच में एगो बड़का इनार रहे। इनार का ऊपर बड़हन गोल गुम्बज रहे। इनार के पानी मीठ उज्जर साफ-सुघर रहे। जेसे मोहटन मोटहन रस्सा लेखा डोरि से लोहा के गगरा से पानी खींचि के निकालल जाऊ। पीये खातिर एह इनार के पानी अमृत रहे। कमकर रहले। महीना भर पानी गगरा-गगरा घरे घरे पहुँचावें। बाकी जगहा में घास पात आ चांदनी फूल के बड़का बड़का फेड़ रहे। जेकरा छाँह में अस्थिर बइठि के सलहन्ते आदमी सतुआ खाउ। ओइजा अंगौछी-गमछा बेचाउ। पता ना कवना बुद्धि के अंगरेज रहले। पता ना कई हाली गंगा में बहला के बाद बलिया के बसवले रहले। शहर में पार्क खातिर कहीं एक बित्ता जगहा ना छोड़ले रहले। इहे बाति हमरा नस में खून अस अइसन ढुकल कि मन से उतरबे ना करें। ओही समय हम प्रन कइलीं कि चाहे जवन नव-छव पड़ी शहर में शहीद पार्क बना के दम लेइब। सज्जी दुख सह के एइजा फुलवारी बनाइब। राति संस्था बना के हम शहीद पार्क बनावे में तन-मन से जुटि गइलीं। राति संस्था के लोग हमरा सुकरनी के सराहला के कारन आनो आदमी के सहयोग मिलल। मोती बाबू कपड़ा के दोकानदार रहले। ओघरी उनकर चलती रहे। एगो जमाना रहे जब उनकर तूती बोलत रहे। काहें से कि जिला के सज्जी नेता उनका गद्दी पर बइठकी करे। नेतन के जमावड़ा के कारन दोकान खुबे मनसाइन रहे।

समरथ के अनुसार मोती बाबू नेता-लोगन के चुनाव में खर्चो-वर्चा करें। चन्द्रशेखर जी के त बुझला ओइजे चिरूकिये गड़ा गइल रहे। गद्दी पर पल्लथी मारि के जो बइठि जासु त टकसे के नावे ना लेसु। फरियादी भाइयन के हमेसा भीड़ि लगला के कारन दोकान गुलजार रहे। एही सुकरनी से मोती बाबू बजारि में मान-मरजाद रहे। जेकरा चलते फुलवारी बनवाये खातिर रसीद छपाइल। चन्दा के पइसा आवत गइल। आमद होत गइल, काम बढ़त गइल। गुदरी बाजार का ओरि वीर कुंवर सिंह द्वार, हनुमान गढ़ी कोरि 'मंगल पाण्डे द्वार', पानी टंकी का ओरि 'चंडी प्रसाद द्वार' आ स्टेशन का ओरि 'गाँधी द्वार' बनल। लोहा छड़ के फाटक लागल। मोती बाबू बतवले कि एक हाली लखनऊ गइल रहलीं, घूमत-घूमत सचिवालय पहुँचि गइलीं। डेढ़ सइ गुलाब के गांछि रोपनी। रोज उठीं सुती जा के देखीं कि कई गो गुलाब फुलाइल बा। गिनती क के आईं आ दोकान पर जाये से पहिले झांकीं त एकहूँ ना। ई सोचि के मन पारि ली कि जरूर भगवान पर चढ़ल होई। कबो-कबो खिसि बरे, 'कमाव धोती वाला, खाव चिकोटी वाला'। फुलवारी के फेड़ पर फुलाइल फूल आ भगवान पर चढ़ल फूल के बारे में मने मन तर्क-कुतर्क करे लागीं। संस्कार आ सोभाव के बारे में सोचत-सोचत मन अउँजिया जा त सज्जी बाति बिसारि दीं। प्रकृति आ परम्परा चलत आवता, आगा भी चलत रही। पार्क बनववला के नशा में मोती बाबू लोग-लड़िका, घर-दुआरि कुल्हि भुला गइल रहले। साइत से संजोग भला। नगरपालिका पानी के पाइप बिछावे लागल। नगर पालिका मुफ्ते में पानी के पाइप फुलवारी शहीद पार्क में बिछा दिहलसि। जेसे शहीद पार्क के इनार के पानी सड़े लागल। बसना के आगे फूल के महक मधिमा गइल। राति बइठकी में इ निरनय भइल कि जोगाड़ पानी से इनार पटला से बढ़िया बा, हमेस खातिर पाटि दिहल जाव। परबोध बाबू चउक में एक जाना गोरहन लमहर सुन्दर देहि-धजा के डाक्टर रहले। मजाकिया के साथे साथे बड़ी मिलनसार रहले। इनार पटाये के बेरा धमकि पड़ले। कहले मोती बाबू इनार पाटे के पहिले एह इनार के एक बोतल पानी चाहत रहल हऽ। मोती बाबू पूछले महकत पानी लेके का करबि? एतना साफ-सुथर पानी के आजु ई हालि? केहू जहर माँगी त एही के देइब? (आजु के समय में जइसे गंगा-जमुना) इनार पटइला के बाद ओतना दूर खाली-खाली लउके जवना से फुलवारी के सुन्दरता मरा जाव। तब निरनय भइल कि केहू के मूरत बीच में बइठा दिहल जाय, जे से पार्क के शोभा बढ़ो। मूरत के बाति के कानो कान खबर फइल गइल। देवता, स्वतंत्रता सेनानी, नेता

भा कवनो बड़ा आदमी के मूरत बइठावे के बाति रोज आवे लागल। किसिम-किसम के बतकही सुनि मोती बाबू के कान पाकि गइल। सोचे लगले केहू अइसन आदमी के मूरत बइठावल जाव जेह पर केहू अंगुरी उठावे वाला न होखे। खोजत-खोजत गान्धी बाबा पर बाति आ के अटकि गइल। देश में उहें का बेदाग बानी। गांधी जी के बाति आवते सभका मुँह पर ताला लागि गइल। सिफारिश आइल बन्द हो गइल। मोती बाबू के जीउ में जीउ पड़ल। अब सवाल उठल एतना बड़ खर्चा कहाँ से आई?

ओह जमाना में बड़े मिआँ आ मथुरा प्रसाद, विश्वनाथ प्रसाद के कपड़ा के दोकान नामी रहे। खोजत-खोजत मथुरा प्रसाद विश्वनाथ प्रसाद दानी भेंटइले। महमूद बट ओ घड़ी जिला कलक्टर रहले। जिन मथुरा प्रसाद विश्वनाथ प्रसाद के फर्म के कर्त्ता-धर्त्ता सूरजराम से निहोरा कइले। दानी सूरज राम बे-हर्रे-फिटकरी के बाबा के मूरत देबे आ टीसन का ओरि 'गाँधी द्वार' बनावे के बाति स्वीकार कऽ लिहले। दानी के नाव पता चलल त हम बाबा के संघतिया बानरन के बइठावे के बाति चलावे खातिर आर्य समाज रोड में फर्म पर चोहँपली। एह नाम के कवनो कपड़ा के दोकान ना। अगल बगल सवचलीं। पता चलल। आपुस में बँटवारा के चलते फर्म बन्द हो गइल। मने मन सोचली। ताजमहल बनावे वाला राजा के नामो-निशान ना। शहर बलिया खातिर ओह समय में गान्धी बाबा के मूरत के बइठावल कवनो ताजमहल बनववला से कम रहे का? एतना सोचते रहली कि तबले रामजनम भाई भेंटा गइले। हमरी साथे १९६४ में पढ़ल रहले। बतवले, हम सूरज प्रसाद के बेटा हवीं। कहले- "का कुसमय राग अलाप दिहलऽ। चलती के नाव गाड़ी होला।" लछिमी जी गोड़ तूड़ि के एक जगहा ना बइठें, बेवपार जिनिगी के ज्वार-भाटा हवे। जे कुछ कइल, ऊ बिला गइल। आजु जे बाबा के नाँव लेता उ मलाई काटऽता। दोहरउवा सोचलीं जे दुख देले बा, ऊहे दवाई दी। एतना सोचि के उल्टे गोड़ बाबा की लगे लवटलीं। देखि के झईं आ गइल। अतने दिन में बाबा शीशा के भीतरी बन्द हो गइले। हमरा समस्या के समाधान हो गइल सनू इयाद नइखे पड़त। जब मोती बाबू अमेरिका चलि गइले तब से शहीद पार्क के देखरेख नगरपालिका करे लागल। सनू इयाद नइखे पड़त बाति के इतिहास बतावे खातिर 'रात्रि संस्था' के सदस्यन में एगो हम बचल बानी। अब बाबा खाली देखि सकेले। अनेति देखि के ना कुछ बोलिहें, ना कुछ सुनिहें। केतना बढ़िया रेवाज बा। बोलता, शीशा में बन्द बा, आ जिन्दा (मंत्री) पर करिया-बिलार (ब्लैक-कैट) के पहरा बा। ●●

❑ राज साड़ी घर, चौक, कटरा, बलिया

गजल

✍ अशोक द्विवेदी

थथमल हवा, गुमसुम फ़िज़ा/बेकल हिया के, कल कहाँ !
तहरा बिना घर, घर कहाँ/बइठल कहाँ, ओठँगल कहाँ।

समझा-बुझा के, चल गइल/पछिली-दलानी के हवा
सुनियो के मन, सुनलस कि ना/समझल मगर मानल कहाँ।

हुलसल हिया, करके लगल/कइसे कहीं, कतना कहीं
चिरई बनल हेरलस इहाँ/उचरल मगर ठहरल कहाँ।

अइसे त इहवाँ, सब रहे/साधन रहे, सुबिधा रहे-
अँखिये बुला, अँटकल रहे/सूतल कहाँ, जागल कहाँ।

अगरा के आइल, उड़ गइल/नटखट-समय, तहरा बिना
फगुनी-दिना, चारे दिना/अझुरल इहाँ, ठहरल कहाँ।